IIMA

विद्याविनियोगाद्विकासः

बारहवाँ अंक

फरवरी 2023

प्रतिबिंब

विद्याविनियोगाद्विकासः

भारतीय प्रबंध संस्थान अहमदाबाद

वस्त्रापुर, अहमदाबाद - 380 015

दूरभाषः 91-79-7152 4691 फैक्स : 91-079-26300352, 26308345

ईमेल : agm-hindi@iima.ac.in वेबसाइट : www.iima.ac.in

© **प्रतिबिंब – बारहवाँ अंक – फरवरी 2023**

संपादक

डॉ. मुकेश शर्मा

सहायक महाप्रबंधक-हिंदी

भारतीय प्रबंध संस्थान अहमदाबाद

सहयोग

बिन्दु डोडिया

सहायक प्रबंधक - हिंदी

एवं

प्रकाशन विभाग

भारतीय प्रबंध संस्थान अहमदाबाद

"प्रतिबिंब" में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त किए गए विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं। संपादक एवं संस्थान का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। - **संपादक**

संदेश

भारतीय प्रबंध संस्थान अहमदाबाद अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रबंधन शिक्षा में अपनी उत्कृष्टता सुनिश्चित करते हुए, राजभाषा हिंदी के प्रति भी अपने उत्तरदायित्वों का निर्वहन पूरी निष्ठा के साथ कर रहा है। हिंदी गृह-पत्रिका "प्रतिबिंब" का यह बारहवाँ अंक राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में अग्रसर संस्थान की सकारात्मक पहलों में से एक है। मुझे यह कहते हुए अत्यंत गर्व हो रहा है कि यह हिंदी गृह-पत्रिका हमारे संस्थान के सदस्यों की साहित्यिक प्रतिभा को नए आयाम दे रही है और साथ ही राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसके अनवरत प्रकाशन को मैं राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में एक प्रभावशाली एवं सार्थक प्रयास मानता हूँ।

प्रबंध शिक्षा के क्षेत्र में हमारे संस्थान की गौरवमय भूमिका रही है और आज भी हम राष्ट्रीय संस्थागत रैंकिंग फ्रेमवर्क में पहले स्थान पर बने हुए हैं। अंतरराष्ट्रीय रैंकिंग में संस्थान 2021 की फाइनेंशियल टाइम्स मास्टर्स इन मैनेजमेंट रैंकिंग में देश का शीर्ष रैंक वाला शैक्षणिक संस्थान बना हुआ है और यह एशिया में तीसरे स्थान पर तथा वैश्विक रैंकिंग में छब्बीसवें स्थान पर बना हुआ है। क्यूएस मास्टर्स इन मैनेजमेंट रैंकिंग में हमने एशिया में शीर्ष रैंक और विश्व में उनतीसवीं रैंक हासिल की है। संस्थान के कार्यकारी अधिकारियों के लिए जारी एक वर्षीय पूर्णकालिक एमबीए प्रोग्राम (पीजीपीएक्स) को फाइनेंशियल टाइम्स ग्लोबल एमबीए रैंकिंग द्वारा विश्व स्तर पर बासठवें स्थान पर रखा गया है। क्यूएस ग्लोबल एमबीए रैंकिंग में, पीजीपीएक्स कार्यक्रम को भारत में सर्वश्रेष्ठ और विश्व स्तर पर छियालीसवें स्थान पर रखा गया है। एडुनिवर्सल श्रेष्ठ मास्टर्स रैंकिंग द्वारा खाद्य एवं कृषि-व्यवसाय प्रबंधन में स्नातकोत्तर कार्यक्रम को विश्व स्तर पर पहले स्थान पर रखा गया है।

इस अंक में संस्थान के सदस्यों की ज्ञानवर्धक, रुचिकर, प्रेरणादायक एवं मनोरंजक स्वरचित रचनाओं को विशेष रूप से समाहित किया गया है जो संस्थान के सदस्यों की रचनात्मक प्रतिभा को निखारने में मददगार रही हैं। इन रचनाओं में प्रयुक्त सरल, सहज एवं आसान हिंदी शब्द उन सभी सदस्यों को भी प्रोत्साहित करते हैं जो हिंदी में प्रवीण नहीं होने के कारण अपने दैनिक कार्यों में हिंदी के प्रयोग से झिझकते हैं। "प्रतिबिंब" में प्रकाशित रचनाओं से उनकी हिंदी के प्रति झिझक दूर हो रही है और वे भी अपने दैनिक कार्यों में हिंदी के प्रयोग के लिए प्रति प्रेरित हो रहे हैं।

मुझे पूरा विश्वास है कि हमारी हिंदी गृह-पत्रिका "प्रतिबिंब" का यह बारहवाँ अंक भी अन्य पिछले अंकों की तरह ही राजभाषा हिंदी के प्रति जागरूकता पैदा करने की दिशा में अपना अहम योगदान प्रदान करेगा तथा राजभाषा हिंदी के प्रति हमारे संवैधानिक कर्तव्यों के निर्वहन में भी व्यापक भूमिका अदा करेगा। मैं इस हिंदी गृह-पत्रिका के प्रकाशन से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से जुड़े सभी सदस्यों को बधाई देता हूँ और इस बारहवें अंक की सफलता के लिए हृदय से कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

अरिन्दम

प्रोफेसर अरिंदम बनर्जी
प्रभारी निदेशक

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि संस्थान की गृह-पत्रिका "प्रतिबिंब" के बारहवें अंक का प्रकाशन हो रहा है। यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दर्शाते हुए, राजभाषा कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान कर रही है। इसके प्रकाशन ने संस्थान के सभी सदस्यों को राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में सहयोग करने का अवसर प्रदान किया है।

हर देश की सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक उन्नति में उस देश की भाषा का विशेष योगदान रहता है। वैश्वीकरण के आधुनिक युग में आज सभी देशों के बीच सामंजस्य स्थापित करने में भाषा का महत्व और भी बढ़ जाता है। हमारी राजभाषा हिंदी भी इस सामंजस्य को स्थापित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। यह भाषा हमारे देश की सांस्कृतिक विरासत को आगे बढ़ाने में सार्थक सिद्ध हो रही है।

हमारे संस्थान की हिंदी गृह-पत्रिका "प्रतिबिंब" हमारे संस्थान के सदस्यों की साहित्यिक प्रतिभा को उजागर करने के साथ-साथ राजभाषा हिंदी के प्रति उनके अटूट प्रेम को भी दर्शाती है। इस पत्रिका की भाषा एवं शैली आम बोलचाल की भाषा में होने के कारण यह संस्थान के सभी सदस्यों को सहज एवं सरल हिंदी के प्रयोग के लिए प्रेरित करती है। इस प्रकार से यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में अहम भूमिका निभा रही है।

मुझे पूरा विश्वास है कि हमारी हिंदी गृह-पत्रिका "प्रतिबिंब" का यह बारहवाँ अंक संस्थान के सभी सदस्यों की रचनात्मक अभिव्यक्ति को आगे बढ़ाने में समन्वय सेतु साबित होगा। मुझे खुशी है कि जिस प्रकार से "प्रतिबिंब" के ग्यारह अंकों को सराहा गया है, उसी प्रकार से "प्रतिबिंब" का यह अंक भी सभी पाठकों को बहुत पसंद आएगा।

प्रोफेसर प्रद्युम्न खोकले
डीन (कार्यक्रम)

संदेश

भारतीय थल सेना में अधिकारी के तौर पर अपनी लंबी सेवा के दौरान मैंने हिंदी भाषा की अहमियत को बड़े करीब से जाना और परखा है। भाषा संप्रेषण की दृष्टि से अगर हम हिंदी भाषा को देखते हैं तो यह सबसे प्रभावशाली एवं सशक्त भाषा है। हिंदी भाषा में हर ध्वनि के लिए अलग से वर्ण विद्यमान हैं, इन ध्वनियों में स्वर भी हैं और व्यंजन भी। यहाँ तक की स्वरों के लिए मात्रा चिह्नों की भी व्यवस्था की गई है। हिंदी में अन्य भाषाओं से भी अनेक ध्वनियाँ आ गई हैं। उनके लिए भी वर्णमाला में वर्णों की व्यवस्था की गई है। हिंदी में कुछ संयुक्त वर्ण भी हैं जो एक से अधिक ध्वनियों को व्यक्त करते हैं। हिंदी की वर्णमाला विश्व की सबसे अधिक सुव्यवस्थित वर्णमाला है। इसमें स्वरों और व्यंजनों को अलग-अलग व्यवस्थित किया गया है। इसके साथ-साथ सभी वर्णों को उनके उच्चारण स्थान की विशेषताओं के आधार पर रखा गया है।

हिंदी भाषा में संस्कृत, अरबी, फारसी या अंग्रेजी से भी अनेकों शब्द लिए गए हैं। हिंदी भाषा में अन्य भाषाओं में प्रयुक्त अलग ध्वनियों के लिए भी अलग वर्णों की व्यवस्था की गई है। अतः हिंदी के लेखन एवं उच्चारण में स्पष्टता है। हिंदी में जो कुछ भी बोला जा सकता है, वही लिखा भी जा सकता है। हिंदी भाषा की इसी मूल विशेषता के कारण यह भाषा आज हमारे देश की जन भाषा का प्रतिनिधित्व कर रही है।

भारत सरकार के गृह मंत्रालय एवं शिक्षा मंत्रालय द्वारा जारी राजभाषा नियमों की अनुपालना सुनिश्चित करने में हमारा संस्थान सदैव तत्पर रहता है। हमारे संस्थान का हिंदी विभाग इन्हीं राजभाषा नियमों की अनुपालना को सुनिश्चत करते हुए इस हिंदी गृह-पत्रिका का अनवरत रूप से प्रकाशन कर रहा है। इसके लिए मैं संस्थान के हिंदी विभाग को बधाई देता हूँ जिनके अथक प्रयायों से इस बारहवें अंक का प्रकाशन संभव हो सका है।

मुझे पूरा विश्वास है कि हमारी गृह-पत्रिका "प्रतिबिंब" का यह बारहवाँ अंक भी इस पत्रिक के पिछले अंकों की तरह ही इसमें प्रकाशित रोचक एवं ज्ञानवर्धक रचनाओं के कारण सभी को अवश्य ही पसंद आएगा। अंततः मैं इस पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े संस्थान के सभी सदस्यों को उनके विशेष योगदान के लिए बधाई देता हूँ तथा इस पत्रिका की सफलता की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

कर्नल अमित वर्मा (सेवानिवृत्त)
मुख्य प्रशासनिक अधिकारी

संपादकीय

मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है कि अभी तक हमारे संस्थान की हिंदी गृह-पत्रिका "प्रतिबिंब" के ग्यारह अंक प्रकाशित हो चुके हैं और पाठकों द्वारा सभी अंकों को काफी प्रोत्साहन मिला है। आप सभी से प्राप्त अमूल्य प्रतिक्रियाओं ने हमारा काफी उत्साहवर्धन किया है और उसी प्रोत्साहन के बल पर मुझे आपके हाथों में इस पत्रिका का बारहवाँ अंक सौंपते हुए अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। हमें पूर्ण विश्वास है कि भविष्य में भी हमें आपका प्रोत्साहन एवं मार्गदर्शन इसी प्रकार से अनवरत रूप से मिलता रहेगा।

आज के इस फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, वाट्सऐप आदि विभिन्न सोसियल मीडिया माध्यमों के व्यस्त युग में पत्रिकाओं का महत्व और भी अधिक बढ़ गया है क्योंकि ये सभी माध्यम हमें जानकारी तो प्रदान करते हैं लेकिन इन सभी में विश्वसनीयता की कोई गारंटी नहीं होती है। इन पर किसी भी तरह की जानकारी, संदेश एवं विविध रचनाएँ अपनी पसंद एवं अपने हित के अनुसार डाल दी जाती हैं। इन सभी में प्रकाशित रचनाओं में पाठकों के प्रति उनकी भावनाओं, मर्यादाओं एवं भाषा पर किसी प्रकार का अंकुश नहीं रहता है। वहीं पत्रिकाओं में केवल उन्हीं रचनाओं को समाहित किया जाता है जो पाठकों की भावनाओं एवं मर्यादाओं को ध्यान में रखते हुए उस भाषा के मापदंडों और विश्वसनीयता के पैमाने पर खरी उतरती हैं। ऐसी रचनाएँ साहित्य को तो बढ़ावा देती ही हैं साथ ही साथ रचनाकारों की साहित्यिक प्रतिभा को निखारने में महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान करती हैं।

राजभाषा हिंदी के संबंध में महात्मा गाँधी जी ने कहा था कि "अखिल भारत के परस्पर व्यवहार के लिए ऐसी भाषा की आवश्यकता है जिसे जनता का अधिकतम भाग पहले से ही जानता-समझता है और हिंदी इस दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ है"। गाँधी जी की इसी विचारधारा को आगे बढ़ाते हुए हमारे संस्थान के सभी सदस्य हिंदी में बात करते हुए गर्व की अनुभूति करते हैं और हर संभव प्रयासों से राजभाषा कार्यान्वयन में अपना भरपूर सहयोग प्रदान कर रहे हैं। हमारी हिंदी गृह-पत्रिका "प्रतिबिंब" के प्रकाशन में हमारे संस्थान के सदस्यों ने इसी विचारधारा को आगे बढ़ाने का सार्थक प्रयास है। इस अंक में समाहित रचनाओं के माध्यम से सभी सदस्यों ने अपनी वैचारिक अभिव्यक्ति और राजभाषा हिंदी के प्रति अपने लगाव को प्रकट किया है जो संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति हमारी प्रतिबद्धता के उद्देश्य को फलीभूत करता है।

अंततः मैं, इस अंक के प्रकाशन से जुड़े संस्थान के उन सभी सदस्यों का आभार प्रकट करता हूँ जिनकी रोचक, ज्ञानवर्धक एवं गरिमामयी रचनाओं के माध्यम से इस अंक का प्रकाशन संभव हो सका है और आशा करता हूँ कि भविष्य में भी इसी तरह से आपकी साहित्यिक रचनाओं से हिंदी गृह-पत्रिका "प्रतिबिंब" के आगामी अंक सुशोभित होते रहेंगे।

मुझे पूरा विश्वास है कि "प्रतिबिंब" का यह अंक भी पहले के सभी अंकों की तरह ही ज्यादा से ज्यादा पाठकों तक अपनी पहुँच अवश्य बढ़ाएगा और इसके प्रकाशन के उद्देश्य को सार्थक सिद्ध करेगा। सभी पाठकों से सविनय अनुरोध है कि कृपया हमें अपनी प्रतिक्रियाएँ / सुझाव भेजना ना भूलें, हमें आपकी प्रतिक्रियाओं / सुझावों की प्रतिक्षा रहेगी।

शुभकामनाओं सहित।

आपका अपना,

डॉ. मुकेश शर्मा
सहायक महाप्रबंधक - हिंदी

अनुक्रमणिका

क्या हिंदी हमारे देश की राष्ट्रभाषा है? डॉ. मुकेश शर्मा 06
फिर नए वादों का मौसम आया निरज दवे 08
पादुका कथा प्रोफेसर प्रशांत दास 09
क्या हुआ हालातों को निकुंज पटेल 10
डिप्रेशन (अवसाद) विनय शर्मा 11
फिर धुंध उठी प्रोफेसर प्रशांत दास 13
मुन्नी की गाय श्रीमती कुमुद वर्मा 14
वास्तुकार - लुईस काह्न श्रीमती संध्या सिंह 15
नयी कहानी अभिषेक कुमार मिश्रा 17
भ्रष्टाचार मुक्त भारत – विकसित भारत बिन्दु डोडिया 18
ज़िंदगी आज है, अभी है रश्मि सदानंदन 20
समाज के विकास में शिक्षा का महत्त्व हरीश प्रेमी 21
हिंदी की धुलाई कर दी भावेश पटेल 22
नन्ही-सी चिड़िया कृष्ण सतीश चौथंकर 22
सोशल मीडिया पर हिंदी का प्रभाव मोनिका अग्रवाल 23
अमृत साल धर्मेश रावल 24
नई शिक्षा नीति शिल्पा नागरे, ...25
ऐसा सच सुश्री प्रतिमा भारती 26
धरा की देह मृदुल जोशी 27
खीर नवनाथ पवार 31
इसी का नाम ही ज़िंदगी है हरीश वाघेला 32
संस्थान की राजभाषा गतिविधियाँ 34
तू मुस्कुरा... प्रशांत पुरोहित 42
"मेरा बब्बू" श्रीमती सविता शर्मा 43
फौजी डॉ. निष्ठा ठाकर आनंद 45
ज़िंदगी के रंग श्रीमती कुमुद वर्मा 45
अंतर्मुखी श्रीमती प्रिया यश प्रसाद 46
प्रेम-प्रिये राहुल कुमार झा 47
इनकार की जलन श्रीमती प्रिया यश प्रसाद 48
इंसुलिन और उपवास डॉ नंदलाल माहेश्वरी 49
असफलता से सफलता तक श्रीया बजाज 50
यादों का क़ाफिला आकांक्षा श्रेया 50
भावनगर, गुजरात श्री प्रवीण क्रिश्चन 51
जलवायु परिवर्तन विजिता नायर 54
माँ हरीश वाघेला 55
जीवन मैंने पहचाना मृदुल जोशी 55
संस्थान की सुरक्षा व्यवस्था महेन्द्र सिंह चौहान 56
मेरी अम्मी - मेरी गुरु हरीश प्रेमी 58
संघर्ष – स्वयं से मोनिका अग्रवाल 61
प्यारी पुस्तक विरलकुमार नाविक 61

क्या हिंदी हमारे देश की राष्ट्रभाषा है?

डॉ. मुकेश शर्मा
सहायक महाप्रबंधक - हिंदी

आपके ज़हन में कभी ना कभी तो यह प्रश्न अवश्य ही उठा होगा कि "क्या हिंदी भाषा हमारे देश की राष्ट्रभाषा है"? कई सरकारी कार्यालयों की दिवारों पर या कई पुस्तकों में भी आपने यह अवश्य लिखा देखा होगा कि "हमारी राष्ट्रभाषा हिंदी है"। देश के विभिन्न हिस्सों में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए आयोजित विभिन्न सेमीनारों एवं हिंदी कार्यशालाओं में भी आपने कई विद्वजनों को यह कहते हुए भी अवश्य ही सुना होगा कि "हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा है"। क्या यह जानकारी वास्तव में सही है? इस विषय पर अलग-अलग विद्वजनों के अलग-अलग मत हो सकते हैं लेकिन ज्यादातर लोगों को यही मालूम है कि हिंदी ही हमारे देश की राष्ट्रभाषा है। हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने हिंदी को जनमानस की भाषा कहा था और सन् 1918 में हुए हिंदी साहित्य सम्मेलन में उन्होंने हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने की बात कही थी। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने भी हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाए जाने की पुरजोर वकालत की थी। लेकिन राष्ट्रभाषा के स्तर पर आज हमारे देश में हिंदी की वास्तविक स्थिति क्या है यह जानने के लिए हमें विस्तार से विवेचन करने की आवश्यकता है।

सोशल मीडिया में भी इस विषय पर समय-समय पर काफी बहस चलती रहती है। अपने ज्ञान एवं अपनी भाषा के प्रति प्रेम के अनुरूप बहुत से लोग इस विषय पर अलग-अलग टिप्पणियाँ भी करते रहते हैं। लेकिन इस तरह की बहसों का कोई उचित परिणाम नहीं निकलता है और हमारे सामने यही सवाल खड़ा रहता है कि क्या हिंदी भाषा हमारे देश की राष्ट्रभाषा है? इसका विवेचन करने से पहले हमें यह समझना होगा कि राष्ट्रभाषा किसे कहते हैं। इस बारे में मेरा विचार है कि राष्ट्रभाषा वह भाषा होती है जो किसी राष्ट्र या देश के ज्यादातर हिस्सों में ज्यादातर लोगों द्वारा बोली और समझी जाती है। इसके साथ ही वह भाषा जो सरल हो और देश की भाषा का प्रतिनिधित्व करती हो तथा उस देश के सरकारी कामकाज की आधिकारिक भाषा का उत्तरदायित्व निभाते हुए संविधान द्वारा राष्ट्रभाषा का दर्जा भी प्राप्त हो। क्या हमारी हिंदी भाषा इन सभी मानकों पर खरी उतरती है? मेरा मानना है कि यह एक विस्तृत विवेचन का विषय है।

इस बात में कोई संशय नहीं है कि हिंदी भाषा हमारे देश के ज्यादातर हिस्सों में बोली और समझी जाती है। अब बात आती है सरल भाषा की तो सरल भाषा से हमारा तात्पर्य ऐसी भाषा से है जिसमें हम अपने विचार बिना किसी सोच-विचार के अर्थात् जो कुछ भी हमारे मन-मस्तिष्क में चल रहा होता है उसे सीधे ही अभिव्यक्त कर सकते हैं। वैसे तो भाषा की सरलता का पैमाना अलग-अलग लोगों के लिए अलग-अलग हो सकता है लेकिन मूल रूप से वही भाषा सरल एवं सहज होती है जिसे आसानी से पढ़ा तथा बोला जा सकता है। इसके अलावा, जिस भाषा में आपको अपने विचारों को अभिव्यक्त करने में आसानी हो या फिर जिस भाषा में आप अभिव्यक्ति के आदी हों, वही भाषा आपके लिए सरल एवं सहज होती है। जन्म के समय से ही बच्चा जिस भाषा को सुनता है या जिस भाषा में अपने भाव अभिव्यक्त करता है उसको वही भाषा सरल एवं सहज लगती है। उसे उस भाषा को बोलने में किसी प्रकार की परेशानी या असहजता महसूस नहीं होती। लेकिन उस भाषा को लिखने या पढ़ने के लिए उसे उस भाषा का शैक्षिक ज्ञान होना अत्यंत आवश्यक है। चूँकि उसने जिस भाषा को बचपन से ही सुना और समझा है उसे उस भाषा में लिखना एवं पढ़ना आसान लगता है। यही विचारधारा हमारी हिंदी के प्रति भी लागू होती है। इस आधार पर हम कह सकते हैं कि सरल भाषा के पैमाने पर हमारी हिंदी भाषा राष्ट्रभाषा होने की मूल अहर्ता को परिपूर्ण करती है।

अगर हम हिंदी भाषा को हमारे देश की भाषा का प्रतिनिधित्व करने वाली भाषा के बारे में बात करते हैं तो हम पाते हैं कि हमारे देश के बाहर हर भारतीय की पहचान हिंदीभाषी के रूप में ही होती है। सब यही मानते हैं कि अगर आप भारत से हैं तो आपको हिंदी अवश्य ही आती होगी और ज्यादातर यह सही भी है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी भाषा से ही हमारे देश की पहचान है अर्थात् हिंदी भाषा ही विदेश में हमारे देश का प्रतिनिधित्व करती है। हमारी हिंदी भाषा विश्व पटल पर एक ऐसी भाषा बनकर उभर रही है, जो विश्व की अलग-अलग भाषाओं के बीच अपनी विशेष पहचान बनाते हुए पूरे विश्व में बड़ी तेजी से आगे बढ़ रही है। विभिन्न भाषाओं के शब्दों को अपने में समाहित करने की इसकी अतुलनीय विशेषता के कारण हिंदी दिन प्रतिदिन अपनी पहचान विश्वस्तर पर बढ़ाती जा रही है। इसका अर्थ यही है कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हमारी हिंदी भाषा राष्ट्रभाषा के रूप में अपनी पहचान पूर्णतः बना चुकी है।

अगर हम बात करते हैं इसके संवैधानिक दर्जे की तो हमारी हिंदी भाषा राष्ट्रभाषा होने के सभी औपचारिक मानदंडों को परिपूर्ण करते हुए भी अभी तक राष्ट्रभाषा का संवैधानिक दर्जा प्राप्त नहीं कर सकी है। हमारे देश के संविधान में भारत की राष्ट्रभाषा का कोई उल्लेख नहीं है इसलिए औपचारिक रूप से हमारे देश की कोई भी राष्ट्रभाषा नहीं है। जब भारतीय संविधान का निर्माण हो रहा था तब डॉ. भीमराव अंबेडकर जी ने राष्ट्रभाषा का भी जिक्र किया था। लेकिन हमारे देश में विभिन्न भाषाएँ प्रचलन में होने के कारण किसी एक भाषा को हमारे देश की राष्ट्रभाषा मानने पर आम सहमति नहीं बन सकी थी और अनेकता में एकता के सूत्र को अपनाते हुए देश की सभी प्रचलित भाषाओं को संविधान की अष्टम सूची में जगह दी गई और इन सभी भाषाओं को राजभाषा का दर्जा दिया गया।

हमारे संविधान की अष्टम सूची में जो भाषाएँ सम्मलित की गई हैं, उन सभी भाषाओं को हमारे संविधान के अनुसार राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। संविधान की अष्टम सूची में शामिल इन 22 भाषाओं में हमारी हिंदी भी शामिल है जिसे 14 सितंबर 1949 को राजभाषा का दर्जा प्रदान किया गया था। हिंदी भाषा अपने सहज, सरल एवं सुलभ भाषा रूप के कारण पूरे देश में राष्ट्रभाषा का उत्तरदायित्व पूरी निष्ठा के साथ निभा रही है लेकिन फिर भी आज तक राष्ट्रभाषा का संवैधानिक दर्जा प्राप्त करने में असफल रही है। हिंदी को राष्ट्रभाषा का संवैधानिक दर्जा दिलाने के प्रयासों में हमारे ही देश के कुछ दक्षिणी राज्य इसमें अडचनें डाल रहे हैं। उन्हें ऐसा लगता है कि हिंदी उन पर जबरदस्ती थोपी जा रही है और हिंदी को राष्ट्रभाषा का संवैधानिक दर्जा मिलने से उनकी प्रांतीय भाषा का अस्तित्व खतरे में आ जाएगा। कुछ चंद राजनेता अपनी राजनीतिक सत्ता को कायम रखने के उद्देश्य से हिंदी का पुरजोर विरोध करते हैं और इन्हीं चंद राजनेताओं के कारण हिंदी भाषा राष्ट्रभाषा के संवैधानिक दर्जे से आज भी वंचित है। इन राजनेताओं को यह समझना होगा कि हिंदी को राष्ट्रभाषा का संवैधानिक दर्जा प्रदान करने से उनके राज्यों का ना तो कुछ अहित नहीं होने वाला है और ना ही उनकी प्रांतीय भाषा पर कोई आँच आने वाली है। अपने प्रांत से बाहर वे संपर्क भाषा के रूप में हिंदी भाषा के स्थान पर अंग्रेजी भाषा का प्रयोग करते हैं। क्या अंग्रेजी भाषा के प्रयोग से उनके राज्य का कुछ अहित हो रहा है या उनकी प्रांतीय भाषा पर कोई आँच आ रही है? नहीं ना। तो फिर उसी तरह से हिंदी भाषा के राष्ट्रभाषा के रूप में प्रचलन से ना तो उनके राज्य का कुछ अहित होने वाला है और ना ही उनकी प्रांतीय भाषा पर कोई आँच आने वाली है। जब आप अंग्रेजी सीख सकते हैं जो कि एक विदेशी भाषा है तो आपको अपने ही देश की भाषा को सीखने में क्या परेशानी है। हिंदी सीखना अंग्रेजी के मुकाबले बहुत ही आसान है क्योंकि यह एक वैज्ञानिक भाषा है। इसे जिस तरह से बोला जाता है उसी तरह से लिखा भी जाता है। इस भाषा में हर ध्वनि के अलग से वर्ण उपलब्ध हैं।

हिंदी भाषा तो हमारे देश की आत्मा है जो हम सभी देशवासियों के लिए माँ के समान है। इसे आदर-सम्मान देने से आपको कोई परेशानी या दिक्कत नहीं होने वाली है। जो आदर-सम्मान आप अंग्रेजी को दे रहे हैं, बस वही आदर-सम्मान हमारी अपनी हिंदी को भी देने की जरूरत है। अंग्रेजी तो विदेशी भाषा है जो हमारी आंटी के समान है लेकिन हिंदी तो हमारी अपनी मातृभूमि की भाषा है जिसने हमारे संविधान की अष्टम सूची में शामिल सभी 22 भाषाओं के शब्दों को अपने आप में समाहित किया हुआ है। अगर अंग्रेजी भाषा हमारी आंटी है तो हिंदी भाषा हमारी माँ है, हमारी भारत माता के माथे की बिंदी है। हिंदी भाषा को आदर-सम्मान

देने से आपकी प्रांतीय भाषाओं का अस्तित्व बढ़ेगा ही कुछ कम नहीं होने वाला है। हिंदी भाषा आपसे ज्यादा कुछ नहीं चाहती है वह तो बस आपसे वही आदर-सम्मान चाहती है जो आपने अपनी आंटी (अंग्रेजी) को दिया हुआ है। हम यह नहीं कहते कि आप आंटी को आदर-सम्मान मत दो, अवश्य दो, लेकिन अपनी माँ का अनादर तो मत करो। आंटी से ज्यादा हमेशा आपके भले के बारे में आपकी माँ ही सोचती है इसलिए माँ को भी उसका हक अवश्य दो। अपनी माँ को आदर-सम्मान देने में आपका ही बड़प्पन झलकता है। हिंदी भाषा का विरोध करने वाले राज्यों की बस इतनी-सी सोच बदलने की आवश्यकता है। जिस दिन हम इन राज्यों की सोच बदलने में कामयाब हो जायेंगे उसी दिन हमारी हिंदी भाषा को राष्ट्रभाषा का संवैधानिक दर्जा भी मिल जाएगा।

हाँलाकि हिंदी में राष्ट्रभाषा के वे सभी गुण विद्यमान हैं जिनके बल पर हिंदी को राष्ट्रभाषा का संवैधानिक दर्जा किसी भी समय प्रदान किया जा सकता है। मेरा तो ऐसा मानना है कि हिंदी को राष्ट्रभाषा का संवैधानिक दर्जा दिलाने के लिए अभी तक की किसी भी सरकार ने अपनी मजबूत इच्छाशक्ति नहीं दिखाई है जिससे हिंदी को राष्ट्रभाषा का संवैधानिक दर्जा प्रदान किया जा सके। बल्कि भाषाई राजनीति से प्रेरित कुछ लोग तो ऐसा भी कहने लगे हैं कि जब भारत की 'राजभाषा' है तो फिर 'राष्ट्रभाषा' की क्या आवश्यकता है? हमारे देश की आजादी में भी हिंदी भाषा ने राष्ट्रभाषा का उत्तरदायित्व बड़े ही निस्वार्थ भाव से निभाया है और हमारे देश के ज्यादातर नागरिक यही जानते हैं कि हिंदी ही हमारे देश की राष्ट्रभाषा है।

हिंदी भाषा ना सिर्फ हमारे देश की पहचान है बल्कि यह हमारे देश के जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की परिचायक है। हमारी हिंदी भाषा राष्ट्रभाषा का उत्तरदायित्व निभाने में सर्वरूपेण सक्षम होने के कारण देश की राष्ट्रभाषा के अपने उत्तरदायित्वों को अनवरत रूप से निभाती आ रही है और आगे भी निभाती रहेगी। हिंदी भाषा ने हमारे देश के ज्यादातर नागरिकों के मन-मस्तिष्क पर राष्ट्रभाषा के रूप में ऐसी अमिट छाप छोड़ी है कि यह किसी भी संवैधानिक दर्जे की पुष्टि की मोहताज नहीं है। भले ही हिंदी को हमारे संविधान द्वारा संवैधानिक दर्जा ना मिला हो लेकिन यह हमारे देश के नागरिकों के मन-मस्तिष्क में राष्ट्रभाषा के रूप में इस तरह से रच-बस गई है कि ज्यादातर देशवासी यही मानते हैं कि हिंदी ही हमारे देश की राष्ट्रभाषा है। सच्चाई यही है कि संवैधानिक रूप से भले ही हमारे देश की कोई भी राष्ट्रभाषा नहीं है लेकिन हिंदी भाषा ही हमारे देश की "राष्ट्रभाषा" का प्रतिनिधित्व कर रही है।

फिर नए वादों का मौसम आया

निरज दवे
कार्यकारी

वाह क्या बारिश का सुहाना मौसम आया,
वर्षों बाद इतना लम्बा वर्षा का मौसम आया।

साथ अपने क्या क्या लाया,
खेत खलिहानों में लहराती फसलें लाया।

जहाँ गाँवों में आनंदधारा बही,
वहीं शहरों में आफ़त की लड़ी चली।

वर्षा से प्रकृति निहाल हुई,
शहरों में इन्सान की हालत बेहाल हुई।

बारिश के साथ एक और मौसम है जुड़ा,
नज़दीकी समय में चुनाव का ऐलान है हुआ।

वैसे तो वर्षा अपने साथ नए जीवन के नए वादे लाती है,
परन्तु चुनावी वादों की तो कुछ अलग ही कहानी है।

आसमान से बरस रहा अमृत समान पानी,
नेता बोल रहे हैं शहद में लिपटी वाणी।

धरती पर आ रही है पानी की बाढ़,
तो जनता पर हो रही चुनावी रेवड़ी की बौछार।

जनता पर प्रलोभनों का ऐसा कहर हो रहा,
कोई पानी-बिजली मुफ्त तो कोई पुरानी पेंशन दे रहा।

जनता है मूर्ख ऐसा मानते हैं ये लोग,
सत्ता मिलते ही हो जाते सारे वादे अलोप।

ऐसा सुहाना वर्षा का मौसम है आया,
साथ अपने चुनावी वादों की बौछार है लाया।

प्रोफेसर प्रशांत दास

पादुका कथा

गिर में जंगली गधों का एक अभयारण्य है। वहाँ की गई सैर की एक घटना याद आ रही है: झुंड का एक सदस्य जो बिछड़ गया था, उसको दूर से दूसरे साथी दिख गए थे। अपूर्व वेग से वह भागा था झुंड की ओर। कितना प्रेम, कितनी आत्मीयता थी उसकी छलांग में। उस दृश्य पर हम सब भाव-विह्वल हो उठे थे। सालों बाद आज मैं बिलकुल उसी बिछड़े सदस्य की तरह महसूस कर रहा था। आखिरकार अपनी संस्कृति के लोगों की पार्टी में पहली बार जाना होगा।

सारे परिवार को पूना में छोड़कर शिकागो आया था। अपनी कंपनी से अकेला इंसान भेजा गया था। तीन महीने बीत गए, तीन और बिताने हैं। अब तक ढंग से शि-काव-गोव् भी उच्चरित नहीं कर पा रहा हूँ, लेकिन हर रोज़ कांफ्रेंस कॉल पर बॉस पूना से बैठा यही शिकायत लगाता है कि मैं क्लाइंट्स के साथ "इंटीग्रेट" नहीं हो पा रहा हूँ- नया प्रोजेक्ट कैसे मिलेगा उनसे? "यौन-क्रिया, मौसम और अमेरिकन फुटबॉल", इनके बारे में चर्चा करने की हिदायत दी गयी थी। "अमेरिकन्स को अच्छी लगती हैं", ऐसा बॉस ने कहा था। लेकिन मैं इन तीनो विषयों में फिसड्डी निकला। ऊपर से हर सुबह आई के हाथ के पराठे याद आते हैं। कल्याण भेल भंडार का चाट याद आता है। सहकर्मियों के साथ रजनीकांत की मूवीज देखना, लंच के बाद लखन की दुकान पर मीठा पान, और शनिवार को बाइक पर बैठ कर सपरिवार लवासा तक का सफर... सब कुछ याद आ रहा है।

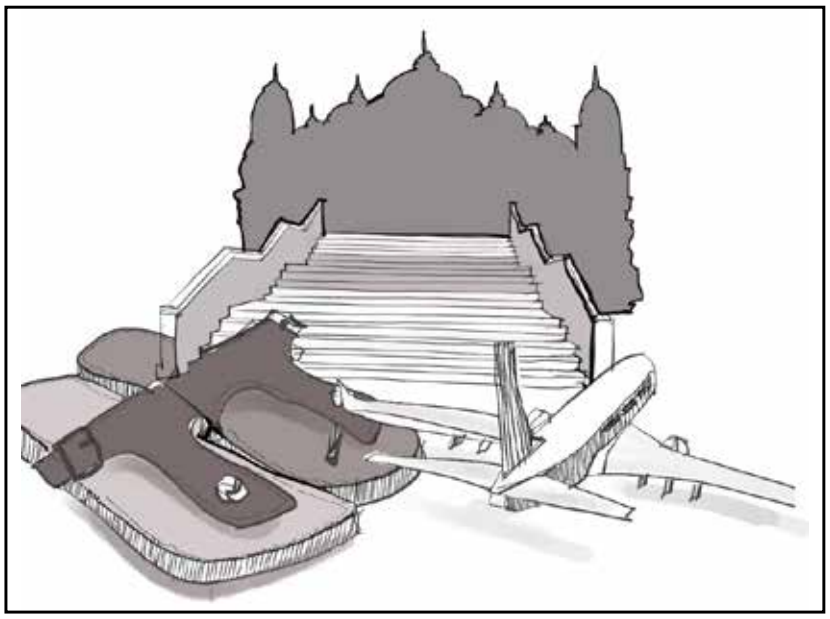

आज सुबह जब बॉस ने "हिन्दू संस्कृति" संस्था का पम्पलेट ईमेल किया, तो जान-में-जान आई। आज ही तो है उनकी गणपति पूजा पार्टी। वाह! अपने जैसे लोगों से मिलूँगा, देसी खाना खाऊँगा, हिंदी में बातें होंगी... मज़ा आएगा।

शुक्र है, श्रीमती की ज़िद पर मैंने अपने साथ शेरवानी भी पैक कर ली थी - चटक लाल। रेशम की पीली ओढ़नी भी थी साथ में। पर उसके साथ पहनने के लिए ढंग की चप्पल नहीं मिली। किस्मत से जॉन फ्लोवोग की जूते की दुकान पड़ोस में ही थी। क्या रेंज था उनके पास! अब अमरीका आए हैं तो डॉलर्स में खरीदें, रुपये में नहीं। यह सोचकर अपनी पसंद से एक जोड़ी बढ़िया जूती खरीदी। शालीन थी, शेरवानी से मैचिंग और बिलकुल वैसी जो मेरी पर्सनालिटी पर खिल जाए। बस, मन गदगद हो गया, जनाब।

"इंडियन संस्कृति पर्व" का आयोजन "हिन्दू संस्कृति केंद्र" के शिवालय में हो रहा था। वहाँ काफी जनता थी। ज्यादातर मेरी तरह शेरवानी में

थे। प्रांगण में टहलना वर्जित था। लोग अपने जूते-चप्पल सीढ़ियों पर रख कर जा रहे थे। हर कोई किसी ना किसी झुंड का सदस्य मालूम होता था। मराठी, तेलुगू, बंगाली, तमिल, मलयाली, लोगों में मातृभाषा में बातें चल रही थी।

एक झुंड हिंदी बोलने वालों का भी था। मैंने सोचा उनको नमस्ते कर आऊँ। लेकिन उस माहौल में महाभारत के अभिमन्यु की तरह चक्रव्यूह भेद रहा हूँ, ऐसा महसूस हुआ। इतने में आरती शुरू हो गई। अंग्रेज़ीदां पंडित जी अमरीकन लहजे से संस्कृत में मंत्रोच्चारण कर रहे थे। आरती की थाली प्रांगण में घुमाई गई। उसमें डॉलर्स के बड़े-बड़े नोट पड़े थे। सम्मान का विषय था। मैंने भी दस डॉलर का नोट दान कर दिया। पेट में चूहे कूद रहे थे और बगल के हॉल में भोजन आरम्भ हो चुका था।

"कहा से हो? हिंदी बोलते हो?", पीछे से आवाज़ आई। एक अधेड़ उम्र के जनाब दोस्ती का हाथ बढ़ा रहे थे। मेरी तरह वे भी भीड़ में तनहा थे। "जी पूना में रहता हूँ, लेकिन हूँ कोटा, राजस्थान से, और आप?...", मैंने कहा। "माइसेल्फ नरेश राय फ्रॉम कानपुर..." हमारी छिटपुट बातें होती रही, और दोनों अकेलों को साथ मिल गया। दोनों भोजन हॉल की तरफ गए। छक कर खाया: पूड़ियाँ, ढोकला, बिरयानी, गाजर का हलवा, अवोकेडो की चटनी, और न जाने क्या-क्या। रिकोटा चीज़ से बना रसगुल्ला थोड़ा अजीब लग रहा था। लेकिन एक बार एंट्री-फी दे दिया तो बस माल-ए-मुफत, दिल-ए-बेरहम।

आनंद आ रहा था लेकिन अचानक मुझे याद आया कि कल सुबह के क्लाइंट के साथ होने वाली मीटिंग की तैयारी अधूरी रह गई है। इसलिए एक गुलाब जामुन मुँह में ठूंसा, नरेश बाबू को सलाम किया और बाहर की ओर निकल पड़ा।

बाहर मौसम सुहाना था और साँय-साँय हवा बह रही थी। जूते-चप्पलों का अंबार लगा था। इस अंबार में अपनी जूतियाँ ढूँढना कठिन कार्य लग रहा था। मैंने याद करने कि कोशिश की - हाँ, कचरे के डब्बे के पीछे छुपा कर रखी थी मैंने अपनी जूतियाँ। केले के पत्तों के नीचे ढक कर। कचरे का डब्बा मिल गया। केले के पत्ते भी दिख गए। लेकिन उनके नीचे जूतियाँ नहीं मिलीं। खूब ढूँढा: नल के नीचे, कुंड के पास... सारा परिसर छान मारा। नहीं मिली। हे भगवान्। कोई मेरी नई-नवेली जूतियाँ लेकर चम्पत हो गया! हाय मेरी डेढ़ सौ डॉलर की जूतियाँ। हाय रे शिकागो। कैसी सभ्यता! कैसी कुलीन दिखने वाली जनता! धिक्कार है!

मैं क्या करूँ? नंगे पैर तो वापस जा नहीं सकते। कितनी ठंड है शिकागो में। कुछ तो पहनना ही पड़ेगा। ज्यादा लोग तो थे नहीं बाहर। और किसी को मेरे से क्या लेना देना? इतनी जूतियाँ पड़ी हैं और.... पसंद कर लूँ अपने लिए कोई। मिलते-जुलते दाम वाली मिल जाएँ तो दुःख कम होगा।

क्या हुआ हालातों को

निकुंज पटेल
अकादमिक सहयोगी

क्यों इतनी सुनसान-सी सड़कें, विरान से शहर हैं,
किसी मौत के मंजर-सा क्यों सड़कों पर छाया है सन्नाटा,
यह खौफ़ है लाठी का या कोरोना का कहर है।

भाई कुछ तो बता,
यह नाक, मुँह, सब ढक के क्यों बैठे हो,
यह डर है तेज़ाब का या हवाओं में ही ज़हर है,
ना जाने सब कहाँ छिप गए,
अब कोई तो बता दे,
यह खौफ़ है लाठी का या कोरोना का कहर है।

कहाँ गए सब,
उन चौड़ी-चौड़ी सड़कों पर वे लंबे-लंबे जाम,
वे हॉर्न की आवाज़ें, वे गाली की ज़ुबान,
वह लोकल की भीड़, वह ओला की उड़ान,

अरे भाई कुछ तो बोलो,
क्या हुआ हालातों को,
क्यों इतनी सुनसान-सी सड़कें, विरान-से शहर हैं,
यह खौफ़ है लाठी का या कोरोना का कहर है।

डिप्रेशन (अवसाद)

विनय शर्मा
नर्सिंग अधिकारी

आज हम हमारे समाज में डिप्रेशन के बारे में बहुत ज्यादा सुनते हैं। डिप्रेशन को हिंदी में अवसाद के नाम से जाना जाता है। यह एक प्रकार का मूड डिसॉर्डर होता है जो आज के भारतीय समाज में बहुत ही आम है। चिकित्सकों के अनुसार यह एक नकारात्मक बीमारी है जो आपके सोचने की क्षमता, आपके कार्य करने की क्षमता को बुरे से प्रभावित करती है। यह विभिन्न भावनात्मक और शारीरिक समस्याओं का कारण बन सकती है और आपके कार्य करने और घर पर काम करने की व्यक्ति की क्षमता को कम कर सकती है। हमारे समाज में लोग विभिन्न तरीकों से डिप्रेशन का अनुभव करते हैं। डिप्रेशन के परिणामस्वरूप आप अपना समय बर्बाद कर सकते हैं और आपकी उत्पादकता कम हो सकती है। बहुत बार डिप्रेशन आपकी पुरानी स्वास्थ्य स्थितियों को भी प्रभावित कर सकता है। डिप्रेशन या अवसाद के कारण जो बीमारियाँ हो सकती है उनमें शामिल हैं :-

- **गठिया, हृदय रोग, कैंसर, दमा, मधुमेह, मोटापा**

डिप्रेशन के प्रकार

डिप्रेशन का प्रकार उसकी गंभीरता पर निर्भर करता है। कुछ लोगों में यह बहुत ही कम होता है, और उनमे दुःख के अस्थायी एपिसोड्स होते हैं। जबकि कुछ लोगों में यह बहुत गंभीर होता है और उनमे इसके एपिसोड चलते ही रहते हैं या यूँ कहें कि वे लगातार डिप्रेशन का शिकार रहते हैं। इसके लिए आपका डॉक्टर आपके डिप्रेशन के प्रकार के अनुसार उचित इलाज करके आपकी मदद कर सकता है। डिप्रेशन के प्रकार हैं :-

- मेजर डिप्रेशन डिसॉर्डर
- पर्सिस्टेंस डिप्रेसिव डिसॉर्डर
- बाइपोलर डिसॉर्डर
- सीजनल अफ्फेक्टिव डिसॉर्डर
- साइकोटिक डिसॉर्डर
- पेरीपार्टम डिसॉर्डर
- प्रीमेंस्ट्रुअल डाइसफोरिक डिसॉर्डर

डिप्रेशन के लक्षण

यद्धपि किसी व्यक्ति के जीवन में डिप्रेशन एक बार ही होता है, पर यह कई एपिसोड्स में हो सकता है। इन एपिसोड्स में डिप्रेशन के लक्षण दिन भर रहते हैं और बहुत बार हर दिन रहते हैं, उनमे शामिल हैं :-

- उदासी की भावना के साथ आँखों में आँसू, अकेलापन और निराशा
- छोटी छोटी बातों पर गुस्सा होना, चिड़चिड़ाहट के साथ निराशा की भावना
- सामान्य क्रियाओं में रुचि न लेना जैसे – यौन क्रीड़ा, शौक या किसी खेल में
- सही से नींद नहीं आना, अनिद्रा और बहुत देर तक सोना शामिल हैं
- थकान और ऊर्जा में कमी होना, छोटे से कार्य के लिए अधिक प्रयास करना
- भूख नहीं लगना और वजन का घट जाना या किसी भोजन की लालसा और वजन बढ़ जाना
- चिन्ता, व्याकुलता और बेचैनी होना
- सोचने, बोलने और शारीरिक गतिविधियों में कमी आ जाना
- अपने को अयोग्य या दोषी महसूस करना, पुरानी विफलताओं के लिए अपने को दोषी मानना
- सोचने, ध्यान केंद्रित करने, याद रखने और निर्णय लेने में परेशानी होना

- मृत्यु के ख्याल आना या आत्महत्या का बार-बार प्रयास करना, अस्पष्ट शारीरिक समस्याएँ, जैसे पीठ दर्द या सिरदर्द

डिप्रेशन के शिकार कुछ लोगों में, इसके लक्षण इतने गंभीर होते हैं कि वो उनकी दिनचर्या में दिखने लगते हैं, और बाधा उत्पन्न करने लगते हैं जैसे काम में, स्कूल में या सामाजिक कार्यों इत्यादि में। कुछ लोग अत्यधिक दुःख का अनुभव करने लगते है और उन्हें इसका कारण भी पता नहीं होता। आपको यह जानना जरूरी है कि डिप्रेशन के लक्षण बच्चों और बड़ों में अलग-अलग होते हैं जो इस प्रकार हैं :-

बच्चों और किशोरों में लक्षण

वैसे तो बच्चों और वयस्कों में अवसाद के लक्षण एक समान ही होते हैं परन्तु इन लक्षणों में थोड़ा बहुत अंतर हो सकता है, जो इस प्रकार है :-

- छोटे बच्चों में लक्षणों में ये शामिल हैं – उदासी, चिड़चिड़ाहट, अत्यधिक भावुक होना, चिंता, दर्द और पीड़ा, स्कूल जाने से इनकार करना, या कम वजन होना।
- किशोरों के लक्षणों में ये शामिल हैं – दुःख, चिड़चिड़ाहट, नकारात्मकता और अपने को बेकार महसूस करना, क्रोध, खराब प्रदर्शन या स्कूल में खराब उपस्थिति, मनोरंजक दवाओं या शराब का उपयोग करके, अधिक खाना या सोना, आत्म-हानि, सामान्य गतिविधियों में अरूचि होना, और सामाजिक बातचीत से बचना।

वयस्कों में लक्षण

बढ़ती उम्र के साथ डिप्रेशन सामान्य नहीं होता और ना ही इसे हल्के में लेना चाहिए। दुर्भाग्यवश, वयस्कों में अवसाद अक्सर उतनी आसानी से पहचान में नहीं आता और ना ही उपचार किया जाता, यहाँ तक कि वे इसके लिए मदद लेने के लिए अनिच्छुक महसूस कर सकते हैं। वयस्कों में अवसाद या डिप्रेशन के लक्षण अलग-अलग या कम स्पष्ट हो सकते हैं, जैसे कि :-

- याद रखने में परेशानी होना और व्यक्तित्व में परिवर्तन
- शरीर में दर्द होना
- थकान, भूख नहीं लगना, सोने में परेशानी होना और यौन क्रीड़ा में आनन्द ना लेना
- अक्सर नई चीजों को करने या सामाजिक होने की जगह घर में अकेले रहना
- आत्महत्या की सोच या भावना रखना, ऐसा ज्यादातर वृद्ध मनुष्यों में होता है।

डिप्रेशन के कारण

डिप्रेशन या अवसाद के बहुत सारे कारण हो सकते हैं। बचपन का आघात (Early Childhood Trauma), अवसाद का कारण हो सकता है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि कुछ घटनाएँ शरीर को डर और तनावपूर्ण परिस्थितियों के प्रति प्रतिक्रिया करने के तरीके को प्रभावित करती हैं। कुछ लोग अपने आनुवंशिकी के कारण अवसाद विकसित करते हैं। यदि आपका अवसाद या किसी अन्य मूड डिसऑर्डर का पारिवारिक इतिहास है, तो आप इस प्रकार के डिसॉर्डर को विकसित करने की अधिक संभावना रखते हैं।

डिप्रेशन के कुछ सामान्य कारण

- मस्तिष्क संरचना: यदि आपके दिमाग का आगे का लोब कम सक्रिय है तो आपको अवसाद का जोखिम अधिक होता है
- चिकित्सीय स्थितियाँ: कुछ चिकित्सीय स्थितियाँ जैसे पुरानी बीमारी, अनिद्रा, पुराना दर्द, या अटेंशन डेफिसिट हाइपरएक्टिविटी डिसॉर्डर
- शराब और दवाओं का दुरूपयोग
- आत्म-सम्मान की कमी या आत्म-आलोचनात्मक होना
- मानसिक बीमारी का व्यक्तिगत इतिहास
- कुछ दवाएँ भी डिप्रेशन का कारण हो सकती हैं
- तनावपूर्ण घटनाएँ, जैसे किसी प्रियजन की मृत्यु, आर्थिक समस्याएँ, या तलाक

कुछ लोगों के पास उनके अवसाद के लिए कोई भी कारण नहीं होता।

डिप्रेशन का इलाज

यदि आप डिप्रेशन से पीड़ित हैं तो इसके साथ रहना मुश्किल हो सकता है, पर घबराइये नहीं इसका इलाज आपको इससे बाहर निकाल सकता है। इसके संभव इलाज के लिए अपने डॉक्टर से बात करें, उससे आप अपने अवसाद के लक्षणों को नियंत्रित कर सकते हैं। इसके लिए आप

कन्वेंशनल और लाइफस्टाइल थेरेपीज को मिला सकते हैं। अवसाद के इलाज कुछ इस प्रकार हैं :-

1. **दवाएँ:** आपका डॉक्टर एंटीड्रिप्रेसेंट्स, एंटीएंजाइटी, या एंटीसाइकोटिक दवाएँ लिख सकता है।
2. **साइको थेरेपी या मनोचिकित्सा:** इसमें आप अपने मनोचिकित्सक के साथ बात करके नकारात्मक भावनाओं से निपटने के लिए कौशल सीख सकते हैं। आप परिवार या समूह चिकित्सा सत्र से भी लाभ उठा सकते हैं।
3. **लाइट थेरेपी:** व्हाइट लाइट की सहायता से डिप्रेशन के लक्षणों को कम किया जा सकता है और मूड को भी नियंत्रित किया जा सकता है। इस थेरेपी का इस्तेमाल मेजर डिप्रेसिव डिसॉर्डर का इलाज करने में किया जाता है।
4. **वैकल्पिक उपचार:** एक्यूपंक्चर या मैडिटेशन (ध्यान) की सहायता से भी डिप्रेशन का इलाज किया जाता है, इसके बारे में भी अपने डॉक्टर से अवश्य सलाह लें। कुछ हर्बल सप्लीमेंट्स जैसे सेंट जॉन वॉर्ट और मछली के तेल का उपयोग अवसाद के इलाज के लिए भी किया जाता है। किसी भी सप्लीमेंट या सप्लीमेंट को निर्धारित दवाई के साथ मिलाने से पहले एक बार अपने डॉक्टर से सलाह अवश्य लें। ऐसा करने से आप इसके दुष्प्रभावों से बच सकते हैं। कुछ सप्लीमेंट्स का आपकी सेहत पर बुरा असर पड़ सकता है, और यह आपके डिप्रेशन को और बढ़ा सकता है।
5. **नियमित व्यायाम:** एक हफ्ते में कम से कम 3 से 5 दिन, 30 मिनट के लिए व्यायाम अवश्य करें। नियमित व्यायाम आपके शरीर में एंडोर्फिन्स नामक हार्मोन को बढ़ता है जो आपके मूड को अच्छा करता है।
6. **शराब और नशीले पदार्थ ना लें:** शराब और नशीले पदार्थ आपको कुछ समय के लिए राहत पहुँचा सकते हैं पर लंबे समय तक इसका सेवन डिप्रेशन और चिंता को और बढ़ा सकता है।
7. **अपना ख्याल रखें:** आप स्वयं की देखभाल करके अवसाद के लक्षणों में सुधार कर सकते हैं। इसके लिए अच्छी नींद लीजिये, एक स्वस्थ आहार खाएँ, नकारात्मक लोगों से दूर रहें, और आनंददायक गतिविधियों में भाग लें।

कभी-कभी अवसाद का इलाज दवाइयों से भी नहीं होता, तब उस स्थिति में आपका डॉक्टर आपको कुछ अन्य ट्रीटमेंट ऑप्शन देगा जैसे कि- इलेक्ट्रोकोनवल्सिव थेरेपी, यह ब्रेन को स्टिमुलेट करती है और मेजर डिप्रेशन के इलाज की लिए इस्तेमाल की जाती है, ट्रांसक्रैनियल मेग्नेटिक स्टिमुलेशन – यह नर्व सेल्स को स्टिमुलते करती है और मूड को नियंत्रित करती है।

अवसाद का मतलब सिर्फ लौ महसूस करने से ज्यादा होता है। यह अक्सर आपकी दैनिक जिम्मेदारियों और रिश्तों में हस्तक्षेप कर सकता है। यह महीनों या वर्षों तक चल सकता है और उपचार के बिना अक्सर खराब हो जाता है। हालांकि, अवसाद एक इलाज योग्य चिकित्सा स्थिति है। जो लोग इलाज कराते हैं वे अक्सर अपने लक्षणों में सुधार देखते हैं।

फिर धुंध उठी

प्रोफेसर प्रशांत दास

फिर धुंध उठी, मौसम-ए-बहार आया,
क्या हुआ, अब कौन-सा बुख़ार आया।

दवा तक देते नहीं अब चारागर,
मर्ज़ आया नहीं, दर्द ज़ार-ज़ार आया।

पिछली बार मैख़ाने गए कब याद नहीं,
बिन पिये कौन-सा ख़ुमार आया।

दफ़्तर पड़ी उस मेज़ पर लेटा अक्सर,
और याद मेरे गाँव का हिसार आया।

मालूम था है वस्ल उनका नामुमकिन,
अक्सर गया, करके इंतज़ार आया।

दश्त के फूलों से हमको क्या लेना,
तपती हुई धूलों का कर ग़ुबार आया।

कर गुहार आया, ज़ीस्त दे उधार आया,
तर्क-ए-आरज़ू का पल बेशुमार आया।

मुन्नी की गाय

श्रीमती कुमुद वर्मा
पत्नी, प्रोफेसर संजय वर्मा

मुन्नी के पास एक बिल्कुल सफेद रंग की, बहुत सुंदर गाय थी जिसका नाम था भूरी। मुन्नी और उस भूरी में बहुत लगाव था। गाय और मुन्नी एक साथ ही घर में आए थे। दोनों साथ-साथ ही घर में रहे थे और साथ-साथ ही समय बिताते थे। दरअसल बात यह है कि जब मुन्नी का जन्म हुआ तो दादाजी एक गाय को घर पर लाए थे। उस गाय का नाम उसकी भूरी आँखों के कारण रखा- भूरी। मुन्नी का ज्यादातर समय दादा-दादी और भूरी के साथ ही बीतता था।

उसने रसोई में हमेशा गाय के दूध की, गाय के गोबर के उपले की खुशबू को महसूस किया था। दादी जब दूध दोहती थी तो उस झाग वाले दूध को बाल्टी से लेकर पीने का मजा ही कुछ अलग था। मुन्नी को जब भी भूख लगती, उसके लिए भूरी का दूध उपलब्ध रहता था। धीरे-धीरे समय बीतने लगा। गाय को खली डालने में, घास डालने में और उसके लिए कुट्टी काटने, पानी पिलाने आदि में वह दादाजी की मदद करने लगी। गाय की पूँछ के साथ खेलना उसको बहुत पसंद था। यह सब बातें उसकी जिंदगी में शामिल हो चुकी थीं।

शाम को वह थोड़ी देर भूरी के साथ जरूर बैठती थी। दादी को तो कभी-कभी ऐसा लगता कि मुन्नी और भूरी आपस में बातें कर रहे हैं। कभी-कभी दादी उससे पूछती थी कि तुम भूरी से क्या बातें कर रही हो? मुन्नी को लगता कि दादी को उसकी बात समझ ही नहीं आएगी इसलिए उससे कुछ कहते ही नहीं बनता था। धीरे-धीरे मुन्नी बड़ी हो गई और उसने स्कूल जाना शुरू कर दिया। भूरी भी धीरे-धीरे बूढ़ी हो रही थी और दादा जी को भी उसका काम करने में परेशानी होती थी।

एक दिन जब मुन्नी स्कूल से आई तो उसने देखा कि भूरी अपने खूँटे पर नहीं है। मुन्नी थकी हुई थी। वह खाना खाकर सो गई। शाम तक गाय भी आ गई। क्या हुआ था? कुछ भी मुन्नी को पता नहीं चला। रात को खाना खाते समय सब बात कर रहे थे कि यह भूरी वापस आ गई। खूंटा तोड़ कर आई है। इसको फिर से भेजना पड़ेगा।

अगले दिन रविवार था। मुन्नी स्कूल नहीं गई। उसने देखा कि भूरी को लेने एक आदमी आया है। उसको बड़ों की कोई भी बात समझ नहीं आ रही थी। दादा जी ने भी कुछ बताने की जरूरत नहीं समझी। मुन्नी बहुत परेशान हो रही थी और भूरी लगातार टकटकी लगाकर मुन्नी को देख रही थी। थोड़ी देर मुन्नी, भूरी के पास बैठ गई और दादा जी ने उस गाँव वाले आदमी को बोला कि मैं इसको गाँव में छोड़ जाऊंगा।

अगले दिन मुन्नी के स्कूल जाने के बाद दादा जी, भूरी को लेकर गाँव के लिए निकले और उसको छोड़कर आ गए। 2 दिन तक भूरी का खूंटा खाली रहा। मुन्नी को भूरी दिखी नहीं तो उसने दादा जी से पूछा- भूरी कहाँ है?

दादा जी ने बोला उसको मैं गाँव छोड़ आया हूँ। अब वह गाँव वाला ही उसकी देखभाल करेगा। यह सुनते ही मुन्नी ने जोर-जोर से रोना शुरू कर दिया। काफी देर रोती रही। गाँव 15 किलोमीटर दूर था। वह जाती तो कैसे? रोते-रोते उसको नींद आ गई। जब उसकी आँख खुली तो उसने देखा गाय दरवाजे पर खड़ी रंभा रही थी। मुन्नी और भूरी को कौन अलग कर सकता था। मुन्नी नहीं जा सकी तो क्या? भूरी फिर से खूँटा तोड़ कर आ गयी थी।

वास्तुकार - लुईस काह्न

श्रीमती संध्या सिंह,
माताजी, सुश्री मोना सिंह
(अकादमिक सहयोगी)

सन् 1961 में जब विक्रम साराभाई अहमदाबाद में हार्वर्ड के स्तर के एक बिजनेस स्कूल की नींव डालने में जुटे हुए थे तो उनका उद्देश्य एक ऐसा स्कूल खोलना था जिसकी शिक्षा एवं शिक्षण प्रणाली पारंपरिक शैली से हटकर पाश्चात्य एवं विश्व स्तर की हो तथा यह स्कूल भारत में विभिन्न व्यवसायों की उन्नति के लिए व्यवसायिक शिक्षा का केंद्र बने। इस स्कूल के भवन निर्माण का कार्य उन्होंने विख्यात वास्तुकार बालकृष्ण विट्ठलदास दोषी को सौंपा था। बालकृष्ण दोषी सन् 1950 में यूरोप जा चुके थे और काफी नाम कमा चुके थे। सन् 1954 में वे अहमदाबाद में ली कार्बूजिए की इमारतों की देखरेख के लिए भारत लौट आए थे, जिसमें विला साराभाई, विला शोधन, मिल ओनर्स एसोसिएशन बिल्डिंग और संस्कार केंद्र शामिल थे। बालकृष्ण दोषी को भारत का प्रथम वास्तुविद भी कहते हैं। बालकृष्ण दोषी ने लुईस काह्न से यह काम करवाने की पेशकश कीं। लुईस काह्न उस समय, पूर्वी पाकिस्तान (युद्द के पश्चात बांग्लादेश) में संसद भवन के निर्माण का कार्य कर रहे थे। बालकृष्ण दोषी ने उन्हें भारत बुलाया। लुईस काह्न भारत आए और उन्होंने भारतीय प्रबंध संस्थान अहमदाबाद के भवन का काम करना स्वीकार किया लेकिन उन्होंने एक ही शर्त रखी कि दोषी उनकी इस कार्य में मदद करेगें। काह्न ने भारतीय जलवायु के मुताबिक बड़े झरोखे, जो अधिक गर्मी में शीतलता का अहसास देते हैं तथा यहाँ आसानी से मिलने वाली लाल ईंटों से एक बेमिसाल भवन बना डाला, जिसमे उन्होनें अपनी खास शैली, ज्यामितिक आकारों, मौलिक रूप से वृत्त, वर्ग और त्रिकोण आदि का बखूबी प्रयोग किया।

भारतीय प्रबंधन संस्थान अहमदाबाद का यह भवन भव्य, शांतिपूर्ण, और संरचानात्मक है और यहाँ दी जाने वाली शिक्षा के स्तर के बिल्कुल उपयुक्त है। लुईस काह्न के बारे मे कहा जाता है कि वे ईंटों से बाते करते थे। वे अपने छात्रों से कहते थे कि अगर आप कभी अपने काम में अटक जाओ तो अपनी सामग्री, ईंटों से पूछें की वे क्या चाहती हैं। आखिर ईंटें भी कुछ बनना चाहती हैं। भारतीय प्रबंधन संस्थान अहमदाबाद आज अपनी स्थापना के 6 दशक पूरे कर चुका है, इसके केंद्र में स्थित लुईस काह्न प्लाजा, जिसे छात्र एल. के. पी. के नाम से बुलाते हैं। इसका नामकरण इस महान वास्तुविद के नाम पर ही किया गया है इसलिए यहाँ आने पर लुईस काह्न के जीवन को जानने की इच्छा होती है।

लुईस काह्न, जिनका वास्तविक नाम इट्ज़ा-लाइब शमुइलोव्स्की था इनका जन्म 20 फरवरी 1901 में एक गरीब यहूदी परिवार में, रुस में हुआ था, जो अब एस्टोनिया में है। उन्होंने अपना प्रारंभिक बचपन कुरेसारे के सरेमा द्वीप में बिताया जो तब रूसी साम्राज्य का हिस्सा था और उनके पिता रुसी फौज मे थे। सन् 1906 में उनका परिवार संयुक्त राज्य अमेरिका चला गया क्योंकि उन्हें डर था कि रूस-जापान युद्ध के दौरान उन्हें सेना में वापस बुला लिया जाएगा। सन् 1914 में जब वे अमेरिका के नागरिक बन गए

तो उनके पिता ने परिवार के नाम का अमेरिकीकरण किया तथा उनका नाम बदलकर लुइस इसाडोर काह्न रख दिया।

काह्न जब तीन साल के थे तब उन्होंने कोयले के जलते अंगारों को देखा और वे कोयले की रोशनी से मोहित हो गए। उन्होनें एक कोयला उठाकर अपने एप्रन में डाल लिया, जिसमें आग लग गई और उनका चेहरा जल गया। यह जलने का निशान उनके चेहरे पर हमेशा कायम रहा।

काह्न बचपन से ही कला में रुचि रखते थे। उनके पुत्र, नथानिएल काह्न की डॉक्यूमेंटरी फिल्म (2003), माई आर्किटेक्ट के अनुसार, उनका परिवार बहुत गरीब था एवं पेंसिल का खर्च भी नहीं उठा सकता था। इसलिए उन्होंने जली हुई टहनियों के कोयले से पेंसिल की छड़ें बनाईं ताकि रेखाचित्र बनाने में प्रयोग की जा सकें। उन्होनें कोयले का प्रयोग प्रसिद्ध वास्तुकार बनने के बाद भी जारी रखा। काह्न छोटी उम्र से ही कला में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते रहे और स्कूल में पढ़ने के दौरान फिलाडेल्फिया हाई स्कूल का सर्वश्रेष्ठ वाटर कलर कलाकार का वार्षिक पुरस्कार जीतते रहे। परन्तु जब उन्होंने वास्तुकला का इतिहास पढा और रोमन, ग्रीक, और मिस्र के भवनों और वास्तु के बारे मे जाना तो इन सब ने उन्हें वास्तुकार बनने के लिए प्रेरित किया। उन्होनें पेंसिल्वेनिया एकेडमी ऑफ द फाइन आर्ट्स की पूर्ण छात्रवृत्ति के तहत कला का अध्ययन करने के बजाए पेंसिल्वेनिया स्कूल ऑफ फाइन आर्ट्स विश्वविद्यालय से वास्तुकला में डिग्री प्राप्त की। वहाँ पर उन्होंने अपनी ट्यूशन फीस के भुगतान के लिए कई किस्म की नौकरियाँ की। उन्होंने सिनेमाघरों में मूक फिल्मों के पूरक के लिए पियानो भी बजाया। पेंसिल्वेनिया स्कूल ऑफ फाइन आर्ट्स से सन् 1924 में बैचलर ऑफ आर्किटेक्चर पूरा करने के बाद, काह्न ने शहर के वास्तुकार जॉन मोलिटर के कार्यालय में वरिष्ठ डिजाइनर के रूप में काम करना शुरू किया।

सन् 1928 में काह्न ने पूरे यूरोप की यात्रा की और अमेरिका लौटने के बाद फिलाडेल्फिया में विभिन्न एजेंसियों के साथ काम करना शुरू कर दिया। काह्न का वास्तुशिल्प कैरियर धीमा था। अवसाद के वर्षों के दौरान सन् 1935 में उन्होनें अपना कार्यालय स्थापित किया और फिलाडेल्फिया हाउसिंग अथॉरिटी की विभिन्न परियोजनाओं पर काम किया। काह्न को हमेशा वास्तुकला के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन लाने में रुचि थी। सन् 1947 में उन्होंने येल विश्वविद्यालय में वास्तुकला के प्रोफेसर के रूप में कार्य करना शुरु किया। यह उनके लिए प्रतिष्ठित शिक्षण कैरियर की शुरुआत थी, यहाँ उन्होंने दस साल तक काम किया और बाद में पेंसिल्वेनिया विश्वविद्यालय में प्रोफेसर बन गए। सन् 1950 से सन् 1951 तक वे रोम में अमेरिकन एकेडमी में आर्किटेक्ट-इन-रेजिडेंस रहे। इस समय के दौरान उन्हें ग्रीस, मिस्र, और इटली की यात्रा करने का अवसर मिला और वहाँ की वास्तुकला से प्रभावित होकर उन्होंने अपना बिल्कुल नया स्टाइल विकसित किया।

लुईस काह्न द्वारा डिजाइन की गई पहली उत्कृष्ट कृति

कनेक्टिकट में येल यूनिवर्सिटी आर्ट गैलरी (1953) है, जिसे अभी भी उनकी बेहतरीन कृति मानते हैं। इसके अतिरिक्त उनके अनेकों डिजाइन किए भवनों में रिचर्ड्स मेडिकल रिसर्च लेबोरेटरीज, पेंसिल्वेनिया विश्वविद्याल (1957-1965), साल्क इंस्टीट्यूट फॉर बायोलॉजिकल स्टडीज, कैलिफोर्निया (1959-65), फिलिप्स एक्सेटर अकादमी लाइब्रेरी, (1965-1971), शहीद सुहरावर्दी मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल, ढ़ाका शामिल हैं।

लुईस काह्न की मृत्यु 17 मार्च, 1974 (73 वर्ष) को दिल का दौरा पडने से हुई, वे एक दिन पहले ही भारत में श्री बालकृष्ण दोषी से मिलकर और उनके साथ उनके घर पर रात्रि भोजन लेकर पेंसिल्वेनिया लौटे थे। इनकी मृत्यु के समय ये विश्व के श्रेष्ठ वास्तुकार थे, परन्तु फिर भी ये आर्थिक रुप से निर्धन थे, क्योंकि इन्होंने अपने सारे पैसे अपने डिजाइनों पर खर्च कर दिए थे।

नयी कहानी

अभिषेक कुमार मिश्रा,
अभिलेखाधिकारी

छोड़कर बातें पुरानी, एक फिर से, नयी कहानी
शाम आयी, कह रही है अब भी बाकी, ज़िंदगानी।
दिन है जगमग, दिन है जगमग
एक नया-सा...
आ गयी है, सुबह सुहानी
एक फिर से, नयी कहानी,
देख बाकी, ज़िंदगानी।
जब रात आये, देख सपने
खोल आँखें, देख सपने
फिर उठ जा, उनको पूरा करने
फिर लग जा, उनको पूरा करने
और लिख एक नयी कहानी,
अब भी बाकी, ज़िंदगानी।
देख ये आसान, ना होगा
राह में पतझड़ भी होगा
काँटे होंगे, पत्थर होगा
हौसले को साथ ले चल
वही सच्चा मित्र होगा
तू लिखेगा, नयी कहानी
देख बाकी, ज़िंदगानी।
आँसू आए, बैठ जाना
बैठकर, फिर उसको पढ़ना
पढ़ते रहना, बढ़ते रहना
बढ़ते रहना, पढ़ते रहना
पढ़ना सारी ज़िंदगानी
बढ़ना सारी ज़िंदगानी
है, ये तेरी, नयी कहानी
देख बाकी, ज़िंदगानी।
छोड़कर बातें पुरानी,
एक फिर से नयी कहानी
लिख दे फिर से नयी कहानी
शाम आयी, कह रही है
अब भी बाकी, ज़िंदगानी
देख बाकी, ज़िंदगानी।।

भ्रष्टाचार मुक्त भारत – विकसित भारत

बिन्दु डोडिया,
सहायक प्रबंधक-हिंदी

भ्रष्टाचार की उत्पत्ति जीवन की उत्पत्ति के साथ व पुरातन मानव सभ्यता के समय से ही विद्यमान है जिसके स्वरूप और नियम, स्थान और संस्कृति के अनुसार बदलते रहे हैं। भ्रष्टाचार पृथ्वी के उन सभी प्राणियों में विद्यमान है जो एक सुदृढ़ सामजिक व्यवस्था के तहत अपने जीवन को यापन करते हैं। कई बार एक धारणा जन्म लेती है की भ्रष्टाचार एक राजनैतिक, अथवा प्रबंधन की तकनीकी असफलता से उपजी अथवा प्रशासनिक व्यवस्था की अक्षमता की समस्या है। किन्तु तनिक से विश्लेषण के उपरान्त यह सत्यापित होता है कि भ्रष्टाचार एक सामाजिक समस्या है जो की अन्य मद और विभागों में अपनी जड़ों को दिष्ट करती है। अरस्तु कहते हैं व्यक्ति एक सामजिक प्राणी है, तो आचार और व्यवहार से सम्बद्ध समस्याएँ भी सामाजिक हैं। यहाँ सांस्कृतिक विविधता की क्लिष्टता एक उल्लेखनीय प्रारूप है, जो बहु-सांस्कृतिक समाज का आधार है। इसलिए भारत में भ्रष्टाचार की जड़ विशुद्ध रूप से सामाजिक आचार / व्यवहार से जुड़ी पायी जाती हैं। अतः भारत को खुद की छवि एक विकसित राष्ट्र की मूर्त परिकल्पना के संदर्भ से प्राप्त करनी है तो सामाजिक विरेचन के साथ व्यवस्था संचालन की एक प्रतिबद्ध नियमावली पर प्रगाढ़ निर्णय लेकर प्रगति पथ पर अग्रसर होना होगा।

भ्रष्टचार क्या है :

पहले, मूल समस्या भ्रष्टाचार को समझें। भ्रष्टचार अर्थात "भ्रष्ट + आचार", या परिभाषा में देखें तो आचार और व्यवहार में सम्बद्ध नियम की अवहेलना के कर्म के माध्यम से व्यक्तिगत लाभ अर्जित करना। अमूमन एक व्यक्ति जो किसी संस्थान में कार्यरत है, (एक सरकारी कर्मचारी अथवा एक राजनेता हो अथवा एक निजी उद्यम में कार्यरत कर्मचारी), उसे नियत कार्य को पूर्ण करना अपेक्षित होता है, जिसमें वह किए गए कार्य के लिए नियत सेवा शुल्क के अलावा अतिरिक्त धनराशि की माँग नहीं कर सकता। अगर वह अतिरिक्त धनराशि की माँग करता है तो वह भ्रष्टाचार में लिप्त है। या कोई व्यक्ति संवैधानिक नियमावली का पालन नहीं करता है तो वह भ्रष्ट है।

भ्रष्टाचार का विभाजन कई तरीकों से किया जा सकता है, किन्तु मूल रूप में इसके दो विभेद हैं, तथा यह दो स्तर पर परिलक्षित होता है। एक है प्रत्यक्ष भ्रष्टाचार जिसमें त्वरित व्यक्तिगत लाभ प्राप्त किया जाता है, जैसे रिश्वत, कमीशन, उपहार, नियत टेक्स न भरना, आदि। दूसरा होता है परोक्ष भ्रष्टाचार, जिसमें प्रत्यक्ष लाभ को ठुकरा कर परोक्ष लाभ को सिंचित किया जाता है, जैसे किसी व्यक्ति के नियम विरूद्ध होने पर भी उसे अनदेखा करके उसे नियम पालक होने का लाभ देना और उसके एवज में भविष्य में उससे लक्षित निजी लाभ प्राप्त करना, या दूरगामी व्यक्तिगत लाभ हेतु पहचान के व्यक्ति के पक्ष में अनुचित लाभ को पोषण देना। और यह भी दो स्तर पर पाया जाता है: पहला तो सरकार, सरकारी तथा निजी उपक्रम में उच्च प्रशासनिक अधिकारी या प्रबंधन में और दूसरा उपरोक्त तत्वों में उच्च प्रबंधन के कर्मचारी समूह में।

भ्रष्टाचार के प्रभाव और राष्ट्र का विकास :

एक गरीब देश से विकासशील देश बनना और विकासशील देश से विकसित देश होने में आचार व व्यवहार की पवित्रता एक मूल अनिवार्यता है। अपवित्र अथवा भ्रष्ट-आचार और व्यवहार प्रगति को अवरुद्ध कर देता है। ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल (वैश्विक स्वायत्त संस्थान) के अनुसार 180 देशों में भारत 85वें पायदान पर है। भ्रष्टाचार में व्याप्त, संवैधानिक पदों पर आसीन नेतृत्व भी अपने अधिकारों का दुरुपयोग करते हैं और अपने मातहत नौकरशाह को बलात अथवा सहसम्मति

से इस दुरूपयोग में सहभागी बनाते हैं। कुछ भारतीय, इस दुरूपयोग से नकारात्मक सोच अपनाकर, कर प्रदाता होने में संकोच जैसा महसूस करते हैं। यह संकोच उनके मूल स्वभाव में शामिल हो जाता है और वे इस भ्रष्ट व्यवहार को सत्यापित करने के लिए सरकार के प्रति अति आलोचनात्मक भाव को प्रश्रय देते हैं। इस दौड़ में निजी संस्थान भी पीछे नहीं हैं। वे सरकार से ठेके प्राप्त करने के लिए, चुनाव और पार्टी चंदा के माध्यम से एक विशेष नेतृत्व को अपने पसंद के पद पर मनोनीत करवाते हैं। इस तरह से अयोग्य को पद प्राप्त होता है, जो सामान्य जनता को धोखा देकर, देश की अर्थव्यवस्था को नुकसान पहुँचाकर, संसाधन का दुरुपयोग करके योग्य की योग्यता का ह्रास करता है। अपूर्ण सरकारी सुविधाएँ, निम्नकोटी की आधारभूत संरचनाएँ, असफल होते सरकारी उद्यम, जीवन स्तर में गिरावट, बढ़ता सामजिक और राजनैतिक विद्वेष, अस्थिर राष्ट्र और अस्थिर व्यवस्था और निरंतर वैश्विक पटल पर एक लाचार और मजबूर राष्ट्र के रूप में क्षतिपूर्ण छवि का बनना आदि सब भ्रष्टाचार के ही परिणाम हैं।

भारत में भ्रष्टाचार के कारण और स्थिति:

भ्रष्टाचार को भारत में सामाजिक प्रश्रय मिला हुआ है और जन-मानस इसे एक व्यवहारिक अंग मान चुका है। ज्ञातव्य रहे की चलचित्र "बुद्ध इन द ट्रैफिक जैम" के एक दृश्य में एक प्रोफ़ेसर अपने छात्रों को यह समझाते हैं कि भ्रष्टाचार सामाजिक व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने वाला स्नेहक है और उसे सत्यापित करने के लिए वे कई तर्क भी देते हैं। आम जन-मानस के लिए कर चोरी, बिजली की चोरी, सरकारी संसाधन का दुरूपयोग, यातायात चालान से बचने के लिए अधिकारी को एक व्यक्तिगत सहायता राशि, संवैधानिक पद पर आसीन नेतृत्व को अपने पक्ष में करने की आकूत इच्छा आदि सब एक सामान्य और आनिवार्य घटनाएँ हैं। कुछ लोग नैतिक बल अथवा धन की कमी के कारण रिश्वत देने की परम्परा को प्रश्रय देने से मना कर देते हैं और एक मानसिक झुंझलाहट के शिकार होते हैं।

भारत में भ्रष्टाचार के कई कारण हैं। किन्तु मूल रूप से तीन कारण हैं, जो सभी अन्य कारणों के स्रोत हैं। पहला भारत में शिक्षा का अभाव होना, दूसरा स्थापित नैतिक मूल्यों का ह्रास होना, तीसरा अस्थिर नेतृत्व। अब शिक्षा की कमी है इसलिए मूल्यों का ह्रास है, तथा भ्रष्टाचार है इसलिए मूल्य स्थापित नहीं होते हैं। भारत में भष्टाचार से उत्पन्न यह विसंगति पूर्ण अवस्था, सामान्य जन-मानस के मन में व्यवस्था के प्रति विद्वेष और आसान राह की चाह में भ्रष्टाचार को आम जीवन के व्यवहार में एक अनिवार्य और नैतिक ज़रुरत जैसा स्थापित कर देती है और यह बहुत भयावह होती जाती है।

भ्रष्टचार से मुक्ति के उपाय :

एक विकसित राष्ट्र होने के लिए भ्रष्टचार मुक्त होना बहुत ज़रूरी है। ऐसा राष्ट्र जिसके जन-मानस में नैतिक मूल्यों और नियम पालन के लिए एक दृढ़ इच्छा हो और वह कठिन परिस्थितियों में भी नहीं डिगे। भारत में 1860 में भ्रष्टाचार निरोधक कानून बनाया गया था, और 1988 में फिर उसमें कई और प्रविष्टियाँ लागू करके उसका उन्नयन किया गया। क़ानून सख्त हैं लेकिन उनका अनुपालन भी सख्ती से होना चाहिए।

शिक्षा व जागरूकता : जन-मानस में शिक्षा का प्रसार बहुत जरूरी है। शिक्षित जनता भ्रष्टाचार के प्रति जागरूक रहती है। वह दूसरों को भी जागरुक करके तथा स्वयं को शोषण से बचा कर भ्रष्टाचारियों पर क़ानून के माध्यम से भ्रष्टाचार के लिए प्रतिकार उत्पन्न करती है। जागरूकता से एक लाभ ये भी होता है की कोई अल्प शिक्षित है तो भी वह भ्रष्टाचार के लिए सचेत हो जाता है और स्वयं को अधिक जागरूक बनाने की कोशिश करता है। शिक्षा में नैतिकता का पाठ दूरगामी परिणाम देता है और नागरिक भ्रष्ट आचरण से दूर रहता है।

प्रशासनिक पारदर्शिता : यह कई प्रकार से निभायी जा सकती है।

1. सरकार प्रशासनिक पारदर्शिता को अपनाकर जनता को भ्रष्टाचार मिटाने के लिए प्रोत्साहित कर सकती है। सरकारी ठेके, सरकारी कार्य की विभागीय विवरणिका, महत्वपूर्ण निवेश, कार्यप्रणाली की सालाना व्याख्या आदि सभी बताए जाने वाले प्रशासनिक सत्व को एक वेब पोर्टल अथवा सरकार द्वारा जारी गजट में प्रकाशित करना चाहिए। जानकारी साझा करने से सरकार अगर अपने आँकड़ों में गलती करती है तो जागरूक जनता उसकी तरफ सरकार का ध्यान खींच सकती है।

2. सैन्य उपकरण, अन्य विभागीय उपकरणों की सरकारी खरीदी में बिचोलियों की समाप्ति और उनकी गुणवत्ता का सत्यापन एक निष्पक्ष एजेंसी के माध्यम से कराया जाना भी भ्रष्टाचार को बहुत प्रतिशत में समाप्त कर सकता है।

3. चुनावी खर्च और सरकार बनाने के लिए चुनाव लड़ने वाली पार्टियों को मिलने वाले चंदे पर पारदर्शिता लागू करके भ्रष्टाचार के एक मुख्य स्रोत पर रोक लगाई जा सकती है।

4. निचले स्तर पर न्यायपालिका में होने वाले भ्रष्टाचार पर भी रोक लगाने के उपाय किये जाने चाहिए।

5. केंद्रीय सतर्कता आयोग जैसी स्वतन्त्र जाँच एजेंसी के माध्यम से विभागों पर कड़ी नजर रखना और भ्रष्टाचार के अपराधी को सजा देना, ताकि कर्मचारियों में स्वच्छ आचार के प्रति आकर्षण प्रगाढ़ हो।

कर क़ानून, बेंकिंग में सुधार : करदाताओं पर कर, एक अनुकूलित माप में होना चाहिए, जिससे सरकार भी घाटे में न आये तथा करदाता भी कर के बोझ से कर चोरी का प्रयास ना करें। क़ानून के माध्यम से आधुनिक जरूरतों को ध्यान में रखते हुए समय-समय पर कर क़ानून में बदलाव करना भ्रष्टाचार को कम कर सकता है। अचल संपत्ति व अन्य सम्बंधित मद के निवेश में भ्रष्टाचार होने की संभावना बहुत ज्यादा होती है। अतः ऐसे सभी मदों के आहरण में बैंक को एक आनिवार्य माध्यम स्वीकार किया जाए, जिससे आहरण में पारदर्शिता और टेक्स में चोरी की संभावना न्यूनतम हो जाये। बैंक को सरकारी संरक्षण से अधिकतम मुक्ति देकर उनमें होने वाले भष्टाचार में कमी लायी जा सकती है। इससे बैंक, भ्रष्टाचार की माँग के तहत संवैधानिक पद पर आसीन नेतृत्व के दबाव में आकर एक गैर-योग्य को वित्तिय सहायता नहीं देंगे और बैंकों पर घाटे में होने का दवाब नहीं होगा।

भ्रष्टाचार को रोकने में तकनीकी उन्नयन : तकनीकी की सहायता से भी भ्रष्टाचार पर बहुत हद तक रोक लगायी जा सकती है। लगातार नियंत्रण और कड़ी जाँच प्रक्रिया के मध्यम से कर्मचारियों को मानसिक भटकाव से बचाया जा सकता है।

सकारात्मक प्रशंसा व प्रोत्साहन: केवल निगरानी से या नियंत्रण से ही भ्रष्टाचार को रोका जा सकता है। यदि अच्छे आचरण, बेहतर कार्य कुशलता और उपलब्धियों पर प्रशंसा प्रमाण पत्र, प्रोत्साहन दिया जाए तो भ्रष्टाचार करने की इच्छा को मन से हटाया जा सकाता है। इस बाबत लगातार जागरूकता, सन्देश और सकारात्मक सोच को प्रोत्साहित किया जाए तो दूरगामी परिणाम के तहत भ्रष्टाचार को न्यूनतम स्तर तक लाया जा सकता है।

ज़िंदगी आज है, अभी है

रश्मि सदानंदन,
सहायक प्रबंधक

ज़िंदगी के मायने समझने चले हैं हम,
बस ज़िंदगी जीना भूलते जा रहे हैं।

चाहत हम करते हैं सुकून की,
बस शोर के पीछे भागते जा रहे हैं।

सपनों में चाहत है खुली वादियों की,
कोशिश शहरों में बसने की किए जा रहे हैं।

चाहते हो बारिश की गीली मिट्टी की खुशबू,
परंतु खुद को भीगने से बचाये जा रहे हैं।

छोड़ दो खुद को बचाना इतना,
बारिश आए तो भीग भी लिया करो।

काम-काज तो हम करते ही रहेंगे,
वक़्त निकालकर मुस्कुरा भी लिया करो।

रास्तों में तकलीफ़ें आती रहेंगी,
उनसे डरकर खुद को निराश मत करना।

कुछ कहना हो अगर, तो देर मत करना।

किसी को आवाज़ देनी हो, तो देर मत करना।

दबे जज़्बात करने हों ज़ाहिर, तो देर मत करना।

हर लम्हें का लुफ़्त उठा लेना,
वक़्त के ठहरने की ज़िद्द मत करना।

ज़िंदगी है जीने के लिए,
खुलकर जीने का इंतज़ार मत करना।

समाज के विकास में शिक्षा का महत्त्व

हरीश प्रेमी,
पीएच.डी. छात्र

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। इस धरा पर जितनी भी जीव-प्रजातियाँ अस्तित्व में हैं, मनुष्य उन सब में सर्वाधिक बुद्धिमान जीव माना गया है। श्रेष्ठ बुद्धि, तर्कशीलता, सृजनात्मकता एवं विचार व कल्पना करने की योग्यता मनुष्य को संसार में उत्कृष्ट प्रजाति के रूप में स्थापित करती है। इन्हीं श्रेष्ठ योग्यताओं की सहायता से मनुष्य चिरकाल से विकास एवं उन्नति के शिखरों को छूने में समर्थ रहा है। कला और विज्ञान के क्षेत्र में निरंतर प्रगति करते हुए नये आयामों को खोजा है एवं जीवन को और अधिक समृद्ध करने में मनुष्य सदा से ही प्रयत्नशील रहा है। इस विकास और समृद्धि की प्राप्ति में मनुष्य की सबसे महत्त्वपूर्ण व अनोखी योग्यता है – ज्ञान व शिक्षा ग्रहण करने की योग्यता, जिसकी सहायता से आज मानव प्रगति व उन्नति के उच्चतम शिखरों को छू पाने में समर्थ हो सका है। ज्ञान एवं शिक्षा के प्रसार के कारण ही मनुष्य एक आधुनिक समाज की संरचना का सृजन कर पाने में सफल हो सका है। शिक्षा की अनोखी ताकत ने ही मनुष्य को इतना बलवान बनाया है कि वह प्रकृति पर भी विजय पाने में सक्षम हो सका है।

'सा विद्या या विमुक्तये' – हमारे शास्त्रों में कहा गया है कि विद्या वही है जो मानव को मुक्त करे। अर्थात शिक्षा का सही उद्देश्य मानव जीवन को अज्ञान के अंधकार से निकालकर ज्ञान के प्रकाश की ओर अग्रसर करना है। पुरातन काल से ही मानव जीवन भिन्न-भिन्न चुनौतियों का सामना करता आ रहा है। प्राकृतिक आपदाएँ, महामारी, युद्ध या फिर आंतरिक या बाहरी संकट – हर चुनौती के लिए मानव को डटकर सामना करना पड़ा है। वर्तमान में भी मानव जीवन में अनेकों चुनौतियाँ हैं और आने वाले भविष्य में भी कदाचित इनसे मुक्त नहीं होगा।

ऐसी स्थिति में शिक्षा का महत्त्व अधिक बढ़ जाता है क्योंकि मूलभूत रूप से मानव के अंतर्मन की इच्छा रहती है – एक खुशहाल एवं संपन्न जीवन। और यह तभी संभव है जब संपूर्ण समाज खुशहाली और संपन्नता हासिल कर पाएगा। विदित है कि ज्ञान एवं शिक्षा के अभाव में इस उद्देश्य को पूर्ण कर पाना असंभव है। अज्ञान एवं अशिक्षा के कारण ही समाज में अनेकों मुसीबतें पैदा हो जाती हैं, फिर चाहे वह आतंकवाद हो, जातिवाद हो, भ्रष्टाचार हो या फिर निर्बल और निचले वर्ग का शोषण। आधुनिकता की अंधी दौड़ में मानवीय और सामाजिक-नैतिक मूल्यों का पतन समाज के लिए एक बड़ी चुनौती है। ऐसी परिस्थिति में शिक्षा के शस्त्र द्वारा इन अमानवीय व असामाजिक कुरीतियों का दमन संभव है।

विज्ञान एवं तकनीकी क्षेत्र में हुए अभूतपूर्व विकास के कारण आज मानव अंतरिक्ष में तो कदम रख चुका है, किंतु पृथ्वी पर आज भी मानव जाति एक खुशहाल, संपन्न एवं निर्विकार समाज का सृजन करने में असमर्थ रही है। परमाणु बम और विश्व-युद्ध का संकट हर क्षण बना ही रहता है। आर्थिक रूप से समृद्ध राष्ट्रों में प्रथम रहने की दौड़ में मानव-मूल्यों का हनन जारी है।

समाज के विकास के लिए मानवीय मूल्यों की शिक्षा प्रदान करना अनिवार्य मालूम पड़ता है ताकि समाज को समृद्धि के पथ पर अग्रसर किया जा सके। वैज्ञानिक शिक्षा के माध्यम से हम आर्थिक रूप से तो समृद्ध एवं संपन्न समाज की रचना कर पाने में समर्थ हो जाएंगे, किंतु एक 'राम-राज्य' की स्थापना करने में कदाचित सफल ना हो पाएँ। एक ऐसा समाज जहाँ मानव को उसके जीवन के सही मायने समझाए जाएँ, जहाँ उसकी कल्पना एव सृजनात्मकता को स्वतंत्रता हो, जहाँ किसी प्रकार का कोई भेद या अंतर ना हो, जहाँ मानव व प्रकृति के मध्य समन्वय हो, जहाँ मानव जाति पर

किसी युद्ध या विनाश का संकट ना हो और जहाँ मानव शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्तर पर अपनी क्षमताओं को पूर्णतया विकसित करने में सफल हो सके। ऐसे समाज की संभावना तभी हो सकती है जब शिक्षा में मानवीय मूल्यों का सम्मिलन हो। मानवीय मूल्यों पर आधारित ऐसी शिक्षा नीति, जिसके आधार पर प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन के सच्चे उद्देश्य के प्रति जागरूक हो सके, एक समृद्ध समाज के निर्माण में कारगर साबित होगी।

असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मामृतं गमय।

ज्ञान व शिक्षा ऐसी हो जो मानव को असत्य से सत्य की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर एवं मृत्यु से अमृतत्व की ओर ले जाए।

हिंदी की धुलाई कर दी

भावेश पटेल
वरिष्ठ व्यावसायिक सहायक

इंग्लिश के चक्कर में हमने हिंदी की धुलाई कर दी।

नमस्ते हमारा हाय बन गया, अलविदा हमारा बाय बन गया।
गाय हमारी काऊ बन गई, शर्म हमारी वाऊ बन गई।

इंग्लिश के चक्कर में हमने हिंदी की धुलाई कर दी।।

घर की दीवारें वॉल बन गई, दुकानें शापिंग मॉल बन गई।
छोरा हमारा गाई बन गया, योग हमारा योगा बन गया।

इंग्लिश के चक्कर में हमने हिंदी की धुलाई कर दी।।

पिता हमारे डैड बन गए, भाई हमारे ब्रो बन गया।
बहन हमारी सिस बन गई, चाची हमारी आंट बन गई।

इंग्लिश के चक्कर में हमने हिंदी की धुलाई कर दी।।

गली हमारी वार्ड बन गई, हमारी माँ मॉम बन गई।
गुरु हमारे प्रोफ बन गए, भगवान हमारे लॉर्ड बन गए।

इंग्लिश के चक्कर में हमने हिंदी की धुलाई कर दी।।

इसलिए भावेश कहता है, ज्यादा इंग्लिश के चक्कर में मत पड़ो।
क्योंकि, इंग्लिश के चक्कर में हमने हिंदी की धुलाई कर दी।।

नन्ही-सी चिड़िया

कृष्ण सतीश चौथंकर,
पीजीपी छात्र

नन्ही-सी इस चिड़िया के तो, खुले भी नहीं नाज़ुक से पर।
छोड़कर अपना घर आँगन सारा, आई है इस कॉलेज के दर।

तेरी उस मुस्कान की झलक, तेरे उस आँचल का आड़।
कैसे बताऊँ माँ तुझे, हर लम्हा करूँ, तुझी को याद।

क्या थी वो दोस्तों की महफ़िल, कहाँ गया वो पहला-सा प्यार।
खुदा तक ने तुझपे रहम ना किया,
जो छीन लिया तुझसे तेरा यार।

है नींद नहीं इन नैनों में, है बस दिल में तनहाई।
ढूँढ़ती इन सवाली-सी रातों में,
खुशी की इक उजली परछाई।

ज्ञान के क्षितिज को छुआ ही था जो,
एग्ज़ाम्स की धारा में बह गई।
विद्या के इस महासागर में,
बिन पतवार भटकते ही रह गई।

पता न था इस निर्मल नादान को,
कि वर्षा के बाद ही इंद्रधनुष आता है।
अँधेरी रात के पश्चात ही तो,
सूरज इस जहाँ पर जगमगाता है।

हे चिड़िया तू अभी हार ना मान,
ज़रा अपने नाज़ुक परों को तान।
सफलता की कश्ती को छूना है तूने,
भर ले ना ! नीले गगन में उड़ान।

प्रातः तेरे पंख फड़फड़ाएँगे, अंबर के मुसाफिर तुझे सताएँगे।
मुसीबतों का तूफ़ान तो यकीनी है आना,
मौत के खौफ़ तो, तुझे भी रुलाएँगे।

कॉलेज के दर से बाहर जो निकली,
कामयाबी को तबदील कर लिया। हम तो देखते ही रह गए...
और हमारी नन्ही-सी चिड़िया ने,
सारे जहाँ को अमीर कर दिया।

सोशल मीडिया पर हिंदी का प्रभाव

मोनिका अग्रवाल,
सहायक प्रबंधक

सोशल मीडिया यानि वर्तमान समय में जनसंपर्क का कदाचित सर्वाधिक प्रचलित एवं लोकप्रिय माध्यम। यह केवल लोकप्रिय ही नहीं, किंतु इंटरनेट और मोबाइल क्रांति के कारण बहुत सस्ता और उपयोग के लिए आसान माध्यम भी है। तभी तो आज हम जब भी बाहर निकलते हैं, हमें हर किसी के हाथों की उँगलियाँ अपने मोबाइल पर ही पटपटाती दिखाई पड़ती हैं – फिर चाहे वह कोई नेता, अभिनेता हो या फिर फल अथवा सब्जी बेचनेवाला। आज की पीढ़ी के लिए तो सोशल मीडिया एक आवश्यकता ही बन चुका है।

उपयोगिता –

सोशल मीडिया अपने आप में एक अत्यंत उपयोगी सिद्ध होने वाला माध्यम भी है। हाल ही में फेसबुक का एक विज्ञापन देखा, जिसमें एक लड़की, जिसे ढोल बजाने का बड़ा शौक है, ढोलियों के एक समूह को जाकर कहती है कि मैं भी ढोल बजाना चाहती हूँ। पर वह समूह लड़कों का समूह है, अतः वे उसकी खिल्ली उड़ाकर मना कर देते हैं, तब वह फेसबुक पर इस विषय में एक पोस्ट करती है और उसे अपनी तरह के, अपने समान विचारों वाले लोग मिल ही जाते हैं।

यह तो केवल उदाहरण मात्र था, किंतु ऐसे और भी कई किस्से हमने देखे हैं, जैसे किसी को तुरंत रक्त की आवश्यकता हो तो सोशल मीडिया पर डाले और रक्तदाताओं की फौज मिल जाती है। एक और भी अच्छा किस्सा सुना था कि कोरोना काल में एक डॉक्टर जो दूसरे शहर में लोगों की मदद करने गया, उसके पास रहने को घर नहीं था। सोशल मीडिया पर किराये के मकान की आवश्यकता की बात करते ही कई लोग बिना किसी किराये के उन्हें अपना मकान देने को तैयार खड़े थे।

आज तो सरकार भी अपनी हर बात सोशल मीडिया के ही माध्यम से जनता तक पहुँचाती है। हर अभिनेता अपनी फिल्मों को बढ़ावा देने, अपने प्रशंसकों से जुड़े रहने, बड़ी-बड़ी कंपनियाँ अपने नये उत्पादों की जानकारी देने, ग्राहक अपनी शिकायतें दर्ज कराने इत्यादि के लिए सोशल मीडिया का ही सहारा लेते हैं।

सोशल मीडिया और हिंदी –

हम सभी जानते हैं कि हमारे देश में अधिकांशतः लोग हिंदी भाषा बोलते हैं (चाहे वह हिंदी का कोई भी रूप हो – अवधी, हरियाणवी, खड़ी बोली आदि) और जिनकी मातृभाषा हिंदी नहीं है ऐसे लोगों में भी अधिकतर लोग हिंदी बोल अथवा समझ लेते हैं।

स्वतंत्रता संग्राम के समय हिंदी ने लोगों को जोड़े रखने का एक बहुत बड़ा दायित्व निभाया है और यही हिंदी आज भी पूरब-पश्चिम-उत्तर-दक्षिण को एक भारत बनाने में सफलतापूर्वक भूमिका निभा सकती है। हिंदी फिल्में देश में सर्वाधिक देखी जाती हैं, विज्ञापन हिंदी में प्रसारित किए जाते हैं, यहाँ तक कि जब कोई विदेशी नेता या कोई अन्य बड़ी हस्ती भारत आती है तब वे यहाँ के लोगों का अभिवादन 'नमस्ते' से करना पसंद करते हैं ताकि वे इस देश से, यहाँ के लोगों से, यहाँ की मिट्टी से जुड़ सकें।

इसी प्रकार से सोशल मीडिया में भी हिंदी का प्रचलन अभिन्न है, जैसा कि मैंने पहले भी कहा कि आज सब्जी-तरकारी वाले भी मोबाइल लेकर बैठे दिखाई पड़ते हैं, ये वे लोग हैं जो अधिकतर अपनी ही भाषा में समझना जानते हैं। इसके अलावा, ये भी देखा गया है कि हम अपनी भाषा, हिंदी भाषा के माध्यम से लोगों की भावनाओं को स्पर्श कर सकते

हैं, अपनी भाषा में ही अपनी भावनाएँ व्यक्त करना अधिक प्रभावशाली होता है क्योंकि कुछ विचार, कुछ संवेदनाएँ व्यक्त करने में अन्य भाषाएँ असमर्थ सिद्ध होती हैं।

उदाहरण के तौर पर यदि आपको अधिकतम लोगों तक अपनी बात पहुँचानी है और उन्हें अपनी मुहिम का हिस्सा बनाना है तो आप अँग्रेज़ी में ना लिखकर हिंदी में लिखिए और फिर देखिए कि आपकी अपेक्षा से भी अधिक लोग आपसे जुड़ पाएँगे। वरना क्या कारण हो सकता है कि हर बार चुनावों के समय आपको सभी नारे, सभी भाषण हिंदी में ही सुनाई पड़ते हैं।

हिंदी को भारत के संविधान ने राजभाषा का दर्जा भी इसीलिए दिया था कि यह जन-जन की भाषा है। भारत देश की धरोहर, भारत के गौरवशाली इतिहास की व्याख्या को भी उचित न्याय केवल हिंदी ही दिला सकती है। सोशल मीडिया आखिर है क्या चीज? लोगों तक अपनी बात पहुँचाने का माध्यम, अपनी खबरें साझा करने का मंच, अपनी भावनाएँ और परिस्थितियाँ व्यक्त करने का स्थान। अब ये सभी चीज़ें जब आप अपनी भाषा- अपनी हिंदी के प्रयोग से करते हैं तो इनका महत्त्व और भी बढ़ जाता है।

वैसे भी, वर्तमान समय में सोशल मीडिया ने कदाचित परिवारों को बड़ा भी बना दिया है और छोटा भी। बड़ा इस दृष्टि से कि अब 'वसुधैव कुटुंबकम' की तरह पूरा विश्व आपका परिवार है। एक बटन के दबते ही लोग विश्व के कोने से जुड़ जाते हैं। दूसरी दृष्टि में परिवार छोटे भी हो गए हैं क्योंकि लोग अपने परिवारजनों के बीच बैठकर भी अपने मोबाइल में और सोशल मीडिया में खोये रहते हैं।

खैर, सोशल मीडिया के उपयोग से लाभ अधिक हैं या हानि यह अलग चर्चा का विषय है, किंतु सोशल मीडिया के वर्तमान समय और वर्तमान पीढ़ी पर प्रभाव को झुठलाया नहीं जा सकता। इसके अभाव में जीवन अब कल्पना में भी नहीं आता। जब सोशल मीडिया इतना ही अधिक महत्त्वपूर्ण है तो देश की राजभाषा से परे कैसे रह सकता है।

आज लोगों के लिए यह बहुत आवश्यक है कि वे विश्व में दिन-प्रतिदिन हो रहे परिवर्तनों से अनभिज्ञ ना रहें, पल-पल की खबर रखें और ऐसे में हिंदी से अधिक और कौन इतना उपयोगी हो सकता है। हिंदी का प्रभाव सोशल मीडिया पर बिल्कुल वैसे ही है जैसे हमारे देश और हमारी संस्कृति का प्रभाव हमारे चरित्र पर है। भारत के परिप्रेक्ष्य में हिंदी को सोशल मीडिया से पृथक नहीं किया जा सकता और इसी के उपयोग से सोशल मीडिया अधिक प्रभावशाली तौर पर अपना स्थान बनाए रख सकता है।

अमृत साल

धर्मेश रावल,
सहायक प्रबंधक

बहुत हो चुका अपमान हमारा,
अब भारत का अमृत साल आया है।
विश्व फलक पर हमने नाम कमाया है।।

विश्व ने नतमस्तक हो, हमसे हाथ मिलाया है,
अब भारत का अमृत साल आया है।
भारत चिड़िया ने फिर से सोन पंख लगाया है।।

राजपथ को भी कर्त्तव्य पथ बनाया है,
हमने विश्व में तिरंगा लहराया है।
अब भारत का अमृत साल आया है।।

अपने साथ अनेक संभावना लाया है,
योग के सहयोग से हमने जग में बुद्ध जगाया है।
पूरे विश्व को एक कुटुंब बनाया है।।

जलवायु को समझा हमने, अंतरिक्ष को भी खोजा है,
सत्य, अहिंसा और धर्म को अपना हथियार बनाया है।
अब भारत का अमृत साल आया है।।

न्याय, समता, और स्वतंत्रता सबका साथ निभाएगी,
हमारी भारत माता अमृत धारा बन जाएगी,
अब भारत का अमृत साल आया है।
अब भारत का अमृत साल आया है।।

नई शिक्षा नीति

शिल्पा नागरे,
कार्यकारी

'शिक्षा से ही होगा सबका निर्माण,
आने वाला समय ही देगा इसका प्रमाण।'

करीब 34 वर्षों के बाद भारत में नई शिक्षा नीति 2020 को लागू किया गया है। इस शिक्षा नीति को लागू करने का प्रयत्न तो 1986 से ही चला आ रहा था, और बुद्धिजीवियों की माने तो यह नीति काफी लंबे अंतराल के बाद लागू हो पाई है, पर कहते है ना कि देर आए दुरुस्त आए। आने वाले समय में यह देखना है कि इस नीति का प्रभाव विद्यार्थियों पर कितना अधिक दिखाई पड़ता है। कहावत है कि "बिना पढ़े नर पशु कहाए", अर्थात् बिना विद्या, ज्ञान के मनुष्य एक पशु के समान है। अब प्रश्न यह है कि शिक्षा क्या है? शिक्षा अर्थात् सीखने और सिखाने की क्रिया। जहाँ शिक्षक और विद्यार्थी एक साथ एक छत के नीचे बैठकर ज्ञान और जानकारियों का आदान-प्रदान करते हैं। वर्ष 1986 की शिक्षा नीति का उद्देश्य सिर्फ विद्यार्थियों को रट्टू तोता बनाना था, इसीलिए एक संपूर्ण एवं नवीन शिक्षा नीति की आवश्यकता महसूस की गई। नवीन शिक्षा नीति को समझने से पहले पुरानी शिक्षा नीतियों की कमी को थोड़ा समझना जरूरी है।

इससे पहले दो बार 1986 तथा 1992 में शिक्षा नीति लागू की गई थी। पुरानी शिक्षा नीति का मुख्य बिंदु विद्यार्थी की मार्कशीट में अंकों को बढ़ाना था, और सिर्फ उत्तीर्ण होने के नंबर को आगे बढ़ाना था। उस शिक्षा नीति में विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास की कोई चर्चा ही नहीं की गई थी। इस बात को ध्यान में रखकर ही नई शिक्षा नीति 2020 को लागू किया गया है। नई शिक्षा नीति की तरफ प्रयास 2015 से ही प्रारंभ कर दिए गए थे। सुब्रह्मण्यम समिति का गठन किया गया जिसका कार्य पुरानी शिक्षा नीतियों की कमियों का आकलन करके विवरण रिपोर्ट बनाकर प्रस्तुत करना था। यह रिपोर्ट 2017 में सरकार को सुपुर्द की गई। 2017 में दिए गए विवरण के आधार पर एक बार फिर मसौदा तैयार करने हेतु एक समिति गठित की गई। इस समिति का नाम था, कस्तूरी-रंजन समिति। इस समिति ने अपनी रिपोर्ट 2019 में सरकार को प्रस्तुत की। इस विवरण के आधार पर 29 जुलाई 2020 को नई शिक्षा नीति लागू की गई। नई शिक्षा नीति 2020 के मुख्य बिंदुओं पर चर्चा करना आवश्यक है, इससे यह भी स्पष्ट हो जाता है कि आखिर क्यों इस शिक्षा नीति को अभी तक की श्रेष्ठ शिक्षा नीति कहा जा रहा है।

- 5+3+3+4 नियम अर्थात 5 वर्ष में 3 साल नर्सरी के तथा पहली एवं दूसरी कक्षा को फ़ाउंडेशन कहा गया है।
- 3 अर्थात तीसरी, चौथी एवं पाँचवी कक्षा को प्रीपेरेटरी याने प्रारंभिक स्तर कहा गया है।
- 3 अर्थात मध्य स्तर जिसमें छठी, सातवीं एवं आठवीं कक्षा शामिल हैं।
- 4 अर्थात उच्च तथा उच्चतर कक्षा 9वीं, 10वीं, 11वीं और कक्षा 12वीं सम्मिलित किए गए हैं।
- कक्षा 11वीं और 12वीं में सेमेस्टर सिस्टम लाने का विचार किया गया है। इससे विद्यार्थी के ऊपर विषयों का बोझ थोड़ा कम किया जा सकेगा। 11वीं और 12वीं कक्षा के बच्चे अपनी रुचि के अनुसार विषयों का चयन कर उनका अध्ययन कर सकते हैं।
- भाषीय आधार पर शिक्षा को भी नई नीति में विशेष स्थान दिया गया है। अब से कक्षा पाँचवीं तक मातृभाषा में शिक्षा देना अनिवार्य कर दिया जाएगा। तथा कक्षा 8वीं तक विद्यार्थी अपनी मातृभाषा का अध्ययन कर सकता है। इसका परिणाम यह होगा कि मातृभाषा को राष्ट्रीय स्तर पर और अधिक स्थान और महत्त्व दिया जाएगा।
- नई शिक्षा नीति में मानसिक तथा शारीरिक शिक्षा दोनों को एक समान स्थान दिया गया है। वर्तमान समय में जहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार की बिमारियों ने मानव को घेर

रखा है, अतः यह आवश्यक हो गया है कि शारीरिक शिक्षा को भी उतना ही महत्त्व दिया जाए जितना कि मानसिक शिक्षा को दिया जाता है।

- एक और रोचक बात यह है कि व्यावसायिक शिक्षा को कक्षा 6 से सम्मिलित करने का विचार रखा गया है। इसका परिमाण यह है कि विद्यार्थी को वर्तमान समय में हो रहे परिवर्तनों तथा प्रतिस्पर्धाओं से जल्दी सामना हो जाएगा जो आगे के समय के लिए उन्हें तैयार करेगा।
- स्नातक शिक्षा में एक विशेष बदलाव किया जा रहा है, जिसे स्तर के आधार पर प्रमाणपत्र दिया जाने का प्रस्ताव रखा गया है। याने तीन या चार वर्षीय स्नातक शिक्षा को यदि विद्यार्थी एक में वर्ष छोड़ देगा तो प्रमाणपत्र, दो वर्ष में छोड़ने पर डिप्लोमा तथा 3 वर्ष पर संपूर्ण डिग्री पाने के योग्य होगा।

कहा जाता है कि "न अस्ति विद्या समं धनम्" अर्थात् विद्या के समान कोई धन नहीं है। यह बात सौ प्रतिशत सत्य है, अगर आपके पास ज्ञान और कौशल है तो आप आकाश की ऊँचाइयों को छू सकते हैं। इसी बात को ध्यान में रखकर वर्तमान की नई शिक्षा नीति को लागू किया गया है। वर्तमान शिक्षा नीति का प्रयास यह है कि जो सकल कौशल विकास नामांकन का लक्ष्य 2018 में 20 प्रतिशत था उसे 50 प्रतिशत करना है। कहते हैं ना कि आने वाली पीढ़ियाँ देश के भविष्य का निर्माण करती हैं। इसी बात को ध्यान में रखकर शिक्षा नीति 2020 को निर्मित किया गया है। इस नीति का उद्देश्य व्यक्ति का संपूर्ण सर्वांगीण विकास करना है। ताकि वह भविष्य में आने वाली हर प्रकार की चुनौतियों का सामना कर सके।

अच्छी शिक्षा को प्राप्त करने का महत्त्वपूर्ण जरिया शिक्षक या गुरू है। इसलिए नई शिक्षा नीति में शिक्षकों, और संस्थान में सुधार के नियमों का भी उल्लेख किया गया है। प्रशासनिक रूप से अनिवार्य कर दिया गया है कि शिक्षक के पास स्नातक की डिग्री एवं बी.एड. की उपाधि होना आवश्यक है। एनसीटीई में प्रतिवर्ष प्रशिक्षण तथा जाँच होना भी शिक्षा नीति की विशेषताओं में से एक है। अब अगर दोनों शिक्षा नीतियों को आमने-सामने रखकर उनकी समानताओं तथा अंतर पर विचार किया जाए तो यह स्पष्ट होगा कि वर्तमान शिक्षा नीति के उद्देश्य एकदम सटीक और वर्तमान समय के अनुकूल बनाए गए हैं। इस शिक्षा नीति का उद्देश्य एकदम उचित बैठता है जो आने वाले समय में विद्यार्थियों को अनेक प्रकार की परीक्षाओं के लिए तैयार करेगा। संस्कृत का एक श्लोक है –

विद्या ददाति विनयं, विनयाद् याति पात्रताम्।
पात्रत्वात धनप्राप्नोति, धनात् धर्मः ततः सुखम्।

यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि विद्या ही मनुष्य के जीवन को सफल बनाती है। और एक अच्छी शिक्षा नीति एक अच्छे विकास की ओर ले जाती है। शिक्षा नीति 2020 संपूर्ण, लचीली और बहुउद्देश्यीय है, जिसका उद्देश्य केवल मानसिक ही नहीं वरन् सर्वांगीण विकास है। इस तरह ही हमारा देश उन्नति की ओर अग्रसर होगा, क्योंकि देश का भविष्य उसके विद्यार्थियों से बनता है।

अशिक्षित को शिक्षा दो, अज्ञानी को ज्ञान,
इसी तरह तो बन पाएगा, हमारा देश महान।

ऐसा सच

सुश्री प्रतिमा भारती,
पूर्वछात्रा पीजीपी-एफएबीएम

लोग कहते हैं...
यह सच है कि खुदा है, यह सच है कि बंदगी है।
यह सच है कि मौत है, यह सच है कि ज़िंदगी है।
यह सच है कि प्यार है, यह सच है कि तकरार है।
यह सच है कि रास्ते हैं, यह सच है कि मंज़िल है।
यह सच है कि दौलत है, यह सच है कि शौहरत है।
यह सच है कि दुःख है, यह सच है कि सुख है।
यह सच है कि आग है, यह सच है कि पानी है।
यह सच है कि मैं हूँ, यह सच है कि तुम हो।
पर किसी ने यह नहीं कहा...

यह सच कब आता है, कब जाता है।
किसके पास रूकता है, किसके पास आकर चला जाता है।
इस सच को ढूँढ़ने, कितने अरसों से निकली हूँ,
गाँव-गाँव, शहर-शहर भटकी हूँ।
कभी गिरी, कभी संभली, फिर खड़े हों चल पड़ी हूँ।
पर यह सच क्या है, क्या हकीकत है,
क्यों है... कैसा है... कहाँ है...
अभी तक यह ढूँढ़ नहीं पाई हूँ।

धरा की देह

मृदुल जोशी
पति, बिन्दु डोडिया

काम्या की शादी अनिमेष से हुई और वे दोनों बहुत खुश थे, प्रेम विवाह था और घर वालों की मर्जी भी थी इसमें। सम्पूर्ण संसार एक रंगमय स्वप्न-सा हो गया था। पति का रूमानी स्वभाव, हर पल उसके मन में कई आह्लादित स्फुरण दे जाता था। वैवाहिक जीवन के रोमांचित क्षण और उनसे उपजे आनंद के उत्तुंग शिखर पर अवस्थित होकर काम्या खुद को ब्रह्मांड की सबसे भाग्यवान स्त्री मान चुकी थी। सुबह उठने से लेकर ऑफिस जाने तक, अनिमेष उसको रूमानियत से सताता ही रहता था और फिर आखिर में अनिमेष को काम पर भेज कर घर को सजाने-सँवारने में खुद को व्यस्त कर लेती। शाम ढलते ही मन ही मन सकुचाने, लजाने लगती और अनिमेष के घर पहुँचने के कुछ पल पहले से ही वह हमेशा एक प्याला काफी का तैयार रखती कि कब अनिमेष आये और वह उसके थके-हारे शरीर और मन को पुनः तरो-ताज़ा कर दे। शाम को अनिमेष उसे आने से पहले मोबाइल पर सन्देश जरूर देता था और वह सन्देश पाकर चहक जाती और बेसब्री से उसका इंतजार करती। दोनों फिर कभी दूर घूमने निकल जाते और लौटने में खाना या तो बाहर ही खा लेते या फिर घर पर आकर बनाते और खाते।

काम्या कभी-कभी अनिमेष को एक संकेत में पूछ लेती थी कि संतान के बारे में उसकी क्या इच्छा है। अनिमेष ने कभी उसे नकारात्मक उत्तर नहीं दिया, अपितु वह अधिक उत्साह से उसको, मातृत्व से होने वाली ख़ुशी के लिए, प्रेरक माहौल में ले आता। तीन साल से भी अधिक समय और कोई सकारात्मक संकेत न मिलने पर काम्या को अपनी गोद भराई की उम्मीद में कुछ शंका होने लगी थी। परेशान-सी होकर वह अनिमेष से कभी कभार मन मुटाव भी कर लेती, पर अनिमेष के प्रेमपूर्ण व्यवहार के आगे वह उसे ज्यादा देर तक रख नहीं पाती थी। कुछ क्षण में वह फिर उससे प्रेममयी काम्या बन कर बातें करने लगती। किन्तु, रिश्तेदारों, सहेलियों और आस-पास के लोगों के द्वारा प्रेक्षित, संतान से सम्बंधित प्रश्न उसे कचोटते थे। कई बार तो वह खुद को इन सब प्रपंच से बचा लेती थी, लेकिन हर समय यह संभव नहीं हो पाता था। कभी वह कह देती कि, "अभी इनका ऐसा कोई विचार नहीं हैं"। कई बार वह कहती, "बस इस महीने से तैयारी शुरू कर दी है बच्चे के लिए, देखो भगवान की मर्जी हुई तो एक-दो महीने में गोद भराई की खुश खबर मिल जाए"। ऐसे बहाने देते-देते दो साल और गुजार लिए। एक दिन उससे रहा न गया वह बोल उठी, "अनिमेष, अब मुझसे, लोगों के ताने सहन नहीं होते हैं, मन कचोट उठता है। सुनो न, हम एक बच्चा कर लेते हैं, सबको ख़ुशी मिल जायेगी, घर में एक मेहमान भी आएगा और यह तो सामाजिक और प्रकृति का नियम है।" अनिमेष बोला, "ठीक है, इस महीने से तैयारी करते हैं और हो सकता है कि अगले महीने ही तुम्हारे पाँव भारी हो जाएँ।"

लगभग तीन से चार महीने बीत गए, किन्तु परिणाम अपने नकारात्मक व्यवहार में कोई कमी नहीं रख रहा था। तो काम्या बोली, "चलो एक काम करते हैं, जाँच करवा लेते हैं और कोई दिक्कत हुई तो फिर वैसा निर्णय लेंगे।" अनिमेष पहले थोड़ा हिचका फिर बोला "चलो ठीक है, करा लेते हैं।" काम्या के मन में एक शंका-सी उत्पन्न हो गयी। पर मन ही मन वह भगवान से प्रार्थना भी कर रही थी कि उसकी शंका निर्मूल प्रतिष्ठित हो जाए। दोनों ने अनिमेष की दोस्त, डॉ. सुवेशी के यहाँ जाँच कराई और चिकित्सकीय प्रतिवेदन की प्रतीक्षा में रत हो गए। तीन दिन बाद डॉ. सुवेशी ने फोन किया और कहा, "अनिमेष, तुम दोनों मेरे क्लिनिक आओ, प्रतिवेदन में मामला कुछ गंभीर है। तुम दोनों से, कुछ सलाह करनी है और दोनों को कुछ प्रेरणा देनी है।" आखरी के शब्दों ने अनिमेष को सोच की गहाराईयों में धकेल दिया और वह चिकित्सालय पहुँचने से पहले डॉ. सुवेशी से एक लम्बी बात कर चुका था। घर पहुँच कर काम्या के सामने वह

चेहरे की घबराहट छुपा नहीं पाया और कह उठा कि "जाँच प्रतिवेदन के लिए सुवेशी ने क्लिनिक पर बुलाया है।" काम्या ने घबराहट को भांपते हुए कई बार पूछा "आखिर क्या हुआ है, अनिमेष, इतने घबराए हुए क्यूँ हो।" पर अनिमेष हर बार घबरा जाता लेकिन इतना ही बोल पाता "सब ठीक है, सुवेशी से मिल लेते हैं फिर सब ठीक हो जाएगा।"

जब काम्या चिकित्सालय से बाहर निकली तो, उसे उसकी दुनिया अब फीकी-फीकी नजर आने लगी थी, रंग सब बेतरतीब से हो बहकर एक बड़े काले दाग जैसी कालिख बन के पानी की धारा में बहने लगे थे। बस चारों ओर से अनदेखे सवाल गूँज रहे थे, "काम्या तुम माँ कैसे बनोगी, कैसे तुम्हारी गोद भरेगी, कैसे तुम खुद को मातृत्व के सुख से संजो पाओगी, काम्या कहाँ गए तुम्हारे वो सब बहाने, अरे तुम तो कहती थी कि इनकी इच्छा नहीं है, पर अब क्या हुआ ..।" मन कई झंझावातों से एक साथ अकेले ही लड़ रहा था। इतना सब सोच-सोच कर काम्या का मष्तिष्क अपनी ऊर्जा को स्वयं के विरुद्ध ही लगा रहा था, चलते-चलते वह गिरने-सी हुई और उसे गिरने से अनिमेष ने संभाला तो एक पल को अनिमेष का छूना, उसे ऐसे लगा मानो कि तिनका एक वृक्ष को कह रहा हो आओ तुम्हें सहारा दूँ कि कहीं तुम गिर न जाओ। जिस अनिमेष को वह अपना राजकुमार समझती थी अब वह उसके लिए एक मामूली आदमी बन गया था, वह जो कभी पिता नहीं बन सकता था। क्योंकि चिकित्सक ने कहा था कि रिपोर्ट के हिसाब से अनिमेष में संतान उत्पत्ति करके के लायक गुण ही नहीं है, वह निर्वीर्य है। काम्या का संसार मानो किसी ज्वालामुखी की गर्म राख में दबकर पुरातत्व की खोज का विषय-सा हो गया था। वह अबूझ-सी खड़ी थी और एक बेबस निरिहता में अनिमेष को देख रही थी। पति की महत्वपूर्ण शारीरिक कमी ने उसके समस्त सपनों का निस्सरण कर चित्त को झकझोर दिया था।

घर पहुँचकर काम्या अपने शयनकक्ष में जा कर निढाल-सी हो गयी और ना जाने क्यों वह अनिमेष से बात ही नहीं करना चाह रही थी या बात नहीं कर पा रही थी। किंचित वह ग्लानी में थी कि अनिमेष को ढाढस कैसे बंधाये या अपने सपनों के क्रूर वध का दुःख मनाये; वह इस दोहरे सदमे से उबर नहीं पा रही थी। अनिमेष चाह कर भी कुछ नहीं बोल पा रहा था, किंचित मन के गहनतम तल तक मौन था और उसे इस तमसपूर्ण मौन से बाहर आने का कोई सिरा नहीं मिल रहा था। कुछ महीने ऐसे ही बीत गए। घर और परिवार में सब में यह बात फ़ैल चुकी थी कि अनिमेष को संतान नहीं हो सकती। जब भी कोई रिश्तेदार मिलने आते तो वे काम्या के प्रति सहानुभूति रखते और अनिमेष के प्रति एक हेय जैसा भाव रहता। कुछ भले कहे जाने वाले रिश्तेदार थे, वे अनिमेष को विभिन्न चिकित्सीय प्रणाली जैसे दान किये शुक्राणु से बच्चे के जन्म की सलाह देते। लेकिन ना जाने क्यों अनिमेष सबको मना कर देता। वह कहता कि "मैं थोड़ा रूढ़िवादी हूँ इन सबके लिए तैयार नहीं"। समय अपने मौन को साधे बीत रहा था और कई बार इस बात को लेकर अनिमेष और काम्या में एक गर्म बहस भी हो जाती थी। काम्या अनिमेष को कह उठती कि कब तक वह आधुनिक नहीं बनेगा, लेकिन वह खुद ही शांत हो जाती यह सोचकर कि वह क्यों एक नामर्द से लड़ रही है।

एक दिन अनिमेष ने कहा, "काम्या, देखो हम ऐसे तो ज़िंदगी नहीं गुजार सकते तो क्यों न किसी नए जन्मे बच्चे को गोद ले लें ताकि तुम्हारा मन भी लगा रहेगा और हमारे घर में संतान की कमी भी दूर हो जायेगी।" लेकिन पता नहीं क्यों काम्या इस बात पर भड़क गयी और उस दिन खूब बहस हुई, और इस कलह से परेशान काम्या दोपहर में घर छोड़ कर अनिमेष की दोस्त सुवेशी के घर चली गयी। अनिमेष भी घबरा गया, आखिर मैंने ऐसा क्यों कहा, कहीं वह कुछ कर नहीं ले, कहाँ गयी होगी। पर इधर सुवेशी का फोन आया तो कुछ राहत हुई कि काम्या उसके यहाँ है। पर उस राहत के बदले एक नयी चिंता की लकीर और उभर आई। पर फिर वह निश्चिंत-सा हो गया, जैसे उसे जिस विचार की शंका है, वह इस माहौल में संभव नहीं। दूसरे दिन सुबह सुवेशी, काम्या को घर साथ लेकर आई। सुवेशी ने दोनों को समझाया और फिर कहा कि, "फिर से ऐसा झगड़ा करना हो तो पहले बता देना ताकि घर की चाबी गार्ड को दे जाऊँ। वह तो कल बाहर जाना था पर निकल नहीं पायी थी क्योंकि शाम्भव सुबह ही मीटिंग में गए थे और दोपहर में आने को कह गए थे, लेकिन आने में देरी कर गए और मेरी यात्रा की योजना में देरी हो गयी और मैं घर पर मिल गयी। और अगर में निकल जाती तो फिर क्या होता"

अनिमेष काम्या को मजाक में ताने देते हुए बोला "होता क्या, लौट के बुद्धू घर को आये वाली बात होती।"

सुवेशी ने अनिमेष को देखा और कहा, "अनिमेष, ये फिर से बच्चों जैसी हरकत !"

अनिमेष ने इशारों में कान पकड़ लिए और मुँह पर उंगली रख कर चुप्पी साध ली।

सुवेशी बोली, "मुझे अभी टूर के लिए निकलना है। मुंबई में शोध पत्र पढना है। अच्छा आकर फिर मिलती हूँ और दोनों से आशा करती हूँ कि तब तक विश्व की महाशक्तियों में युद्ध विराम रहेगा।" सबके चेहरे पर एक हल्की-सी मुस्कान छा आई। सुवेशी को अनिमेष बाहर तक छोड़ने आया और पूछ लिया, "विश्वास तो कायम है ना।"

अनिमेष ने कहा, "हाँ, कायम है।"

हाँ सुन कर अनिमेष के मन की चिंता की तरंगे एक-एक करके विलीन होने लगी और मन की तरलता जो तप्त होकर और वाष्पित-सी हो चली थी, अब वापस गहरी और गाढ़ी होने लगी थी। काम्या शयनकक्ष में थी और अनिमेष भी अन्दर आ गया। सब तरफ एक गहन सन्नाटा था। दोनों तरफ से एक विचार था कि पहल कौन करे। पर काम्या के मन में एक कचोट रह गयी थी, कि शायद उसे घर नहीं छोड़कर जाना था। और जैसे ही वह बोलने को हुई कि उसे हिचकी-सी आ गई और गले में ठसका लग गया मानो कुछ अटक गया हो जो निकल नहीं पा रहा था। वह उस ठसके के कारण खाँसने लगी, अनिमेष दौड़कर पानी लेकर आया और बोला, "यह लो पी लो।" और वह उसकी पीठ पर होले-होले से हाथ फिराने लगा और बीच-बीच में थपकी देने लगा ताकि उसे राहत लगे। काम्या की खाँसी बंद हो चुकी थी और वह अनिमेष की तरफ मुड़कर बोली, "जब इतनी परवाह है तो लड़ते क्यों हो?" अनिमेष से रहा नहीं गया और उसने काम्या को गले लगा लिया। काम्या भी उसके बलिष्ठ कंधों पर झूल गई मानो कई जन्म से अमर-लता अपने पीपल की प्रतीक्षा में व्याकुल थी। आज उस व्याकुलता की तप्त धरा पर, मिलन की तेज बारिश दो विरही मन को मिलाकर एक सौंधी खुशबू को प्रस्फुटित कर रही थी। अनिमेष की आँखों में अश्रु की अविरल धारा ने काम्या की पीठ पर कुर्ते को गीला कर दिया था और यहाँ अनिमेष की छाती भीग गयी थी। वे देर तक आलिंगनबद्ध थे और फिर स्वयं में लौटते समय वे एक-दूसरे के समक्ष पूर्ण और पवित्र होकर शांत और प्रसन्न थे।

अनिमेष ने उसे बताया, "काम्या, अगर तुम सुनना चाहो तो दो बातें करनी थी तुमसे।"

काम्या बोली, "कहो"। अनिमेष बोला, "पहली तो यह जो मुझे कहना अच्छा नहीं लग रहा है, लेकिन तुम चाहो या... तुम्हारे मन में ऐसी कोई इच्छा हो... या तुम्हें सही लगता है... तो मुझसे विलग हो जाओ और किसी अन्य के साथ अपना मातृत्व सुख प्राप्त कर सकती हो।"

काम्या ने एक स्तब्ध करने वाली शांत दृष्टि से अनिमेष को देखा और बोली, "तो तुम्हें तलाक चाहिए, यूँ बोल दो...।" अनिमेष थोड़ा हिचककर बोला, "हाँ... ऐसा ही कुछ... जो तुम्हें कम से कम ज़िंदा तो रखे और खुश रखे...।"

काम्या का पारा सातवें आसमान पर था और वह अनिमेष पर बिफर पड़ी, "तलाक, वह भी तुमसे... समझ क्या रखा है तुमने... एक इच्छा तो पूरी नहीं कर पाए हो... कम से कम मेरे प्रेम को तो जिन्दा रहने दो... इसी के सहारे जी लूँगी, प्रेम किया है मैंने... कोई सौदा नहीं।" वह उसकी बाँहों में ही पलट कर उसकी आँखों में देखते हुए बोली, "अनिमेष, तुम जानते हो, मैंने ज़िंदगी में बहुत सपने देखे हैं। यह सच है कि उन सपनों में तुम मेरे मन में बहुत गहराई तक बसे हो, तुम्हें छोड़ने का तो सोच भी नहीं सकती और अब अगर तुम्हें छोड़कर गई तो समाज मेरे प्रेम पर हँसेगा और मुझ पर हँसेगा और मेरा मन टूट जाएगा जिसके लिए मैं तैयार नहीं हूँ। और मुझे मेरी जग-हँसाई मंजूर नहीं। तुम पहले कह रहे थे न एकबार कि बच्चा गोद ले लेते हैं, मैं तैयार हूँ।" यह कह कर अनिमेष की बाँहों से निकल वह खुद को व्यवस्थित करने में लग गई।

अनिमेष ने खुद को संभालते हुए बोला, "ठीक है, जब तुम चाहो और जैसा तुम चाहो।"

काम्या बोली, "मैं दो बच्चे गोद लूँगी एक लड़का एक लड़की। लेकिन ध्यान रखना कि मैं तुम्हें तुम्हारी शुक्राणु दान ना लेने वाली दकियानूसी सोच के लिए कभी माफ़ नहीं करूंगी।"

कुछ समय बाद दोनों ने दो बच्चे गोद ले लिये। समय बितता गया। काम्या भी अब अनिमेष को उस विषय की याद नहीं दिलाती थी ना ही उस विषय को लेकर कोई बात करती थी। समय के पंख लगे थे। वह उड़ता रहा और वे दोनों बच्चों की परवरिश में गुम हो गए थे। अनिमेष कुछ साल नौकरी में लगा रहा फिर उसने अपना व्यापार चालू किया। काम्या भी घर संभालते-संभालते कब एक अच्छी लेखिका बन गई पता ही नहीं चला। काफी सालों बाद जब अनिमेष व्यापार का बहुत कुछ भाग बच्चों के हाथों सौंप चुका था और अब वह व्यापार पर कम ही ध्यान देता था और इस बीच काम्या

का सातवाँ उपन्यास "धरा की देह" छपकर बाजार में आ चुका था और वह अब बहुत ही ज्यादा प्रसिद्ध हो रहा था। इस उपन्यास के लिए कई संस्थाओं ने काम्या को सम्मानित करने का फैसला किया था।

एक दिन यूँ ही दोपहर को बागान में बैठे हुए अनिमेष ने काम्या से कहा कि, "काम्या, देखो हमारी विरागी कि उम्र शादी की हो गयी और एक-दो साल में शादी कर देना है। अरे हाँ, सोचता हूँ कि शशांक की शादी अगले साल कर देंगे, फिर सब मुक्त।" थोड़ा रुककर बोला, "तुमने मेरा बहुत ख़याल रखा, बहुत प्रेम दिया और बड़ी बात यही करी कि तुम मुझे मेरी कमी के बावजूद छोड़कर नहीं गयी। मैं सोचता हूँ कि, मैं कैसे इतना भाग्यशाली हो गया समझ ही नहीं आया। शायद कोई पुण्य होगा मेरा।"

काम्या बोली, "पुण्य तुम्हारा! गलत बात... मेरा पुण्य है कि तुम मुझे मिले... तुम तो आज भी पुण्यवान नहीं हो।" अनिमेष बोला, "तुम्हारा लड़ना गया नहीं पुराना वाला।"

काम्या बोली, "कैसे छोड़ दूँ लड़ना उस आदमी से जो मेरे लिए लड़ता है रोज, खुद से, समाज से, मन से और भगवान से भी। अरे, उसको इतनी लड़ाई लड़ने के लिए कुछ तो रोज का अभ्यास देना होगा न।"

अनिमेष कुछ अन्दर से सकुचाया, लेकिन संभल कर फिर बोला, "तुम्हारा मतलब में समझा नहीं।"

काम्या बोली, "अरे बुद्धू! अगर तुम मुझे खुश रखने के लिए इतना कष्ट झेलते हो, व्यापार करते हो, मेरे लिए कमाई करते हो ताकि मैं गहने खरीद सकूँ, ग्राहकों से झिक-झिक करते हो, लड़ते हो तो तुम्हें लड़ने का अभ्यास तो देना होगा न।" और यह कह कर वह खिलखिला कर हँस दी।

अनिमेष के चेहरे की हवाइयाँ उड़ रही थी जैसे उसका कोई राज़ बाहर निकलकर उसके सामने हँस रहा हो, लेकिन परेशान नहीं हुआ।

काम्या फिर बोली, "अनिमेष, तुम अगर पुण्यवान होते तो मैं तुम्हें नहीं मिलती, कोई परी या हूर मिलती। कहाँ मैं सुंदर-सी कहाँ वह अत्यधिक सुंदर परी।" फिर वह खिलखिला दी।

अनिमेष संभल कर बोला, "आज तुम बहुत हँस रही हो क्या बात है, कोई खुशखबरी है?"

काम्या बोली, "हाँ, पत्र आया है 'धरा की देह' को "शब्द-यज्ञ" जैसा प्रतिष्ठित पुरस्कार देने की घोषणा हुई है।" और अनिमेष उठने को था आराम कुर्सी से तभी काम्या हाथ के इशारे करते हुए बोली, "बैठे रहो, अभी नौकर और बेटा हैं घर पर, गले बाद में लगा लेना।" अनिमेष अक्सर काम्या की ख़ुशी पर खुद को बहुत मुश्किल से रोक पाता था और यही कारण भी था कि काम्या उसे कई बार उसकी पहल को बीच में ही रोक देती थी।

उस दिन सभागार लगभग पूरा भरा था। काम्या के लिए यह बड़ा दिन था। वह खुश थी और सुंदर भी लग रही थी। अनिमेष बार-बार काम्या को देख रहा था। लगभग शहर के और मुख्य अखबार के प्रतिनिधि पत्रकार, टीवी चैनल और अन्य सभी लोग मौजूद थे और काम्या का सम्मान होना था। पर सम्मान से पहले सुबह एक छोटी-सी पत्रकार वार्ता रखी गयी थी उस उपन्यास के लिए। और समारोह पत्रकार वार्ता के बाद ही शुरू होना था। पत्रकार अपने-अपने प्रश्न पूछ रहे थे और काम्या सबका जवाब दे रही थी।

एक पत्रकार ने पूछा, "काम्या जी, आप कहती हैं कि आपके उपन्यास आपके आसपास के जीवन की सच्चाई को बयान करते हैं।" काम्या बोली, "जी हाँ, यह सच है।"

उसी पत्रकार ने कहा, "आप अपने उपन्यास में कहती है कि जीवन में हर स्त्री को पुरुष मिल सकता है और सच्चा पुरुष वही है जो स्त्री को स्त्री बना दे, और स्त्री होने का एक अर्थ मातृत्व सुख भी.. लेकिन आपके जीवन में ऐसा कुछ तो हो नहीं पाया। माफ़ कीजियेगा पर हमारे सूत्र कहते हैं कि आपके पति में आपको मातृत्व सुख देने के गुण ही नहीं हैं तब ऐसे में आप पुरुष की विवेचना इतनी प्रखरता से कैसे कर सकती हैं? क्या मुझे ऐसा मानना चाहिए कि आपने किसी अन्य का सहारा लिया ताकि आपके उपन्यास के पुरुष की विवेचना सिद्ध हो पाए?" सवाल बहुत तीखे थे। शायद पत्रकार किसी पूर्वाग्रह के तहत और कोई सनसनी खेज खबर के लिए ऐसा कर गया पर वहाँ मौजूद सभी लोगों को समान रूप में बुरा और अच्छा लगा। खबर थी इसलिए कोई घोर आपत्ति नहीं हुई और अभिव्यक्ति का एक कटु भाव सबके चेहरे पर लहरा गया था। इधर यह सवाल सुन कर काम्या का चेहरा क्रोधमयता की घोर लालिमा में तप्त हो चला था, क्योंकि वह उसके चरित्र पर एक आक्षेप था। और अपनी सम्पूर्ण शक्ति को समेटकर अपने चक्षुओं में प्लावित

रक्तधारा को और प्रबल कर वह पत्रकार से बोली, "सम्मान समारोह के बाद बाहर नज़रे मिलाकर दिखा देना तुम्हारी मर्दानगी मान लूँगी।"

और उससे पहले काम्या से कोई सवाल पूछता वह उठकर चली गयी। सबको एक सनसनी-सी खबर का पान मिल चुका था, दिन भर की उत्तेजना को और सारे टीवी चैनलों में यही खबर प्रसारित होने लगी कि एक लेखिका ने आपा खोया। धमकी दी पत्रकार को कि नज़रे मिलाकर दिखा देना समारोह के बाद। समारोह शुरू हुआ और काम्या का सम्मान किया गया और फिर समारोह के संचालक ने कहा, "आज सुबह से बहुत उग्र तेवर है हमारी लेखिका के तो हमें कुछ डरकर कहना है कि दो शब्द हमारे श्रोताओं के लिए पर शांति से।" सभी मुस्कुरा दिए, काम्या भी मुस्कुरा दी और वह मंच पर आई। काम्या बोलने लगी "संचालक महोदय को और सभी को मुझसे डरने की जरुरत नहीं, कमरे वातानुकूलित हैं इसलिए दिमाग भी ठंडा है, अतः अब शांत मन से बात करूँगी।" वह फिर संचालक की ओर मुड़ी और उन्हें इशारे से पास बुलाया और कहा कि वह पत्रकार महोदय भी हैं ना जो सुबह मेरे क्रोध को भडका गए थे। संचालक बोला, "हाँ, पर आप चिंता ना करें वह अब प्रश्न नहीं करेंगे।" काम्या बोली, " उसकी जरुरत नहीं होगी, बस उनका यहाँ रहना बहुत जरूरी है।"

काम्या बोली, "धरा की देह एक ऐसी स्त्री की कहानी है जिसमें एक पुरुष अपने पौरुष को दांव पर लगाकर, स्त्री के सर्वोत्तम सुख को सुरक्षित रखता है। वह खुद को पुरुष कहलाना पसंद करता है ताकि जिस स्त्री से वह प्रेम करता है, वह स्त्रीत्व के परम पद पर सुशोभित रहे। हाँ, पत्रकार महोदय को जानना था कि मेरे जीवन में मेरे पति के अलावा भी कोई पुरुष था जिसका उदाहरण लेकर मैंने यह उपन्यास लिखा है, तो मैं कहूँगी, ना। क्योंकि मेरे पति ही वह पुरुष हैं, जो अपने पौरुष को दांव पर लगाकर मेरे स्त्रीत्व को समस्त समाज में और यहाँ तक कि मेरे सामने भी सुरक्षित रखे हुए थे। आप लोगों के सामने मैं यह बहुत पुराना भेद खोलने जा रही हूँ। वह भेद यह है कि जैसे कि सारा समाज मेरे पति के बारे में यह जानता है कि वे पिता बनने के काबिल नहीं हैं, जो गलत है। वे एक पूर्ण स्वस्थ पुरुष हैं और वे किसी भी स्त्री के साथ संसर्ग करके पिता बन सकते हैं। पर मुझ में यह कमी थी कि मैं स्वयं ही मातृत्व का सुख पाने में असमर्थ थी ना ही उन्हें पिता बनने का सुख दे पा रही थी। जब यह बात मेरे पति को एक चिकित्सकीय रिपोर्ट के माध्यम से पता चली तो उन्होंने उस रिपोर्ट को बदल कर मेरी "माँ बनने में सक्षम" की रिपोर्ट बनवाई और खुद में "पिता होने मे अक्षम" की एक रिपोर्ट बनवाई, जबकि वे पूर्ण स्वस्थ पुरुष हैं। यह इसलिए कि मैं खुद को कभी दोष न दे पाऊँ और आजीवन ये मेरे दोष को झेलते रहे। मेरे जीवन में तो ये ही एक पुरुष हैं और कतिपय मेरे लिए विश्व में ये ही एक मात्र पुरुष हैं जिसने मेरे मातृत्व को बनाये रखने के लिए स्वयं को खो दिया। अब मैं समझती हूँ कि पत्रकार महोदय को अपना उत्तर मिल चुका होगा। मेरे लिए यह पुरस्कार एक सामाजिक सम्मान है पर यह उस सम्मान और प्रेम के आगे कुछ नहीं जो मेरे पति ने मुझे सारे जीवन देने का बीड़ा उठाया था। बस इतना ही कहना चाहूँगी।"

सारा हॉल तालियों से गूँज रहा था और सभी अनिमेष की ओर देख रहे थे और अब खबरों में शायद एक अलग ही स्वाद था जो अनिमेष के त्याग को सर्वोच्च बता रहा था। और अनिमेष आज भी वैसा ही शांत था और उसी प्रेम के उच्चतम शिखर पर काम्या के साथ था।

खीर

नवनाथ पवार,
सहायक
पुस्तकालयाध्यक्ष

तुम जब खाना बनाती हो,
तब उसकी महक से भर जाता है सारा घर।
क्या बन रहा है आज स्पेशल?
पूछती हैं पड़ौसन मिसराइन।

मैं थका हुआ आता हूँ ऑफ़िस से,
रेडियो पर हवामहल चलता रहता है।
खाने के समय सुन लेती हो मेरी दिनभर की बोरिंग बातें,
रूस-यूक्रेन युद्ध और पेट्रोल-डीज़ल की कीमतों पर टिप्पणियाँ,
अंत में पूछती हो आज का खाना कैसा था?
तब कहीं याद आता है, आज खीर बनाई थी।
उंगलियाँ चाटते हुए मैं खीर की प्रशंसा करने लगता हूँ
तब तुम कुछ समझकर हँस देती हो,
और खीर की मिठास धीरे-धीरे घर में घुलने लगती है।

इसी का नाम ही ज़िंदगी है

हरीश वाघेला,
कार्यकारी

हालाँकि यह घटना आज से दस साल पहले की है, पर आज भी मेरे दिमाग में ज्यों की त्यों बनी हुई है। उन दिनों मैं एक बड़ी टेक्सटाइल कंपनी के भंडार विभाग में काम करता था। कंपनी बहुत बड़ी थी और काम भी काफी रहता था। सुबह से शाम तक का समय कब बीत जाता, यह पता ही नहीं चलता था। कंपनी में दिन और रात की शिफ़्टों में काम चलता था। इसी कारण रखरखाव का काम काफी ज्यादा रहता था।

पूरा दिन भंडार में सामान लेकर आने वालों तांता लगा रहता था। इसमें हफ़्ते में दो बार आने वाले एक रवजीकाका मुझे हमेशा के लिए याद रह गए। उनसे मेरी पहली मुलाकात हुई तबकी बात है। हमेशा खुशहाल चेहरा, कद में लंबे, थोड़े-से मोटे, माथे पर कम बाल और मेहनत के काम से जुड़े हुए होने के कारण कपड़े थोड़े धूमिल मैले रहते थे। जब भी हमारे ऑफिस में आते तब सब की टेबल पर रूबरू पहुँचकर 'जय रणछोड़' बोलकर अभिवादन करते थे। सारे कर्मचारी भी उनको 'जय रणछोड़' बोलकर स्वागत करते और उनका हाल-चाल पूछते थे। रवजीकाका आईशर (मिनी ट्रक) चलाते थे। वे कंपनी के रबर के रोल रिपेयरिंग करने के लिए ले जाते थे। तीन-चार दिनों में रोल वापस दे जाते थे। सप्ताह में दो या तीन दिन इनका या उनके लड़के राजू का आना होता था।

रवजीकाका की उम्र 60 वर्ष के करीब थी। पर उनका काम के प्रति उत्साह और लगन जबरदस्त थी। गले में तुलसी की माला पहनते थे। उन्हें कंपनी में आते ही काम निपटाकर जाने की जल्दी रहती थी। बाहर जाने का गेट-पास बनवाने के लिए वे हमेशा उतावले रहते थे। कभी-कभी सब लोग पूछते थे कि, "इतनी भी क्या जल्दी होती है आपको रवजीकाका?" तो बताते थे, "साहब, अहमदाबाद भर के ट्रैफ़िक को लांघकर के आता हूँ, नरोडा जीआईडीसी जाना होता है। यहाँ से जाने में तीन-चार घंटे लग जाते हैं। और घर पर भी कितने काम होते हैं।"

वैसे तो रवजीकाका को पाँच-छह बार मिलना हुआ। हमेशा वे 'जय रणछोड़' बोलकर अभिवादन करते और मैं भी उन्हें जवाब में 'जय रणछोड़' बोलता था। इससे आगे ज्यादा बात नहीं होती थी।

एक सुबह वे मेरे पास गेटपास पर हस्ताक्षर करवाने के लिए आए। मैंने पूछा, "आज क्यों जल्दी आए? वैसे तो शाम को आते हैं..."

उन्होंने कहा, "साहब, कल पूनम है, और हर पूनम को मैं डाकोर जाता हूँ और वह भी चलकर।"

मैंने उनके सामने देखा और पूछा, "क्यों चलकर?"

रवजीकाका मुस्कुराए और बोले, "मैं तो सालों से चलकर जाता हूँ।"

मुझे थोड़ा आश्चर्य हुआ और आगे जानने की जिज्ञासा हुई। मैंने पूछा, "कितने दिन लगते हैं?"

रवजीकाका, "डेढ दिन लगते हैं, अहमदाबाद से डाकोर तक चलकर जाता हूँ। दस साल से नियमित रूप से चलकर जाता हूँ। कभी बीमार हुआ तब ही नहीं गया, वरना डाकोर के रणछोड़ जी के दर्शन तो पैदल जाकर अवश्य करता हूँ।" उनकी आवाज़ में भक्ति-भाव झलक रहा था।

मैंने पूछा - "आप अकेले जाते हैं?"

"हाँ, मैं सालों से अकेला ही जाता हूँ। अब तो रास्ते में पड़ने वाले गाँवों के लोग भी मुझे पहचानने लगे हैं। रात भी एक गाँव के मंदिर में गुजार लेता हूँ। सुबह वहाँ से आगे चल देता हूँ। आगे आने वाले गाँवों से मदद मिलती रहती है। और मैं पूरा आनंद लेता हूँ। डाकोर से रणछोड़ जी के

दर्शन करके बस में बैठकर अहमदाबाद वापस आता हूँ और वापिस आते ही फिर से काम में जुट जाता हूँ।

कल पूनम है। घर जाकर डाकोर जाने के लिए निकलूँगा। साहब, इस बार डाकोर जी का प्रसाद आपको जरूर खिलाउँगा।"

मैंने कहा, "जरूर। आप तो आईशर (मिनी ट्रक) चलाते हैं, इतना काम करने के बाद भी डाकोर चलकर जाते हैं। इस उम्र में थकान नहीं लगती क्या?"

रवजीकाका, "हाँ, साहब। थकान तो लगती है। पहले की तरह चल नहीं पाता हूँ। उम्र के साथ तेज़ी और उत्साह भी कम हुआ है। साठ साल पूरे होंगे अगले महीने में, पर जब तक इच्छा कायम है, तब तक चलकर जाऊँगा। जब नहीं चल पाऊँगा, तब देखेंगे जा पाऊँगा या नहीं।"

फिर थोड़ी गंभीर-सी मुद्रा से बोले, "साहब, घर में एक बेटा है, उसको संभालूँगा।"

मुझे उत्सुकता हुई कि हम उनके एक लड़के राजू को तो जानते हैं, पर यह दूसरा लड़का कौन है यह जानने के लिए पूछा तो वे पूरी तरह से उदास हो गए और बोले, "राजू से छोटा एक और लड़का है। महेश नाम है उसका। मैं तो ये दो वर्ष से ही आईशर (मिनी ट्रक) के फेर लगाता हूँ। इससे पहले महेश ही चलाता था यह गाड़ी। पर अब नहीं चलाएगा क्योंकि उसके दोनों पैर कट गए हैं।"

मैं अवाचक रह गया। उन्होंने हताश सुरों में आगे बताया, "बहुत होशियार था मेरा बेटा। बहुत पैसा कमाया उसने। आईशर (मिनी ट्रक) के फेरे करते-करते दो या तीन दिनों के बाद घर लौटता था। अभी 28 वर्ष का है। मेरा बड़ा सहारा था। पर दो साल पहले सौराष्ट्र से आईशर (मिनी ट्रक) लेकर रात को लौट रहा था तभी ट्रक से टकराकर दुर्घटना घटित हो गई। महेश को कई गंभीर चोटें आई थीं। इसका क्लीनर तो वहीं दुर्घटना स्थल पर मर चुका था। महेश भी मरते-मरते बचा। एक महीना अस्पताल में भर्ती रहा। उसके दोनों पैर कुचल चुके थे। इलाज के दौरान ही उसके दोनों पैरों को काटना पड़ा। साहब, वह समय जो हमने गुजारा है, भगवान किसी को भी ऐसे दिन ना दिखाए।" रवजीकाका दोनों हाथों को जोड़े हुए ऊपर की तरफ दुआएँ करने लगे। भगवान को स्मरण करने लगे। "तब महेश के रिश्ते की बातें चल रही थी। एक हादसा अचानक से होगा और सब चकनाचूर कर देगा ऐसा कभी सोचा भी नहीं था। कभी कल्पना भी नहीं की थी कि भगवान हमें ये दिन दिखाएगा। वरना मेरा महेश कभी मुझे इस उम्र में आईशर (मिनी ट्रक) नहीं चलाने देता।"

रवजीकाका बात करते-करते फफक पड़े। "साहब, नया घर लिया था। दो महीने बाद यह हादसा हो गया। महेश के ऑपरेशन का खर्चा दस लाख हो गया। यही तो बड़ी कमाई करता था वह भी बंद हो गई। इस मुश्किल हालात में मुझे आईशर (मिनी ट्रक) चलाने की ज़रूरत पड़ गई। शाम को काम से लौटकर घर पर महेश के साथ बैठकर दिनभर की बातें करता हूँ फिर हम सब मिलकर खाना खाकर सो जाते हैं।

वह अपाहिज है। दोनों पैरों को घुटने से काटना पड़ा।" बात करते-करते वे उसी माहौल में पहुँच गए फिर अचानक कुछ याद आ गया और बोले, "अरे मैं तो भूल ही गया कि आज मुझे डाकोर के लिए निकलना है। साहब, भगवान हमेशा जो करता है सही ही करता है। वही इस स्थिति से निकालेगा भी। अगले महीने में महेश के आर्टिफिशल पैर लगाने हैं। एक बड़े अस्पताल में कैंप होने वाला है। हमने इसका नाम उसमें दर्ज करवा दिया है। उसके बाद फिर इतनी समस्या नहीं रहेगी। जो छेटे-मोटे काम वह कर नहीं सकता वह खुद से करने लगेगा। भगवान जो भी करेगा, सब अच्छा ही करेगा। उसी ने तो महेश को बचाया वरना दुर्घटना देखकर लगता ही नहीं था कि कोई बचा होगा।" रवजीभाई मन ही मन ईश्वर का आभार मानते हुए प्रार्थना करने लगे।"

"चलिए साहब, जाता हूँ। जय रणछोड़।" मैंने बोला, "जय रणछोड़। गेटपास लेते जाइए, वरना निकलने नहीं देंगे गेट से बाहर।"

"हाँ जी, साहब। सही बात है।" फिर वे खिलखिलाकर हँसकर चल दिए। मैं उन्हें जाते हुए अपलक देखता रहा।

रवजीकाका काफी दुःखी हैं, फिर भी प्रभु ने जो दिया उसी में खुश हैं। ना कोई शिकवा ना कोई गम। बस अपनी मस्ती में मस्त। आज ज़िंदगी में इतनी परेशानियाँ होते हुए भी प्रभु के प्रति अपार श्रद्धा और विश्वास बनाए हुए हैं। जीवन की विषम परिस्थितियों में स्थितप्रज्ञ बने रहना बहुत मुश्किल काम है। जो यह समझ गया मानो जीवन का मर्म समझ गया।

रवजीकाका से मिलना मुझे बहुत कुछ सिखा गया। दुःख और सुख जीवन में आते-जाते रहते हैं। हमें उन्हें स्वीकार करके आगे बढ़ते रहना चाहिए। इसी का नाम ज़िंदगी है।

संस्थान की राजभाषा गतिविधियाँ

भारतीय प्रबंध संस्थान अहमदाबाद भारत सरकार के गृह मंत्रालय द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के अनुरूप राजभाषा नीतियों के कार्यान्वयन के लिए हमेशा प्रयासरत रहता है। संस्थान में अलग से हिंदी विभाग कार्यरत है जो संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के निर्देशन में राजभाषा हिन्दी को बढ़ावा देने के उद्देश्य से समय-समय पर विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित करता रहता है। संस्थान द्वारा वर्ष 2022 में आयोजित की गई राजभाषा गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण कुछ इस प्रकार से है :-

हिंदी पखवाड़े का आयोजन

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी संस्थान में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए हिंदी पखवाड़े का आयोजन 14 सितंबर से 28 सितंबर 2022 के दौरान किया गया। इस वर्ष हिंदी पखवाड़े के दौरान कुल आठ प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई। इन प्रतियोगिताओं में हिंदी कविता-पाठ (स्वरचित) प्रतियोगिता, ऑनलाइन हिंदी सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता, हिंदी निबंध प्रतियोगिता, हिंदी शब्द-ज्ञान प्रतियोगिता, हिंदी अंताक्षरी प्रतियोगिता, हिंदी आशुभाषण प्रतियोगिता, हिंदी सुलेख प्रतियोगिता एवं हिंदी गीत गायन प्रतियोगिता शामिल थीं। इनमें तीन प्रतियोगिताएँ हिंदीतर एवं हिंदीभाषी के लिए अलग-अलग आयोजित की गई थी। इन सभी प्रतियोगिताओं में संस्थान के सदस्यों ने काफी उत्साह से भाग लिया था। संस्थान के कुल 495 सदस्यों नें इन प्रतियोगिताओं में अपनी प्रतिभागिता दर्ज करायी थी। इस हिंदी पखवाड़े के दौरान ही 27 सितंबर 2022 को संस्थान के विक्रम साराभाई पुस्तकालय में हिंदी पुस्तकों की प्रदर्शनी भी लगाई गई। संस्थान के पुस्तकालय में विभिन्न विषयों पर हिंदी में उपलब्ध 2600 पुस्तकों के बारे में सभी सदस्यों को ऑनलाइन जानकारी प्रदान की गई जिससे हिंदी पुस्तकों में रुचि रखने वाले पाठक अपनी पसंद की हिंदी पुस्तकों का चयन आसानी से कर सकें।

28 सितंबर 2022 को हिंदी पखवाड़े के समापन समारोह में संस्थान के मुख्य प्रशासनिक अधिकारी कर्नल अमित वर्मा (सेवानिवृत्त) की उपस्थिति में सभी प्रतियोगिताओं के

विजयी प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र एवं पुरस्कार प्रदान करके समापन किया गया। विजयी प्रतिभागियों को हिंदी भाषी और गैर-हिंदी भाषी वर्ग में अलग-अलग पुरस्कार प्रदान किये गए। इस अवसर पर माननीय शिक्षा मंत्री एवं माननीय गृह मंत्री से प्राप्त संदेशों से सभी सदस्यों को अवगत कराया गया तथा इन संदेशों की प्रतियाँ सभी नोटिस बोर्डों पर भी प्रदर्शित की गई। समापन समारोह के अवसर पर संस्थान के मुख्य प्रशासनिक अधिकारी कर्नल अमित वर्मा (सेवानिवृत्त) ने भी सभी उपस्थित सदस्यों को अपने दैनिक कार्यकलापों में राजभाषा हिंदी को अधिक से अधिक प्रयोग में लाने के लिए प्रेरित किया। हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों के विवरण निम्न प्रकार से हैं :-

14 सितंबर 2022 – हिंदी कविता-पाठ (स्वरचित) प्रतियोगिता (हिंदीभाषी)

प्रथम

श्री तरुण कुमार वशिष्ठ

द्वितीय

सुश्री महिमा शर्मा

तृतीय

सुश्री श्रीया बजाज

प्रोत्साहन

श्री राहुल कुमार झा की तरफ से पुरस्कार ग्रहण

14 सितंबर 2022 – हिंदी कविता-पाठ (स्वरचित) प्रतियोगिता (हिंदीतर भाषी)

प्रथम

श्री भावेश पटेल

द्वितीय

श्री हरीश वाघेला

तृतीय

श्री निकुंज पटेल

प्रोत्साहन

श्री धर्मेश रावल

15 सितंबर 2022 – ऑनलाइन हिंदी सामान्य-ज्ञान प्रतियोगिता

प्रथम

श्री हर्ष के. पटेल

द्वितीय

सुश्री दिपाली वीरेंद्रसिंह चौहान की तरफ से पुरस्कार ग्रहण

तृतीय

सुश्री श्रेया शर्मा की तरफ से पुरस्कार ग्रहण

प्रोत्साहन

श्री लकी कौल

16 सितंबर 2022 – हिंदी शब्द-ज्ञान प्रतियोगिता (हिंदीभाषी)

प्रथम

श्री राहुल कुमार झा की तरफ से पुरस्कार ग्रहण

द्वितीय

सुश्री मोनिका अग्रवाल

तृतीय

सुश्री श्रीया बजाज

प्रोत्साहन

सुश्री शिल्पा नागरे

16 सितंबर 2022 – हिंदी शब्द-ज्ञान प्रतियोगिता (हिंदीतर भाषी)

प्रथम

श्री निरज दवे

द्वितीय

श्री निकुंज पटेल

तृतीय

सुश्री उमा एच. जानी

प्रोत्साहन

श्री जगदीश रबारी

19 सितंबर 2022 – हिंदी निबंध प्रतियोगिता (हिंदीभाषी)

प्रथम

श्री हरीश प्रेमी

द्वितीय

सुश्री मोनिका अग्रवाल

तृतीय

सुश्री शिल्पा नागरे

प्रोत्साहन

प्रोफेसर प्रशांत दास

19 सितंबर 2022 – हिंदी निबंध प्रतियोगिता (हिंदीतर भाषी)

प्रथम

सुश्री विजिता नायर की तरफ से पुरस्कार ग्रहण

द्वितीय

सुश्री निकिता देसाई

तृतीय

सुश्री उमा एच. जानी

प्रोत्साहन

श्री जगदीश रबारी

21 सितंबर 2022 – हिंदी आशुभाषण प्रतियोगिता

प्रथम

श्री हरीश प्रेमी

द्वितीय

सुश्री निष्ठा आनंद

तृतीय

सुश्री अक्षता अग्रवाल

प्रोत्साहन

श्री हिरेन भुवा

22 सितंबर 2022 –अंताक्षरी प्रतियोगिता

प्रथम

सुश्री स्नेहल जेठवा, सुश्री राधा शर्मा, सुश्री फोरम पंवार, श्री हिरेन शाह, सुश्री मोनिका पंचोली

द्वितीय

श्री अभिषेक मौर्य, श्री विकी मौर्य, सुश्री प्रियंका त्रिपाठी, सुश्री विधि कोटक, श्री रविराज चौहान

तृतीय

श्री धर्मेश रावल, सुश्री श्वेता पंचाल, सुश्री रिद्धी मजीठिया, सुश्री भूमि पटेल, सुश्री कृष्णा धामेचा

प्रोत्साहन

श्री हरेंद्रसिंह वाढेर, श्री भावेश पटेल, श्री हार्दिक पंचमटिया, श्री विरल सोलंकी, सुश्री ह्रिदम अग्रवाल

23 सितंबर 2022 – हिंदी सुलेख प्रतियोगिता

प्रथम

श्री विकी आर. मौर्य

द्वितीय

श्री रामकेवल साधु कोरी

तृतीय

श्री नीतिन आर. वाघेला

प्रोत्साहन

श्री विरल सोलंकी

26 सितंबर 2022 – हिंदी गीत गायन प्रतियोगिता

प्रथम

श्री राहुल जोशी

द्वितीय

सुश्री हेना नायर

तृतीय

श्री हरीश चोपड़ा

प्रोत्साहन

सुश्री मानसी देव

हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन

राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के अनुरूप सभी कर्मचारियों एवं अधिकारियों को हिंदी में काम करने के लिए प्रेरित करने और हिंदी में काम करने के प्रति उनकी झिझक को दूर करने के उद्देश्य से पिछले वर्ष संस्थान में तीन कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। पिछले वर्ष के दौरान संस्थान में कार्यशालाओं का आयोजन क्रमशः 08 मार्च 2022, 15 जून 2022, एवं 23 सितंबर 2022 को किया गया। दो कार्यशालाओं का आयोजन ऑनलाइन किया गया था। एक कार्यशाला भौतक रूप से आयोजित की गई थी। इन कार्यशालाओं में 88 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया था।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक

संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें समय-समय पर आयोजित की जाती रही हैं। पिछले वर्ष के दौरान प्रत्येक तिमाही के अनुरूप चार बैठकों का आयोजन किया गया। इन बैठकों में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार से संबंधित विभिन्न निर्णय लिए गए तथा इन निर्णयों के कार्यान्वयन की समीक्षा भी की गई। इन बैठकों के कार्यवृत्तों की प्रति शिक्षा मंत्रालय (राजभाषा विभाग) एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति को भेजी गई।

संस्थान के वार्षिक प्रतिवेदन का हिंदी अनुवाद

वित्त वर्ष 2021-22 के संस्थान के 60वें वार्षिक प्रतिवेदन का हिंदी में प्रकाशन किया गया है। इस वित्त वर्ष का हिंदी वार्षिक प्रतिवेदन 250 पृष्ठों में प्रकाशित हुआ है, जिसे भारत सरकार के दोनों सदनों – लोक सभा और राज्य सभा में प्रस्तुत किया जाता है। इस वर्ष के वार्षिक प्रतिवेदन का हिंदी अनुवाद कार्य निर्धारित समय सीमा में किया गया है और इसे निर्धारित समय पर प्रकाशित करते हुए शिक्षा मंत्रालय को भेजा गया है।

तू मुस्कुरा...

प्रशांत पुरोहित
अकादमिक सहयोगी

आज उदास हो, शायद नाराज़ हो,
ज़िंदगी से हार गए क्या इसलिए तुम बेहाल हो ?

तुम गिर गए, रोंदे गए, तुम टूट गए, सब छूट गए,
तुम हार गए, अधिकार गए, तुम कुचले गए, तुम संभले नहीं ?

तुम क्रोधित हुए, तुम विभेदित हुए, तुम विषाद हुए, बर्बाद हुए,
तुम बेहाल हुए, मायाजाल हुए,
तुम उदास हुए, और इतिहास हुए,
तुम निराश हुए, फिर हँसे नहीं?

तू जिस हाल में है, तू मुस्कुरा, तू हार को अपनी जीत बना,
तू नीर बन, तू बहता जा, शमसीर बन, तू लड़ता जा
तू वीर बन और बढ़ता जा।

तू अभिजीत बन, अरिजीत बन,
तू भूल अतीत और अजीत बन।
तू इकबाल बन, तू जलाल बन,
तू पूछ सवाल, पड़ताल बन,
तू विशाल बन, तू बेमिसाल बन,
मत कर मलाल, तू खयाल बन

तू ठहर जा, ठहराव बन, जो चले तो तू इंकलाब बन,
अपनी जीत के लिए बेताब बन, तू किताब बन, तू खिताब बन,
तू बन गुलाब और महकता जा, "तू कामयाबी को अपना धीर"
तू त्याग शरीर, और तासीर,
तू रूह को अपना नसीर बना,
तू तीर बन, तकदीर बना, तू समीर बन और बहता जा।

तू अमीर बन, आमिर बन,
बन फकीर तू ज़मीर जगा,
तू ज़िंदगी के इस युद्ध में,
बन युधिष्ठिर और परचम लहरा,
तू मुस्कुरा, तू मुस्कुरा, हर हाल में तू मुस्कुरा।।

"मेरा बब्बू"

श्रीमती सविता शर्मा,
पत्नी, डॉ. मुकेश शर्मा

जैसे ही काले रंग की सफारी होटल के दरवाजे पर आकर खड़ी हुई, एक नौकर भागता हुआ आया और आकर हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। शिव को देखकर उसकी आँखों में एक पहचान भरी खुशी लहराई परंतु दूसरी तरफ से किसी और को उतरता देखकर उसके होठों ने चुप्पी साध ली। नौकर की हालत देखकर शिव ही बोला, "बहादुर, ये आपकी नई मैम साहब हैं।"

पहली बार जब अपनी पहली पत्नी विभा के साथ इस होटल 'महारानी पैलेस' में शिव आया था तब मैनेजर ने उसे रूम नंबर दो सौ तीन में ठहराया था, पर खिड़की खोलते ही बाज़ार की चहल-पहल और शोर सुनायी दिया तो उसने मैनेजर से कमरा बदलने के लिए कहा था। मैनेजर उन्हें उस कमरे में ले गया जो इस होटल का बेहतरीन कमरा था।

जैसा होटल का नाम वैसा ही कमरा। महारानियों के महल जैसे ही सुंदर झरोखे बने हुए थे। कमरे की एक-एक वस्तु से रजवाड़ों की शानो-शौकत का एहसास होता था। रात होते ही ट्यूबलाइट की जगह अनगिनत कैंडिलों की रोशनी ने वातावरण को मदहोश कर दिया था। पर इतने मधुर और रोमांटिक वातावरण को विभा ने अपने कटु व्यवहार से मलीन कर दिया था। पाँच साल के अथक प्रयास के बाद भी शिव अपनी शादी को नहीं बचा पाया और विभा शिव को छोड़कर चली गई।

गोरा-चिट्टा, लंबा-चौड़ा गबरू जवान शिव हर तरह से समर्थ था। अपने माँ-बाप का दुलारा, छोटी बहन का प्यारा, एक बहुत ही सुलझे हुए परिवार का बेटा जिसे अपनी ज़िंदगी से बेपनाह मोहब्बत थी। दिन भर हँसना, खेलना, दोस्तों के साथ मूवी देखना, घूमना-फिरना... उसकी ज़िंदगी बेहद हसीन थी। जितना वह अपने दोस्तों का था उतना ही माता-पिता और बहन का भी। एक बेहद खुशहाल परिवार। पर कहते हैं ना कि ज़िंदगी में कब क्या घटना है किसी को कुछ नहीं पता। विभा से शादी के बाद शिव का जीवन बिल्कुल बदल गया। हज़ार कोशिशों के बाद भी जब उसका रिश्ता टूटा तो शायद शिव भी अंदर से टूट गया। और भगवत भजन में ही उसे शांति मिलने लगी, उसे एहसास होने लगा, सांसारिक चकाचौंध से पूर्ण खुशी और शांति कभी नहीं मिल सकती इसलिए वह कृष्ण-भजन में ही अपना मन लगाने लगा।

माता-पिता को भी संतोष था कि हमारा बेटा अपने गम से निकलने के लिए ईश्वर से जुड़ा है तो अच्छा ही है। कान्हा की कृपा से उसके जीवन में रत्ना नाम की बड़ी ही सौम्य और सलोनी लड़की आई। रत्ना भी शिव की तरह मुरली-मनोहर से जुड़ी हुई थी। माता-पिता और परिवार जनों की रजामंदी से शिव-रत्ना विवाह के बंधन में बंध गए। विवाह के बाद आज पहली बार शिव रत्ना के साथ घूमने आया है और अपनी पसंद के उसी महारानी पैलेस में रुका है, जहाँ कुछ साल पहले वह विभा के साथ आया था। "देखो रत्ना, क्या रोमांटिक सीन है, पूरा पहाड़ रंग-बिरंगे फूलों से लदा पड़ा है। चारों तरफ सिर्फ ऊँचे-ऊँचे पेड़ और फूल ही फूल दिखाई दे रहे हैं। ऐसा लग रहा है जैसे फूलों की घाटी में आ गए हैं।"

रत्ना शिव का आत्मा की गहराई से सम्मान करती थी लेकिन कृष्ण-भक्ति के सिवा उसका कहीं इतना मन नहीं लगता था। शिव के कहने पर वह यहाँ आ तो गई थी लेकिन उसका मन तो मथुरा-वृंदावन की रज में रमा हुआ था।

रत्ना ने शिव के पास आकर बड़े ही सौम्य भाव में कहा, "मैं बहुत कोशिश कर रही हूँ इन लम्हों में जीने की लेकिन मुझे यहाँ कोई खास आनंद नहीं मिल रहा। अगर तुम्हें बुरा ना लगे तो हम लोग वापस घर चलें?" शिव ने रत्ना का हाथ अपने हाथ में लेते हुए कहा, "सच कहूँ तो आनंद तो मुझे भी नहीं आ रहा। मानसिक शांति तो मुझे भी कान्हा की भक्ति में

ही मिलती है। लेकिन जब आ ही गए हैं तो आज रात यहाँ रूकते हैं, सुबह होते ही निकल चलेंगे।"

शाम होते-होते शिव-रत्ना घर पहुँच गए। दोनों को इतनी जल्दी अपने सामने देख शिव के माता-पिता एक साथ बोल पड़े, "तुम दोनों को हमने क्वालिटी टाइम बिताने के लिए जबरदस्ती घर से भेजा था और तुम लोग तो केवल एक ही दिन में वापस आ गए।" "मजा नहीं आया", बस इतना बोलकर ही शिव-रत्ना अपने कान्हा जी की पूजा में लग गए। दिन-रात सिर्फ हरेकृष्णा के भजन, कृष्ण का गुणगान और कृष्णा की भक्ति में लीन होते बहू-बेटे को देख-देखकर माँ राजू जी और पिता श्यामबाबू को एक अनजाने डर ने घेर लिया।

श्यामबाबू अक्सर अपने बेटे और बहू को समझाते, "देखो बच्चों, भगवद भक्ति करने में कोई बुराई नहीं है लेकिन अभी आप लोगों ने ज़िंदगी शुरू ही की है। भगवद भक्ति के साथ-साथ आपको अपने गृहस्थ जीवन पर भी ध्यान देना चाहिए। समाज में उठना-बैठना, नाते-रिश्ते निभाना भी मनुष्य जीवन के लिए आवश्यक हैं।" लेकिन दोनों दिन-प्रतिदिन कृष्णा के प्रति पूर्णरूप से समर्पित होते जा रहे थे। माँ राजू और पिता श्यामबाबू की भगवान ने सुनी और रत्ना और शिव एक नन्हें माधव के माता-पिता बन गए। राजू जी और श्यामबाबू दादा-दादी बनकर बेहद खुश थे। ऐसा लग रहा था कि प्रभु ने उनको ज़िंदगी जीने का सहारा दे दिया। उन्हें लग रहा था कि अपने बच्चे के साथ शिव-रत्ना भी एक हद तक ही कृष्ण-भक्ति में लीन रहेंगे।

देखते ही देखते श्यामबाबू का बब्बू बड़ा होने लगा। कब चार साल बीत गए पता ही नहीं चला। बब्बू और दद्दू दिन भर साथ खेलते, खाते-पीते और घूमने जाते। दोनों ही एक-दूसरे के बिना पल भर भी नहीं रह सकते थे। जब भी रत्ना बब्बू को अपने कमरे में लेकर जाती, मौका लगते ही वह रत्ना के कमरे से बाहर निकल आता और आकर दादू की गोद में छुप जाता। दादू जब देखो तब एक ही बात बोलते, "मेरा बब्बू, प्यारा बब्बू!" दादा-पोते का ऐसा असीम प्यार देख-देख दादी माँ वारी-वारी जाती। यह समय श्यामबाबू की ज़िंदगी का स्वर्णिम काल था। पर कहते हैं ना, ज्यादा खुशी को भी कभी जाहिर नहीं करना चाहिए। अपनी ही नजर लग जाती है। बब्बू के आने की खुशी में दद्दू भूल गए थे कि उनके बच्चे ने हरे कृष्णा मंदिर में दीक्षा ले रखी है। शिवा अपनी अच्छी खासी नौकरी को छोड़कर कृष्ण बंधु ग्रुप समाज के प्रभुजी बन गए। बहू का मकसद अपने बच्चे को भी कृष्ण का भक्त बनाना है। उन्हें लग रहा था कि शायद समय के साथ सब ठीक हो जाएगा लेकिन वे गलत थे। एक दिन अचानक शिव-रत्ना ने श्यामबाबू के सामने ऐलान किया, "हम यहाँ का सब कुछ छोड़कर, मकान बेचकर कान्हा के साथ रहने जा रहे हैं। हमारा बाकी जीवन प्रभु भजन और मंदिर परिसर की सेवा में समर्पित करने जा रहे हैं।"

शिव और रत्ना का इतना बड़ा फैसला सुन राजू जी और श्यामबाबू अवाक रह गए। उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि यह सब सुनकर कैसे रियेक्ट करें। अगर उनसे कुछ पूछा गया होता, सलाह माँगी गई होती तो शायद वे कुछ बोल पाते, लेकिन बच्चों ने तो सीधे ही फैसला सुनाया था। सब कुछ प्लान करके।

"बब्बू का भविष्य क्या?" श्यामबाबू ने सिर्फ इतना ही बोला। "बब्बू को गुरुकुल में डाला जाएगा जहाँ वह कृष्णा में किस तरह समाहित होना है वही शिक्षा लेगा।" इस बार रत्ना दृढ़-निश्चय होकर बोली। सुलझे और सौम्य स्वभाव के श्यामबाबू ने बड़े ही नॉर्मल स्वर में अपनी बहू के सामने एक प्रश्न किया, "तुम्हें नहीं लगता रत्ना, यह बब्बू के साथ नाइंसाफ़ी होगी?"

इस बार शिव बोला, "संसार गंदगी का भरा हुआ दरिया है। कृष्णा ही सत्य है। कृष्णा में ही विलीन होना है। इस संसार से मुझे सिर्फ दुःख और तकलीफें मिली हैं। जो कष्ट मैंने सहा, मैं नहीं चाहता कि मेरा बेटा भी वह सब सहे इसीलिए हम उसे अभी से इसे ईश्वर भक्ति में डूबना सीखा रहे हैं।"

श्यामबाबू ने भरसक प्रयास किया उनके बच्चों को समझाने का, लेकिन उन दोनों का इतना अधिक माइंडवाश हो चुका था कि अब उन्हें ना अपने यार-दोस्त दिख रहे थे, ना रिश्ते-नाते और ना ही बूढ़े माँ-बाप!

शिव और रत्ना बब्बू को लेकर बहुत दूर कृष्ण नगरी चले तो आए, लेकिन जब अपने बेटे को गुरुकुल भेजने का समय आया तो माता-पिता का वात्सल्य उमड़ पड़ा। कितनी ही कोशिश के बाद भी वे अपने बच्चे को अपने से अलग नहीं कर पाए। पुत्र से वियोग के समय शिव को एहसास हुआ कि उसने कितना बड़ा पाप कर दिया। "अपने बूढ़े माँ-बाप को उम्र के इस पड़ाव पर यूँ अकेले तड़पते छोड़कर, मुझे

कौन-से भगवान की भक्ति करनी है? कोई भी भगवान गृहस्थ जीवन त्यागने को नहीं बोलता। इस धरा पर जन्म लिया है तो सत्कर्म करना ही ईश्वर की आराधना करना है। माता-पिता के साथ रहकर अपने बच्चों का पालन करना, दीन-दुःखियों का सहारा बनना, यही सच्ची साधना है।" शिव आत्म-ग्लानि से भर उठा। इधर बब्बू भी दद्दू के बिना एकदम चुप-चुप रहने लगा था। ना ठीक से खाता था, ना खेलता था।

बिना समय गँवाये रत्ना और शिव ने फिर से अपने घर वापिस लौटने का फैसला कर लिया और घर लौट आए। शिव श्यामबाबू के चरणों में गिर पड़ा, "मुझे माफ़ करना माँ-पापा, मेरा एक रिश्ता खराब होने पर मेरे दिलो-दिमाग पर ऐसा असर हुआ कि मैंने सभी रिश्तों को त्यागने का मन बना लिया था। हम भूल गए थे कि हमारी आपके और बच्चे के लिए भी कुछ जिम्मेदारी है। सबके साथ में रहकर भी हम कान्हा की भक्ति कर सकते हैं। आप लोगों को देखकर लग रहा है, हमारे जाने के बाद से आप लोगों ने ना तो ठीक से खाया है और ना ही आप ठीक से सोये हैं। चलो, एक बार फिर से हम सब मिलकर भक्ति और पारिवारिक ज़िंदगी का आनंद लेते हैं।" श्यामबाबू ने बब्बू को अपनी बाँहों में उठा लिया और खुशी से बोल पड़े, "मेरा बब्बू, प्यारा बब्बू!"

फौजी

डॉ. निष्ठा ठाकर आनंद
कार्यकारी

लगता तो हम इंसानों-सा था वो,
पर जाने कौन-सी मिट्टी का बना था वो,
कड़कड़ाती ठंड और चिलचिलाती धूप में,
सरहद पर सीना ताने चट्टान-सा खड़ा था वो।
बीवी की पहली करवाचौथ और बिटिया की किलकारी भी,
माँ-बाप की सेवा भी उसने देश सेवा पर वारी थी,
मीलों तक वीरानों में बस दुश्मनों को साथ लिए,
लड़ता रहता है हरदम, दिलों में देश-प्रेम के जज़्बात लिए।
उसकी रग-रग में बहता देश-सेवा का जुनून है।
वह है सीमा पर डँटा इसीलिए हमें चैन और सुकून है।
हम भी अपना फर्ज़ निभाकर, पीढ़ी को बतलाएँगे,
देश और एक फ़ौजी का दर्जा रब से ऊपर हो समझाएँगे।

ज़िंदगी के रंग

श्रीमती कुमुद वर्मा
पत्नी, प्रोफेसर संजय वर्मा

जिंदगी के हर रंग को,
जी भर के जिया है मैंने।
जिल्लते ज़हर को बारंबार,
मस्ती से पिया है मैंने।।

गर हल घोला फिर भी,
वक्त की छलनी से छाना उसको।
और उम्मीद क्या करते हो,
हर पत्थर ज़िद्द को तोड़ा मैंने।।

ज़द्दोजहद का खुमार चढ़ा,
लिखने में बेशुमार वक्त लगा।
सुनहरी मल्लम्मा चढ़ा सच पर,
कदम दर कदम परोसा मैंने।।

आसान नहीं है पाना,
मंजिल गुमनाम भी नहीं।
वक्त, मशक्कत और हिम्मत,
अभी नहीं छोड़ा मैंने।।

वक्त ने भी किया खड़ा जब,
ले जाकर कटघरे में।
ऐ सफेद सच फिर तेरा,
दामन ना छोड़ा मैंने।।

तड़पते झूठ को बाहर ,
फिर रंग बदलते देखा ।
ख्वाहिशों को ऊंचा बहुत,
फड़फड़ाते देखा मैंने।।

उस रूहानी उड़ान में,
सूरज अकेला देख कर।
जिंदगी तेरे हर रंग को,
जी भर जी लिया है मैंने।।

अंतर्मुखी

श्रीमती प्रिया यश प्रसाद
माँ, आर्यन प्रसाद, पीजीपी-पूर्वछात्र

स्नेहा सोकर उठी तो उसका सिर फटने को हो रहा था। रात भर नींद नहीं आई थी उसे। बस करवटें बदलते रात कटी। पिछले एक महीने से ऐसा हो रहा था। बात-बात पर गुस्सा, चिड़चिड़ापन, थोड़ी-थोड़ी देर में मूड बदलना। एक ही काम है उसके जिम्मे – खाना पकाना क्योंकि बाकि काम मेड कर जाती थी, पर उसका खाना बनाने में भी मन नहीं लगता। बेटे और पति विनोद ने पूछा कि वह कमज़ोर और थकी-थकी क्यों रहती है? तो स्नेहा उन पर भी चिल्ला पड़ी और कहा कि – "मुझे क्या पता? मैं क्या डॉक्टर हूँ? आप लोगों को लग रहा होगा शायद बूढ़ी हो रही हूँ, इसलिए पगला रही हूँ।"

पति विनोद ने कहा- "हमने ऐसा नहीं कहा... तुम ख्याल रखो अपना..."

अक्सर स्नेहा ऐसे ही चिड़चिड़ी-सी रहती। उसका दिल करता कि कोई होता जिससे वह खूब बातें करती। असल में उसके दोस्ती के अनुभव बहुत कड़वे रहे थे। स्कूल में जो सहेलियाँ थीं सभी मतलबी निकली और कॉलेज में जो बनीं उनसे दिल नहीं जुड़ा। शायद उसका अंतर्मुखी व्यक्तित्व किसी से दोस्ती करने में नाकाम रहा। शादी के बाद पति ने बहुत ख्याल रखा लेकिन दोस्त की कमी हमेशा महसूस की। जब भी बाकी औरतों को देखती कि कैसे अपनी सहेलियों के साथ शोपिंग, फिल्म और पिकनिक पर जाती हैं तो उसका दिल दुःखी होता। ऐसा नहीं कि पति बाहर लेकर नहीं जाते.. वे बहुत ख्याल रखते हैं, फिल्म दिखाते हैं, बाहर खाना खिलाते हैं और घुमाते भी हैं पर अनुपमा को लगता है कि सहेलियों की बात ही अलग होती है। दोस्त की कमी उसकी जिंदगी पर इतनी ज्यादा हावी हो गई थी कि इस कमी के चलते वह पति और बेटे पर गुस्सा निकालती रहती थी लेकिन वे दोनों कुछ नहीं कहते थे। रात को बिस्तर में भी विनोद पर चिल्लाती जबकि वह कभी ज़बरदस्ती नहीं करता था... वह तो बस उसे बाँहों में लेकर सोना चाहता तब भी वह उसे सुना देती कि, "तुम्हें तो बस यही सब चाहिए।" और विनोद की तरफ़ से मुँह फेरकर सो जाती पर विनोद कुछ नहीं कहता था।

एक दिन पति ने कहा कि, एक बार हॉस्पिटल चलकर चेकअप करवा लेते हैं। जाँच करवाने से हमें तसल्ली भी हो जाएगी कि सब ठीक है। स्नेहा ने कहा ठीक है क्योंकि उसे भी डर लग रहा था कि कहीं वह शायद डिप्रेशन में ना चली जाए और वे अगले ही दिन अस्पताल चले गए। उनके साथ उनका बीस साल का बेटा रोहन भी गया जो इंजीनियरिंग कर रहा था। स्नेहा और विनोद का वह एक ही बेटा था।

डॉक्टर ने कुछ रूटीन टेस्ट करवाए जैसे बीपी, शुगर, लीवर आदि का और स्त्री रोग विशेषज्ञ से मिलने के लिए कहा। महिला डॉक्टर का अपॉइंटमेंट लेकर वे लोग घर आ गए जो अगले ही दिन का मिला था। स्नेहा को उस रात भी नींद नहीं आई।

अगले दिन पति और वह अस्पताल के लिए निकल रहे थे तो पति का ज़रूरी फोन आ गया। स्नेहा अकेले जाने लगी तभी बेटे रोहन ने कहा– "मम्मी, मैं ले चलता हूँ।" एक बार तो स्नेहा को लगा स्त्री रोग की डॉक्टर से मिलना है, बेटे के सामने कैसे? फिर सोचा कोई नहीं आज के ज़माने का बच्चा है.. इससे क्या छुपा है कुछ। थोड़ी देर बाद दोनों डॉक्टर के सामने थे। डॉक्टर ने अंदरूनी जाँच करके बताया कि मेनोपॉज़ का समय आ रहा है इसलिए शरीर में हार्मोनल बदलाव हो रहे हैं। घूमें-फिरें, योग करें, बिजी रहें और सबसे बड़ी बात कि खुश रहें। कुछ ताकत की दवाइयाँ भी लिख दी डॉक्टर ने... जिन्हें लेकर स्नेहा और रोहन वापस घर आ गए।

शाम को पति विनोद ने पूछा तो अनुपमा से पहले बेटा

बोल पड़ा- "पापा मम्मी का प्री-मेनोपॉज़ पीरियड शुरू हो गया है इसलिए हार्मोनल चेंज होने से मूड स्विंग्स होंगे। मैंने नेट पर सब पता लगा लिया है कि ये क्या होता है और इसमें एक लेडी के साथ कैसे बिहेव करना है..." आगे वह बोला कि "पापा, हमें मम्मी का ज्यादा ध्यान रखना है अब... मम्मी, मैंने योग सेंटर में आपका रजिस्ट्रेशन करवा दिया है। हफ़्ते में तीन दिन क्लास होगी। रोज़ सुबह तीनों पार्क में जाएँगे जोगिंग करने।" तभी पति ने कहा- "हर सन्डे फिल्म और बाहर खाना। तुम गुस्सा भी करोगी तो हम प्यार करेंगे। क्यों रोहन? "

रोहन- "एक्ज़ेक्टली पापा और मुस्कुराया..."

स्नेहा हतप्रभ थी रोहन और विनोद के व्यवहार को देखकर। उसे बहुत ख़ुशी और शांति मिल रही थी।

अगले दिन से सुबह तीनों जोगिंग जाते फिर साथ में नाश्ता करते। विनोद ऑफिस से और रोहन कॉलेज से मम्मी का हाल-चाल पूछता रहता। रोहन ने तीनों का एक वाट्सएप ग्रुप बना दिया जहाँ हँसी मजाक के साथ तीनों संपर्क में रहते। रात का डिनर तीनों मिलकर बनाते। स्नेहा का मूड बदलता और वह दोनों पर चिल्लाती तो दोनों बस मुस्कुराते।

रोहन स्नेहा की पसंद की कुछ किताबें ले आया और फेसबुक पर प्रोफाइल भी बनाकर दी। स्नेहा रोज वहाँ कुछ अच्छे विचार लिखती। उसे वहाँ से कई नए दोस्त भी मिले। विनोद भी दो-चार दिन में उसके मन-पसंद फूलों का गुलदस्ता ले आते। अब स्नेहा विनोद की तरफ पीठ करके नहीं सोती बल्कि उसका हाथ विनोद के सीने पर होता था।

स्नेहा को अब कभी ख्याल नहीं आया कि उसकी जिंदगी में किसी दोस्त की कमी है बल्कि उसकी आँखें खुल गईं कि वह दोस्त ना होने से खुद को बेचारी समझकर दुःखी रहती थी जबकि उसके दोस्त उसके घर में ही थे। हमेशा उसके आस-पास। प्री-मेनोपॉज़ से पोस्ट मेनोपॉज़ का समय कैसे बीत गया पता ही नहीं चला और फिर कुछ साल में रोहन की शादी भी हो गई।

अब रोहन की पत्नी के रूप में स्नेहा को एक सहेली भी मिल गई।

प्रेम-प्रिये

राहुल कुमार झा
अकादमिक सहयोगी

तू इश्क इबादत सीता-सी,
मैं भी तेरा राम प्रिये।
मैं बन जाऊँ आदत तेरे जीने की,
तू हो जा मेरे इश्क की विराम प्रिये।।

तू शब्द है मेरे चाहत की,
मैं तेरे जज़्बातों की हूँ जुबान प्रिये।
तू हँसी है मेरे चेहरे की,
मैं तेरे लबों की हूँ मुस्कान प्रिये।।

तू बारिश की बूँदों-सी, मैं मृगतृष्णा का तान प्रिये।
तू मंजिल मेरी राहों की, मैं प्रेमगीत का गान प्रिये।।

मैं कृष्णा-सा चंचल मन, तू राधा-सा है प्यार प्रिये।
मैं तपोवन-सी भूमि, तू गंगा-सा उद्गार प्रिये।।

मैं तपती धूप की ज्वाला-सी, तू सावन की फुहार प्रिये।
मैं बहता पानी नदियों का, तू लहरों की उठती ज्वार प्रिये।।

तू कल-कल बहती नदियों-सी,
मैं ठोस खड़ा चट्टान प्रिये।
तू हँसी है मेरे लब्ज़ों की,
मैं तेरे चेहरे की हूँ मुस्कान प्रिये।।

मैं उड़ती धूल हूँ समतल की, तू है हरियाली का मैदान प्रिये।
मैं धड़कन तेरे दिल की, तू मेरे अल्फ़ाज़ों की है ज़ुबाँ प्रिये।।

तू प्रेमराग है जिस वीणा की,
मैं उस वीणा का हूँ तान प्रिये।
तू मुक्त भाव जिन एहसासों की,
मैं उसकी हूँ ज़ुबान प्रिये।।

मैं उदासी चेहरे की, तू हो जा लबों की मुस्कान प्रिये।
मैं भीड़-सा हूँ इस दुनिया का, तू आकर मुझे पहचान प्रिये।।

तू इश्क इबादत सीता-सी, मैं भी तेरा राम प्रिये।
मैं बन जाऊँ आदत जीने की,
तू हो जा मेरे इश्क का विराम प्रिये।।

इनकार की जलन

श्रीमती प्रिया यश प्रसाद
माँ, आर्यन प्रसाद, पीजीपी-पूर्वछात्र

जलन, छटपटाहट, पीड़ा दे जाती है।
शरीर के किसी भी हिस्से पर पड़े,
लेकिन जब चेहरे पर आ गिरती है,
तो आत्मा तक झुलसा देती है।
बस एक बूँद...

सागर के पानी की बूँदें मोती बन जाती हैं लेकिन लोगों के हाथों से गिरी कुछ बूँदें गहरा दाग दे जाती है जो जिंदगी भर सालता रहता है... ये बूँद है 'तेज़ाब' की... तेज़ाब यानि एसिड, एक ऐसा हथियार है जो अधिकतर लड़कियों पर वार करता है और वार करने वाला एक पुरुष होता है। पिछले तीस-पैंतीस सालों से अपने पुरुषत्व को साबित करने के लिए तेज़ाबी होते जा रहे हैं पुरुष। एक लड़की का 'ना' कहना इन्हें इतना नागवार गुज़रता है कि इन्हें कायर बना देता है और ये उस लड़की को तेज़ाब में नहला देते हैं। अभी हाल ही में दिल्ली के एक स्कूल की छात्रा पर एक युवक ने तेज़ाब फेंक दिया। उस 17 साल की लड़की का बस इतना दोष था कि उसने उस 20 साल के लड़के से दोस्ती तोड़ ली थी। राहत की बात है कि उसके शरीर का केवल 8 से 10 प्रतिशत हिस्सा तेज़ाब की चपेट में आया। उसका चेहरा शायद पहले जैसा न हो सके फिर भी जिंदगी वापस मिल गई।

सन् 1990 में हुआ था पहला एसिड हमला जिसमें शिकार हुई थी 'लक्ष्मी' और तब से ना जाने कितने ही केस हुए एसिड हमले के फिर भी समाज नहीं सुधरा। अगर सुधरा होता तो आज यह हादसा न होता। कानून की बात की जाए तो उसकी लचर व्यवस्था किसी से छिपी नहीं है। सख्त कानून हो तो मुज़रिम डरे भी और अपराध कम हों लेकिन अदालतों में लंबित पड़े केस और खुले बाज़ार में एसिड की बिक्री की पाबंदी के बाद भी उसका बिकना, कानून व प्रशासन की पोल खोलता है। कानून में संशोधन की अत्यंत आवश्यकता है। समाज की बात करें तो आज भी वही सोच कायम है कि लड़कियों का फ़र्ज़ है कि वह खुद ही अपनी रक्षा करें और रक्षा के नाम पर घर में बंद रहें। इस केस में भी अधिकतर लोग लड़की के बारे में यही बात कर रहे हैं कि उसे लड़कों से दूर रहना चाहिए था, दोस्ती नहीं करनी थी, घर में ही रहना था और कुछ लोग तो उसके माता-पिता को ही दोषी करार दे रहे थे कि "लड़की को काबू में रखना चाहिए था।" समाज बहुत जल्द चरित्र प्रमाण-पत्र जारी करने लगता है जबकि अगर कुछ करना है तो बेटों की परवरिश में उन्हें वे 'इंकार' शब्द को बर्दाश्त करना सिखाना चाहिए।

इंसुलिन और उपवास

डॉ नंदलाल माहेश्वरी
चिकित्सा अधिकारी

हमारे सनातन धर्म में उपवास का महत्वपूर्ण स्थान है। उपवास का धार्मिक आधार होने के साथ-साथ वैज्ञानिक आधार भी है क्योंकि यह शरीर के टॉक्सिन को बाहर निकालने का सबसे बेहतर माध्यम है। आज करोड़ों भारतीयों में उच्च इंसुलिन है, जो खाद्य पदार्थों की लालसा के कारण बनता है और लोगों को मोटापे की ओर ले जाता है। भूखे पेट रक्त में इंसुलिन की मात्रा अनुमानित रक्त शर्करा से अधिक होती है, जिसका सामान्य मूल्य 9 से कम होता है। उच्च इंसुलिन का स्तर लगभग सभी बीमारियों जैसे मधुमेह, हृदय रोग, मोटापा, अल्जाइमर, पॉलीसिस्टिक ओवरी सिंड्रोम, उच्च रक्तचाप, कैंसर आदि का कारण बनता है। मोटापे का सीधा संबंध इंसुलिन से है। मोटापा अर्थात शरीर में अधिक इंसुलिन है। रुक-रुककर उपवास करना हमारे स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद रहता है और इससे आप अधिक लंबा जीवन जी सकते हैं।

उपवास करने की अवधि 14 से 16 घंटे रहनी चाहिए जो बेहतर इंसुलिन स्तर के लिए सर्वोत्तम है। जैसा कि जैन लोग करते हैं, या तो हम शाम 6 या 7 बजे के बाद खाना ना खाएँ या फिर अगले दिन सुबह 10 बजे या 11 बजे भोजन कर सकते हैं (पानी पी सकते हैं), यही उपवास करने का सबसे अच्छा तरीका है। चूँकि इंसुलिन का उच्च स्तर व्यक्ति को बार-बार खाने के लिए मजबूर करता है इसलिए ऐसे व्यक्ति के लिए 10-12 घंटे से अधिक समय तक उपवास करना मुश्किल हो जाता है। सबसे पहले, उन्हें रिफाइंड कार्बोहाइड्रेट युक्त आहार में कटौती करनी होगी और अधिक वसा और प्रोटीन खाना शुरू करना होगा, जिससे इंसुलिन नहीं बढ़ेगा और फिर हर तीसरे दिन 30 मिनट तक धीरे-धीरे नाश्ते का समय बढ़ाना होगा ताकि 2 से 3 सप्ताह में वे सुबह के 8 बजे वाले नाश्ते को सुबह के 10 बजे या 11 बजे तक करने के आदती बन सकें। 12 घंटे का उपवास हर कोई आसानी से कर सकता है। रात का खाना शाम 7 बजे खाना है और सुबह का नाश्ता 8 या 9 बजे करना है।

इस पर हुई शोध से पता चला है कि कम कार्बोहाइड्रेट युक्त आहार का उपयोग करने से इंसुलिन का स्तर कम हो सकता है, लेकिन कुछ लोगों को वजन कम करने में समस्या होती है, अगर वे भी उपवास करना शुरू कर दें, तो वे वजन में भारी बदलाव देखेंगे। उपवास करने से इंसुलिन का स्तर 50 प्रतिशत से अधिक नीचे जा सकता है। अधिक वजन वाले लोगों के लिए उपवास विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, लेकिन यदि आप दुबले हैं, तो आपका वजन ज्यादा कम हो जाएगा इसीलिए सावधान रहें। उपवास के दिन व्यक्ति को पर्याप्त प्रोटीन लेना चाहिए। सामान्यतः पुरुषों का वजन 70 किलो रहता है। इसका मतलब है कि आपको उपवास के दिन लगभग 100 ग्राम प्रोटीन लेना होगा। उपवास हमारे शरीर को डिटॉक्सिफाई करता है। यह अपच या अल्सर को भी ठीक कर सकता है। उच्च रक्तचाप के लिए सबसे अच्छा इलाज उपवास है क्योंकि यह इंसुलिन के स्तर को कम करता है। यह इंसुलिन के स्तर को कम करके गाउट को भी ठीक करता है। यह यूरिक एसिड उत्पादन को कम करता है। हमारे शरीर को किसी भी शारीरिक गतिविधि को करने के लिए अनिवार्य रूप से सब्सट्रेट की जरूरत होती है। हमारा शरीर सभी शारीरिक गतिविधियों को करने के लिए ग्लूकोज के ऑक्सीकरण और एटीपी यानी एडेनोसिन ट्राईफॉस्फेट के माध्यम से ऊर्जा प्राप्त करता है। इस ऊर्जा को हमारे शारीरिक कामों के लिए उपयोग में लिया जाने वाला ईंधन कहा जाता है। हमारे शरीर को या तो ग्लूकोज या वसा (कीटोन्स) से ऊर्जा मिलती है। जब हम 12 घंटे या उससे अधिक समय तक नहीं खाते हैं, तो हमारा ऊर्जा स्रोत ग्लूकोज से वसा में बदल जाता है। इसलिए शरीर कीटोसिस में चला जाएगा। आम तौर पर हमारी कोशिकाएँ ग्लूकोज और कीटोन दोनों का उपयोग करती हैं, लेकिन असामान्य कोशिकाएँ (कैंसरग्रस्त) अपने अस्तित्व के लिए केवल ग्लूकोज का उपयोग करती हैं, इसलिए उपवास कैंसर को भी रोकता है।

ऑस्ट्रेलिया में किए गए एक अध्ययन में पाया गया है कि जो मुसलमान रमजान के महीने में रोजा रखते हैं, उनमें इंसुलिन का स्तर काफी कम हो जाता है। टाइप-2 मधुमेह में

कम कार्बोहाइड्रेट आहार और उपवास का उपयोग करके भी, केवल दो दिनों में उनकी इंसुलिन आवश्यकताओं को 50% तक कम किया जा सकता है, इसलिए मधुमेह रोगी को अक्सर अपनी शुगर की निगरानी करनी पड़ती है। जब हमारा इंसुलिन लेवल नीचे चला जाता है तो इससे हमें भूख कम लगती है और भूख लगने पर ही हम खाते हैं, हम नाश्ते को सुबह 10 बजे या 11 बजे तक टाल सकते हैं और ब्रंच की तरह खा सकते हैं और बस दोपहर का भोजन छोड़कर शाम को 6 या 7 बजे रात का खाना खा सकते हैं।

शोधकर्ताओं के मुताबिक, उपवास करने वाले लोगों को भविष्य में कभी इंसुलिन की जरूरत नहीं पड़ेगी। उपवास की मदद से आप वजन कम और डायबिटीज को नियंत्रित कर सकते हैं। हालांकि, किसी भी व्यक्ति को उपवास आहार शुरू करने से पहले अपने स्वास्थ्य देखभाल प्रदाता से परामर्श ज़रूर करना चाहिए। अस्वस्थ महसूस होने पर तुरंत उपवास बंद कर दें। अगर आप उपवास करना चाहते हैं, तो सुनिश्चित करें कि आप पहले अपने डॉक्टर से इसकी पूरी जानकारी लें, क्योंकि चिकित्सा पर्यवेक्षण के बिना आपके लिए यह प्रक्रिया खतरनाक हो सकती है।

असफलता से सफलता तक

श्रीया बजाज
अकादमिक सहयोगी

सोचा था कुछ ऐसा कर जाऊँगी,
कि चले जाने के बाद भी सबको याद आऊँगी ।
पर हालात ने मुझसे कुछ यूँ मुँह मोड़ा,
इस दिल की खलिश के साथ मुझे तन्हा छोड़ा।
पर छोड़ा ना मैंने धैर्य का सहारा,
न सोचा कभी क्या जीता क्या हारा।
दीपक की एक लौ से जलाते चलो सैकड़ों दीये,
इस राह की मंजिल होगी कहीं-न-कहीं,
बस मुझे चलते जाना है, हुए बगैर निराश।
था मेरा उस खुदा पर पूरा विश्वास,
हौसलों से मैंने ना मिटने दी आस।
सफलता ने न स्वागत किया पसारकर अपनी बाँह,
जिंदगी का अर्थ ही है, कभी धूप कभी छाँह।
साहस के बगैर जिए तो यारों तुम क्या जिए,
कुंदन बनने के लिए सोना भी तो है तपता,
बस यही आधार मान लो, गर पानी है सफलता।।

यादों का क़ाफिला

आकांक्षा श्रेया,
छात्रा,पीजीपी-1

एक दिन यादों का एक क़ाफिला देखा;
बहुत दूर से चला आ रहा था,
इतना विशाल काफिला था,
कि ना तो कोई शुरूआत थी,
और ना ही कोई अंत।

क़ाफिले में कई हस्तियाँ थी;
वो दोस्त जिसने दगा किया,
वो यार जिनको मैं पीछे छोड़ आया,
वह परिवार जो अब केवल,
इस क़ाफिले में ही रहेगा।

क़ाफिले में कई जज़बात भी थे;
घृणा, क्रोध, दुःख,
के बगीचे में,
कहीं प्यार, संतोष, खुशी
के अनदेखे अंकुर थे।

क़ाफिला जिस ईंधन पर चल रहा था,
वह खेद और पछतावे का था।
संतोष का हर वह खोया मौका था,
जो पल-पल मरके,
ज़िंदगी को ठुकराया था।

एक दिन यादों का एक क़ाफिला देखा;
और उसमें इतना खो गया,
कि आज को जी ही नहीं पाया;
लो! एक और दुःख, एक और खेद,
उस क़फिले में जुड़ गया।

भावनगर, गुजरात

श्री प्रवीण क्रिश्चन
पूर्व-कार्यक्रम अधिकारी

भावनगर शहर एक शाही शहर है। यह शहर हमेशा से शिक्षा और संस्कृति का केंद्र रहा है। इसीलिए इसे कला और संस्कार की नगरी भी कहते हैं। इसकी स्थापना सन् 1723 में महाराजा भावसिंहजी गोहिल ने की थी। भावनगर शहर एक बंदरगाह के रूप में विकसित हुआ था। 19वीं सदी के अंत में भावनगर राज्य में महाराजा तखतसिंहजी के समय में रेलवे का निर्माण हुआ था। महाराज भावसिंहजी-2 के निधन के समय महाराजा कृष्णकुमार सिंहजी सिर्फ 5 साल के थे इसलिए इस समय के दौरान राज्य के दिवान श्री गौरी शंकर ओझा, दिवान शामलदास और दिवान पटनी ने राज्य का कामकाज संभाला था। इनके बाद में राजा कृष्णकुमार सिंहजी ने राज्य का कार्यभार संभाला। इनके समय में रेलवे, घोघा बंदरगाह जैसी और कई सुविधाएँ जनता के लिए विकसित की गई। उन्होंने कई शालाओं, महाविद्यालयों की स्थापना की।

सरदार वल्लभभाई पटेल के कहने पर सन् 1948 में तत्कालीन महाराजा कृष्णकुमार सिंहजी भारत के संघ में विलीन होने वाले प्रथम महाराजा बने। इनके शासनकाल के दौरान जनता के लिए कई इमारतों व धर्मस्थलों का निर्माण कराया गया। इनमें से कई देखने लायक सुंदर स्थलों का परिचय यहाँ प्रस्तुत है।

गंगाजलिया सरोवर

यह एक सुंदर तालाब (लेक) है जो भावनगर शहर के बीचों-बीच स्थित है। इस तालाब के किनारे दर्शनार्थियों और जोगर्स के लिए घूमने-फिरने तथा बैठने के लिए काफी सुविधा प्रदान की गई हैं। इस तालाब के मध्य में गंगादेवीजी की मूर्ति स्थापित है जो इसके नामकरण की सार्थकता को प्रकट करती है। यहाँ पर आप कई तरह के पक्षियों को भी देख सकते हैं। यह सरोवर भावनगर के निवासियों के लिए अत्यंत ही मनोहारी एवं मनोरम स्थल है इसलिए यहाँ पर सदैव चहल-पहल बनी रहती है।

गंगा देहरी या गंगा छतरी

गंगा देहरी एक खूबसूरत इमारत के रूप में गंगाजलिया तालाब के नजदीक स्थित है। यह इमारत एएसआई द्वारा सुरक्षित है। महाराजा तखतसिंहजी ने अपनी पत्नी की याद में यह इमारत बनवाई थी। काठियावाड़ी मजदूरों ने यह इमारत संगमरमर के पत्थरों पर बेहतरीन नक्काशी करके बनाई है। महाराजा ने हिंदु-मुस्लिम भाईचारे को ध्यान में रखते हुए इंडो-सारसेनिक शैली से यह गंगा देहरी बनवाई थी।

मोतीबाग टाउनहॉल

मोतीबाग टाउनहॉल स्थापत्य का एक सुंदर नमूना है। भावनगर शहर के मध्य में यह इमारत स्थित है। महाराजा कृष्णकुमार सिंहजी के विवाह के समय यह हॉल बनाया गया था। इसे लग्न-मंडप बनाया गया था। यह इमारत सिर्फ 90 दिनों में बनायी गई थी। यह कलात्मक इमारत इंडो-सारसेनिक शैली से बनाई गई है। इसका मुख्य द्वार खूबसूरत नक्काशी से सजाया गया है। इस तरह की इमारत का दूसरा नमूना कलकत्ता का विक्टोरिया मेमोरियल है।

नीलमबाग पेलेस – हेरिटेज होटल

नीलमबाग पेलेस भावनगर के राज परिवार का निवास स्थान है। महाराजा तखतसिंहजी ने इस महल का निर्माण करवाया था। श्री प्रोक्टर सीन्स, जो उस समय राज्य के स्थापत्यपति थे उन्होंने इस महल का डिजाइन तैयार की थी। राजूला से लाये गए पत्थरों से यह महल बनाया गया था। राजा तखतसिंहजी चित्रकला में निपुण थे इसलिए उन्होंने कई पेंटिंग कलाकारों को आमंत्रित करके महल में खूबसूरत चित्र बनवाए थे। आजकल इस नीलमबाग पेलेस का कुछ हिस्सा एक पाँच-सितारा हेरीटेज होटल में परिवर्तित किया गया है।

विक्टोरिया नेचर पार्क

विक्टोरिया नेचर पार्क पूरी तरह से हरियाली से सराबोर पूरे दो किलोमीटर वर्ग क्षेत्र में फैला हुआ पार्क है। भावनगर के महाराजा तखतसिंहजी ने यह पार्क बनवाया था। यह पार्क संपूर्ण मानवश्रम से बनाया गया है। पूरे भारत वर्ष में इस तरह के शहर के मध्य स्थित पार्क सिर्फ दो या तीन ही हैं। इस पार्क में कई तरह के पेड़, पौधे, जानवर और पक्षियों की प्रजातियाँ, तितलियाँ तथा सरिसृप पाए जाते हैं। इस पार्क में कई जगह पर वॉच टावर या मचान बनाए गए हैं जिनके ऊपर जाकर आप पूरे पार्क का अवलोकन कर सकते है। पार्क के मध्य में एक खूबसूरत तालाब भी है जिसका नाम कृष्णकुंज तालाब है। पार्क में लोग पिकनिक और जोगिंग के लिए आते हैं। भावनगर शहर का यह एक बहुत ही खूबसूरत स्थान है।

बार्टन पुस्तकालय

बार्टन पुस्तकालय करीब 140 वर्ष पुराना है। इसकी स्थापना के समय में यह पुस्तकालय काठियावाड का प्रथम पुस्तकालय था। इस पुस्तकालय में कई पुरानी और दुर्लभ पुस्तकें एवं जैन मुनियों द्वारा लिखी गई हस्तलिपियाँ भी शामिल हैं। महात्मा गाँधीजी ने भी इस पुस्तकालय का उपयोग किया था। इस पुस्तकालय की स्थापना महाराजा तखतसिंहजी ने की थी।

गौरीशंकर ओझा झील अथवा बोर तालाब

सन् 1872 में भावनगर राज्य के दिवान श्री गौरीशंकर ओझा ने यह तालाब पानी के संग्रह के लिए बनवाया था। इस तालाब को बोर तालाब भी कहते हैं। यह तालाब बहुत विशाल है और करीब 380 हेक्टर एरिया में फैला है। दर्शनार्थियों के लिए यह एक पसंदीदा स्थान है। बोर तालाब के पास एक बड़ा उद्यान बना हुआ है। झील के किनारे राज परिवार का एक ग्रीष्म महल भी है। यह झील भावनगर के रमणीय स्थलों में से एक है अगर आपको भावनगर घूमने का मौका मिलता है तो इस झील को आनंद जरूर लेना चाहिए।

तख्तेश्वर महादेव

भावनगर शहर के मध्य में एक छोटी पहाड़ी पर तख्तेश्वर महादेव मंदिर स्थित है। यह शिव मंदिर पूरा संगमरमर से बना हुआ है। यह मंदिर काफी ऊँचाई पर स्थित होने के कारण यहाँ से समग्र शहर का शानदार दृश्य देखने को मिलता है। यह मंदिर गुजराती शैली में 28 अलंकृत स्तंभों के साथ बनाया गया है। इस मंदिर का निर्माण सन् 1893 में महाराजा तखतसिंहजी ने करवाया था। यह हवादार हिलटॉप मंदिर तलहटी में स्थित शहर के शोर-गुल से दूर शांत माहौल प्रदान करता है।

राज समाधियाँ

राज परिवार में निधन के बाद जनता के आदर और श्रद्धा के प्रतीक के रूप में गंगाजलिया झील के नजदीक ही राज समाधियाँ बनी हुई हैं। इस स्थान पर महाराजा तख्तसिंहजी की समाधि, महाराजा भावसिंहजी की समाधि, महाराजा जसवंतसिंहजी की समाधि और अन्य समाधियाँ हैं। यहाँ तीन शिव मंदिर भी हैं। सबसे अंतिम राजा कृष्ण कुमार सिंहजी की समाधि भी यहाँ पर है और लोग यहाँ श्रद्धा सुमन चढ़ाने आते हैं। यह एक अत्यंत शांत एवं सौम्य स्थान है।

इसके अलावा, भावनगर शहर के अंदर एवं आस-पास भी कई पर्यटक व धार्मिक स्थल हैं, जिनमें गाँधी स्मृति, आल्फ्रेड हाईस्कूल, दरबार गढ़, श्री जशोनाथ मंदिर, खोड़ियार मंदिर, अकवाड़ा लेक फ्रंट एवं स्वामीनारायण मंदिर आदि दर्शनीय स्थल शामिल हैं। गुजरात पर्यटन विभाग की तरफ से भी इन सभी पर्यटन स्थलों को देश के प्रमुख पर्यटन स्थलों में शामिल करने के सतत प्रयास जारी हैं।

जलवायु परिवर्तन

विजिता नायर,
सहायक प्रबंधक

जलवायु परिवर्तन वास्तव में पृथ्वी पर जलवायु की परिस्थितियों में बदलाव को कहा जाता है। यह विभिन्न बाह्य एवं आंतरिक कारणों से होता है जिनमें सौर विकिरण, पृथ्वी की कक्षा में परिवर्तन, ज्वालामुखी विस्फोट, प्लेट टेक्टोनिक्स आदि सहित अन्य आंतरिक एवं बाह्य कारण सम्मिलित हैं। वास्तव में, जलवायु परिवर्तन, पिछले कुछ दशकों में विशेष रूप से चिंता का कारण बन गया है। पृथ्वी पर जलवायु के स्वरूप में परिवर्तन वैश्विक चिंता का विषय है। जलवायु परिवर्तन के कई कारण होते हैं और यह परिवर्तन विभिन्न तरीकों से पृथ्वी पर विद्यमान जीवन को प्रभावित करता है।

हमारी प्रकृति ईश्वर द्वारा मनुष्यों के लिए एक वरदान है। मानव जीवन एवं उसके रहन सहन, वनस्पति एवं जीव जन्तु का सीधा संबंध जलवायु से है। पृथ्वी पर विभिन्न प्रकार की जलवायु मिलती है, जिससे मानव जीवन प्रभावित होता है जैसे मानव का खान पान, वस्त्र, आवास, कृषि एवं पशुपालन परिवहन आदि। गर्म जलवायु के लोग हल्का कपड़ा पहनते हैं जैसे भारत के मानसूनी वातावरण के हम लोग, इसके विपरीत शीत प्रदेशों के लोग गर्म कपड़े पहनते हैं। विश्व में ऐसा कोई भी देश नहीं जो जलवायु परिवर्तन के प्रभाव से मुक्त हो। इसका असर जीवसृष्टि पर परोक्ष या अपरोक्ष रूप से कहीं ना कहीं नजर आ रहा है। जलवायु परिवर्तन की मुख्य वजह कार्बन की मात्रा वातावरण में बढ़ने को बताया जाता है।

धरती का तापमान बढ़ने के परिणाम स्वरूप आज प्राकृतिक आपदाओं में बढ़ौतरी हुई है। पहाड़ों पर जमी बर्फ के पिघलने में तेजी आई है, जिसकी वजह से समुद्र की सतह बढ़ने की आशंका बनी हुई है। इसी कारण अनेक टापुओं तथा समुद्र तट से सटकर बसे हुए शहरों के डूबने का खतरा बना हुआ है। तेज़ी से पिघलते ग्लेसियरों (हिमनद) के कारण नदियों के जलप्रवाह प्रभावित हुए हैं। इसीलिए पेयजल के संकट के आसार नजर आ रहे हैं। अन्यथा एक समय था जब हम नदी या कुएँ से पानी बेझिझक निकालकर पी सकते थे। खेत-खलिहान में बेतरतीब पानी का उपयोग कर सकते थे। ज्यादा बीमारियाँ नहीं लगती थी। आज हमें कोई भी पानी पीने से पहले सोचना पड़ता है। डर रहता है कि प्रदूषित ना हो।

जलवायु परिवर्तन का प्रमुख कारण है कार्बन का उत्सर्जन। यह गाड़ियों एवं अन्य औद्योगिक इकाइयों द्वारा उत्सर्जित होता है। जंगलों की कटाई, मशीनों से कृषि, इंसानों के रहन-सहन में सुविधाओं के उपकरणों के चलते हालात और भी खतरनाक बन गए हैं। इसीलिए असमय बारिश, बाढ़, सूखा तथा अन्य प्राकृतिक आपदाएँ आती रहती हैं। गाँवों में सूखा, बाढ़ और साल दर साल फसलें बर्बाद होना वगैरह की संख्या बढ़ती जा रही है। नतीजतन, किसान शहरों की तरफ पलायन करने को मजबूर हो रहे हैं। इस तरह से शहरों में रोजगार तथा संसाधनों की आपूर्ति का बोझ बढ़ता जाता है। अब तो भारत ही नहीं, समग्र विश्व बाढ़ आदि की चपेट में है ऐसा लगता है। यूरोप, अमेरिका में गर्मी के रिकॉर्ड टूटने लगे हैं। इस वर्ष, पड़ौसी मुल्क पाकिस्तान का करीब एक तिहाई हिस्सा बाढ़ के कारण हुए जलभराव से नेश्तनाबूद हो चुका है।

अगर समग्र विश्व को जलवायु परिवर्तन के इस दुष्प्रभाव से उबरना है तो सबको एक साथ मिलकर लड़ना होगा और एक जुटता से मुकाबला करना होगा। आपस में जंग-लड़ाई करने के बजाय मिलकर ठोस उपाय करने होंगे। जैसे कि पेरिस में समझौता हुआ है। दिन-प्रतिदिन होने वाले कार्बन उत्सर्जन को कम करने की जिम्मेदारी उठानी होगी। बिना किसी भेदभाव या द्वेष के सभी देशों को मिलकर ऐसे निर्माणों को टालना होगा जिससे कार्बन उत्सर्जन अधिक होता हो। जंगलों की कटाई रोकनी होगी। वृक्षारोपण बढ़ाना होगा।

रीसाइकलिंग को बढ़ावा देना होगा। अक्षय ऊर्जा के उपयोग में नवप्रवर्तन करना होगा। प्लास्टिक के उपयोग का पूर्णतया निर्मूलन करना होगा। प्लास्टिक से बने सामानों में बच्चों को खाना परोसना रोकना होगा। मिट्टी के बरतनों का विकल्प अपनाना होगा।

जलवायु परिवर्तन की तरफ तो कई छोटे छोटे देश आज से ही ध्यान दे रहे हैं जो लोग पर्यावरण प्रेमी हैं लेकिन जो देश टेक्नोलॉजी, विकास की रेश में भाग रहे है वे देश इस तरफ ध्यान दे ही नहीं रहे है और यही एक बड़ी समस्या है अगर ऐसे ही चलते रहा तो एक दिन हम उस टेक्नोलॉजी और विकास की सुविधा का लाभ लेने के लिए जिन्दा ही नहीं बचेंगे। जलवायु में होने वाले बदलावों के कारण पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। शोधकर्ताओं के मुताबिक, पिछले कुछ दशकों के दौरान मानवीय गतिविधियों ने इस बदलाव में तेजी लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जलवायु परिवर्तन को नियंत्रित करने और धरती पर स्वस्थ वातावरण बनाए रखने के लिए, धरती पर मानवीय गतिविधियों द्वारा होने वाले वाले प्रभावों को नियंत्रित किए जाने की आवश्यकता है।

माँ

हरीश वाघेला,
कार्यकारी

आधा मायके में, आधा ससुराल में जीती है।
माँ अपने लिए तो कहाँ कोई घर रखती है।।
दुआएँ अपनी उम्र की भी दे देती है।
माँ खुद के लिए तो कहाँ कुछ माँगती है।।
आधा पति के लिए, आधा बच्चों के लिए।
माँ खुद के लिए तो कहाँ जीवन जीती है।।
घर के सभी लोगों के साथ कैसी घुल-मिल जाती है।
माँ अपना खुद का वजूद कहाँ रखती है।।
आधा बेटियों, आधा बहुओं को दे देती है।
माँ खुद के लिए तो कहाँ कुछ रखती है।।
अन्नपूर्णा बनकर घर में सभी को प्रेम से खिलाती है।
माँ खुद का बनाया खाना भी कहाँ शांति से खाती है।।
हो चाहे दुःखों का समंदर तो भी माँ कहाँ बताती है।
माँ अपने आँसुओं के लिए साड़ी का पल्लू रखती है।।

जीवन मैंने पहचाना

मृदुल जोशी,
पति, बिन्दु डोडिया

एक पीड़ा मन की मन से कही,
थी व्यथा मन की फिर भी अनकही।
कुछ द्वंदों का तानाबाना, क्या जीवन मैंने पहचाना ।।

अंतरतम से मैं अनजान, थी आडम्बर-सी वो पहचान।
मेरा मैं भी था धुर प्रचंड,
और उच्छल-अंग-सा ये मन उद्दंड।
उद्वेगों का प्रखर प्रवाह, आसक्ति की वो अनंत चाह।
तब ज्ञान को वितंड का उल्हाना, क्या जीवन मैंने पहचाना ।।

था उर बेचैन भोगरत हो, आकर्षण बढ़े फिर विरत हो।
प्रज्ञा को विषय का विषपान, तम में ज्योति अंतर्ध्यान ।
मोहपाश की जकड़न में,
कंचन परिग्रह की अकड़न में।
नियम सहज भंग हो जाना, क्या जीवन मैंने पहचाना ।।

अब मन की पीड़ा फूट पड़ी,
फिर मन की व्यथा नयी गढ़ी।
भरमाया उर फिर सत्य विलग हो,
अस्तित्व के कारक से अलग हो।
अंतर्कलह भटके चितवन-सा,
कोई निदान नही नव उपवन-सा।
लगे जीवन मृत्यु से ताना, क्या जीवन मैंने पहचाना ।।

मन अशांत और देह क्लान्त, कंचन सुख से मन उपरांत।
इच्छित आसक्त देह गर्व प्रचुर, मन सुख रत, आनंद दूर ।
भोग का वो सीमित उत्तेजन, फिर तीक्ष्ण दुःखों का कटु भेदन।
उल्लास रहित हुआ मन का गाना, अब जीवन थोड़ा पहचाना।।

ये पल-पल की श्वास-प्रश्वास, गहन परत तक देह उदास।
भोग, सुख सब कुछ पल के, अब छोड़ चुके मुझको छल के।
अनंत सुख, भ्रमित सुखमयी आस,
फिर तम मेट गया ये प्रकाश।
और सब त्यागा, फिर जाना, मैंने जीवन को पहचाना ।।

संस्थान की सुरक्षा व्यवस्था

महेन्द्रसिंह चौहान,
सुरक्षा प्रभारी

भारतीय प्रबंध संस्थान अहमदाबाद हमारे देश का एक प्रख्यात प्रबंधन संस्थान है। यह अहमदाबाद शहर के बीच में लगभग 103 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है। इसके कैम्पस को अहमदाबाद का व्यस्ततम 132 फुट रिंग रोड़ दो भागों में बाँटता है। इस रिंग रोड़ के एक तरफ मुख्य कैम्पस है जिसकी मुख्य बिल्डिंग अहमदाबाद शहर की हैरिटेज बिल्डिगों में शामिल है। इस कैम्पस की सभी बिल्डिंगें ईंटों से बनी हैं जो कैम्पस को हैरिटेज लुक प्रदान करती हैं इसलिए इस भाग को हैरिटेज कैम्पस भी कहा जाता है। रिंग रोड़ के दूसरी तरफ के कैम्पस में सभी नई आरसीसी की बिल्डिंगें हैं इसलिए इस कैम्पस को नए कैम्पस के नाम से जाना जाता है। इन दोनों परिसरों को एक अंडर ग्राउंड टनल से जोड़ा गया है जिसे अंडर पास कहते हैं। ये दोनों कैम्पस अत्यंत व्यस्त रोड़ों से घिरे होने के कारण इनकी सुरक्षा व्यवस्था काफी अहम् हो जाती है। इन दोनों परिसरों की सुरक्षा व्यवस्था की जिम्मेदारी संस्थान के सुरक्षा प्रभारी महेंद्रसिंह चौहान संभालते हैं। इनकी सहायता के लिए संस्थान में श्री दिव्येश व्यास भी कार्यरत हैं जो कैम्पस की सुरक्षा व्यवस्था की सभी सुरक्षा गतिविधियों में इन्हें सहायता प्रदान करते हैं।

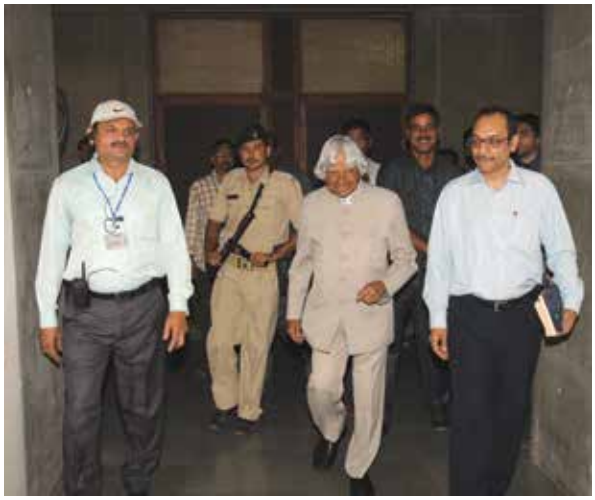

संस्थान का पूरा परिसर हरियाली से भरा हुआ है। दोनों परिसरों में लगभग 5 से 6 हजार पेड़ हैं। इसके अलावा कैम्पस में दो नर्सरियाँ भी हैं जहाँ पर लगभग चार हजार गमले हैं और कैम्पस में कई गार्डन एवं प्ले ग्राउंड भी हैं जो कैम्पस को हरा-भरा रखने के साथ-साथ यहाँ रहने वाले समुदाय के सदस्यों को प्रकृति के अत्यंत नजदीक ले जाते हैं। संस्थान के कैम्पस के अंदर समुदाय के सदस्यों के साथ-साथ हजारों की संख्या में तरह-तरह के पक्षी, बिल्लियाँ, बंदर, लंगूर, गिलहरियाँ एवं कुत्ते भी निवास करते हैं। पक्षियों में तरह-तरह की रंग-बिरंगी चिड़िया, तोते, मोर, कबूतर, कौवे, कोयल, बाज, गिद्ध, चील, बगुले, बैय्या, चमगादड़ एवं विभिन्न प्रजाति के पक्षी इन दोनों कैम्पसों में निवास करते हैं। इतनी बड़ी संख्या में पक्षियों के इन दोनों कैम्पसों में रहने के पीछे हमारे संस्थान के सुरक्षा कर्मियों का महत्वपूर्ण योगदान है। सुरक्षा कर्मियों द्वारा दोनों कैम्पसों में इनकी प्यास बुझाने के लिए लगभग 20 से 25 स्थानों पर पानी के पात्र रखे हुए हैं जिनको वे समय-समय पर साफ करके उनमें पानी से भरते रहते हैं और लगभग इतने ही स्थानों पर इनके खाने के लिए दाना, ज्वार, बाजरा, मक्का आदि भी डालते रहते हैं। इन कार्यों में समुदाय के सभी सदस्य भी अपने प्रकृति प्रेम के अनुसार मदद करते रहते हैं। संस्थान ने जीव दया चैरीटेबल ट्रस्ट को इन सभी जीवों की देखभाल की जिम्मेदारी दे रखी है। अगर कोई पक्षी या जानवर बीमार होता है या किसी तरह से जख्मीं होता है तो उसे जीव दया ट्रस्ट की एंबुलेस को सौंप दिया जाता है ये इनका इलाज करके वापिस कैम्पस में छोड़ जाते हैं।

पूरे कैम्पस में अलग-अलग बिल्डिगों के अलावा स्टाफ और फेकल्टी के लगभग 300 आवास हैं तथा लगभग 1500 छात्रों के लिए सिंगल रूम वाले छात्रावास हैं। विवाहित छात्रों के लिए परिवार के साथ रहने के लिए लगभग 200 आवास हैं। संस्थान में कई जगह पर विभिन्न

कार्यक्रमों के आयोजनों के लिए छोटे-बड़े सभागार हैं जहाँ विभिन्न प्रकार के आयोजन होते रहते हैं। संस्थान के बाहर से भी इन आयोजनों में काफी लोग आते हैं इसलिए इन दोनों परिसरों की सुरक्षा चौबीसों घंटे बड़ी तत्परता से की जाती है।

दोनों परिसरों की सुरक्षा में लगभग 130 सुरक्षा कर्मी दिन-रात तैनात रहते हैं। ये तीन शिफ्टों में करीब 35 पोस्टों पर सदैव सजग रहते हैं और इनमें से करीब 30 सुरक्षा कर्मी तीनों शिफ्टों में दिन-रात पूरे कैम्पस की पैट्रोलिंग करते हुए वॉकी-टॉकी के साथ पूरे कैम्पस को सुरक्षा प्रदान करते हैं। पूरे कैम्पस को सीसीटीवी से कवर किया गया है, इसके साथ ही मोबाइल ऐप के द्वारा विजीटर मैनेजमेंट सिस्टम से संस्थान के अंदर आने जाने वालों पर नजर रखी जाती है। इसके साथ-साथ किसी वीआईपी की कैम्पस विजिट के दौरान भी हमारे सुरक्षा कर्मी स्थानीय पुलिस के साथ कंधे से कंधा मिलाकर सुरक्षा व्यवस्था को बनाए रखने में योगदान देते हैं।

हमारे संस्थान के सुरक्षा कर्मी इतने ईमानदार एवं कर्मठ हैं कि कैम्पस में कहीं भी कोई महँगी से महँगी चीज मिलने पर भी वे उसे सुरक्षा प्रभारी के पास जमा करा देते हैं और वे दूसरे दिन संस्थान के नोटिस बोर्ड पर इसकी जानकारी लोस्ट एंड फाउंड के रूप में सूचना पट्ट पर देते हैं। जिस किसी की भी कोई वस्तु खो गई होती है वह उचित पहचान बताकर वहाँ से अपनी खोई हुई वस्तु प्राप्त कर लेते हैं। शायद ही कोई ऐसा दिन जाता होगा जब यह सूचना नोटिस बोर्ड पर नहीं होती है वे हीरे, सोने एवं चाँदी की चीजों को भी ऐसे लौटा देते हैं जैसे उनका कोई मोल ही नहीं है। संस्थान के सुरक्षा कर्मी दिन-रात बिना थके सर्दी, गर्मी, बारिश में एक सैनिक की तरह से अपने कर्तव्य पर अडिग रहते हैं। कैम्पस में रहने वाले सभी समुदाय सदस्य इनके कारण अपने आप को पूरी तरह से सुरक्षित महसूस करते हैं। स्टाफ सदस्यों एवं फेकल्टी मेंबरों के छुट्टी पर कैम्पस से बाहर जाने पर हमारे सुरक्षा कर्मी उनके घरों की हर घंटे जाकर चेकिंग करते हैं और उनकी पूरी सुरक्षा रखते हैं इसलिए कैम्पस से बाहर जाने पर किसी को भी अपने घर की सुरक्षा के बारे में सोचना नहीं पड़ता।

संस्थान की इस चाक-चौबंद सुरक्षा व्यवस्था का श्रेय उनको समय-समय पर दिये जाने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रमों को जाता है। इन सुरक्षा कर्मियों के लिए सुरक्षा एजेंसी की तरफ से भी हर महीने प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं फायर ड्रिल आयोजित की जाती है। संस्थान की सुरक्षा व्यवस्था को प्रभावी बनाए रखने के लिए केंद्र सरकार की सुरक्षा एजेंसियाँ भी समय-समय पर मोक ड्रिल आयोजित करती रहती हैं। अभी हाल ही में 17 दिसंबर 2022 को सायं 09.00 से सुबह 03.45 बजे तक एनएसजी कमांडो द्वारा मॉक ड्रिल का आयोजन किया गया था। इस मॉक ड्रिल में किसी भी तरह के आतंकी हमले कि स्थिति का प्रशिक्षण संस्थान के सुरक्षा कर्मियों को दिया गया था। हमारे संस्थान के सुरक्षा कर्मियों ने एनएसजी कमांडों की टीम के साथ मिलकर इस तरह के आतंकी हमलों की स्थिति में की जाने वाली कार्यवाही का प्रशिक्षण लिया। इस मॉक ड्रिल में संस्थान के सुरक्षा कर्मियों के साथ समुदाय के सदस्यों, स्थानीय पुलिस, फायर ब्रिगेड, चेतक कमांडो फोर्स एवं एनएसजी कमांडो फोर्स ने मिलकर सर्वश्रेष्ठ टीम वर्क को स्थापित किया था। इसके पहले राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल (National Disaster Response Force) एनडीआरएफ टीम के साथ मिलकर भी हमारे संस्थान के सुरक्षा कर्मियों ने आपदा प्रबंधन का प्रशिक्षण प्राप्त किया था। हमारे संस्थान की सुरक्षा व्यवस्था के बारे में यही कहना उचित होगा कि जिस प्रकार से हमारा संस्थान प्रबंध शिक्षा के क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ है उसी प्रकार से संस्थान की सुरक्षा व्यवस्था भी श्रेष्ठ है।

मेरी अम्मी - मेरी गुरू

हरीश प्रेमी
पीएच. डी. छात्र

कभी-कभी उस खुदा की बनाई कायनात पर हैराँ होता हूँ,
सोचता हूँ कि आखिर क्या सोचकर खुदा ने ये दुनिया बनाई होगी,
फिर बनाने के बाद खुद ना जाने कहाँ खो गया,
और हम इंसानों के लिए 'ऊपरवाला' ही बस खुदा हो गया।
पर मेरा खुदा ना तो कभी ऊपर था, न है और ना होगा
क्योंकि मुझे किसी ने दिखाया ही नहीं, कितना ऊपर है, बताया ही नहीं।

बचपन में मैंने कोशिश की देखने की.. ऊपर.. जितना हो सके ऊपर,
कभी दीवार पे, कभी पेड़ पे, तो कभी छत पे चढ़कर कोशिश की ऊपर देखने की,
पर मुझे पंक्षी, बादल, सूरज और चाँद-सितारों के सिवा ऊपर कुछ नज़र नहीं आया,
बहुत ढूँढ़ा, पर खुदा का कुछ पता चल ना पाया,
हाँ कभी-कभी दिख जाता था सिर्फ नीला खाली आकाश।

फिर एक दिन मैंने नीचे खोजना शुरू किया,
यह सोचकर कि शायद खुदा कभी ऊपर से नीचे ना गिर गया हो,
भाई, हो सकता है कि उसका पैर फिसल गया हो,
और वह आन पड़ा हो, गिरा पड़ा हो, कहीं ज़मीन पे, हा.. हा.. कितना नादान था मैं..!

एक दिन कहीं से सुना, कि खुदा तो वो है जिसने हम सबको बनाया,
सबको बनाया है! मतलब जिसने मुझे भी बनाया है! फिर मुझे याद आया,
एक दिन अम्मी की गोद में बैठे-बैठे, मैंने अम्मी से पूछा था,
अम्मी.. मुझे किसने बनाया? मैं कहाँ से आया?
अम्मी पहले हँसी और बोली, मेरे लाल! तुझे हमने बनाया,
तू अपनी अम्मी और अब्बू का है जाया,

अब, अब्बू को मैंने कभी देखा न था,
अम्मी कहती थी कि उन्हें ऊपरवाले ने अपने पास बुला लिया था,
ऊपरवाले ने! हुँह.. मुझे कभी समझ न आता था। आखिर क्यों?
यह ऊपरवाला सबको ऊपर ही क्यों बुलाता था!
खैर.. मैंने अम्मी से फिर पूछा? मुझे कैसे बनाया?
अम्मी फिर हँसी, फिर बोली, तू मेरी कोख से आया, तुझे मैंने बनाया। मैंने फिर पूछा..
तो क्या दुनिया के सब लोग अपनी अम्मी की कोख से आते हैं?
अम्मी बोली, हाँ, तो क्या आसमान से टपकते हैं!
हम्म... मुझे एकदम यकीन हो गया कि खुदा ऊपर तो नहीं हो सकता,
क्योंकि खुदा ने तो हम सबको बनाया है, और मैंने भी कभी नहीं देखा था,
कि कोई आसमान से टपक कर ज़मीन पर आया है!

मैंने फिर पूछा.. अम्मी, पर मैं तुम्हारी कोख में क्यों आया?
मुझे तुमने ही क्यों बनाया? किसी और ने क्यों नहीं?
अम्मी मुस्कुराई.. और बोली.. क्योंकि मैंने दुआ माँगी थी कि
दुनिया का सबसे खूबसूरत हीरा मुझे मिले, और फिर तुम मेरी गोद में आए,
ताकि मैं तुम्हें इस तरह जी भरके देख सकूँ,
तुम्हारे इस छोटे-से दिल की धड़कन को महसूस कर सकूँ,
तुम्हारी इन खूबसूरत और मासूम आँखों में झाँक सकूँ,
और जान सकूँ उस जज़्बात को,
जो दुनिया में सबसे खूबसूरत और बेशकीमती है।

वो क्या है? मैंने पूछा, अम्मी ने मुस्कुराते हुए मेरी आँखों में देखा,
और पीछे से मेरे कान के पास आकर बोली – मोहब्बत
मोहब्बत! यह मोहब्बत क्या होती है, अम्मी? मैंने हैरानी से पूछा,
अम्मी थोड़ा सोचने लगी, और फिर धीरे-से बोली, जाओ, ज़रा आईने में जाकर देखो!
ये जो तुम्हारी आँखों में छिपी है न! मासूमियत..बस यही मोहब्बत है।

मैं सोचने लगा.. पर मैं आईने के पास नहीं गया,
मैंने कहा, अम्मी! तुम्हारी आँखें ही मेरे लिए आईना है,
और मुझे दिखाई पड़ती है, साफ.. साफ..
वही मासूमियत जिसे तुम कहती हो मोहब्बत!
अम्मी की आँखें नम हो आई.. और उन खूबसूरत आँखों से निकलकर,
दो अश्क मेरे चेहरे पर आ गिरे,
अम्मी ने मुझे सीने से लगा लिया और ना जाने क्यों रोने लगी!

फिर अपने पल्लू से आँसू पोंछते हुई बोली, एक बात हमेशा याद रखना, मेरे लाल,
इस दुनिया में एक ही खुदा है – मोहब्बत, और यही सच है, बाकी सब झूठ,
सच और झूठ? यह मेरा आखिरी सवाल था।
अब भला सच और झूठ क्या होता है? अम्मी ने एक लंबी आह भरी और बोली,
तुम अभी मासूम हो, नादान हो, वक्त के साथ समझ जाओगे।
पर याद रखना, मोहब्बत ही सच है और सच ही खुदा है।

अम्मी मेरी आँखों में झाँक रही थी, और मैं उन खूबसूरत आँखों की,
बेइन्तहाँ मोहब्बत की गहराइयों में खो गया,
और उस खुदा की गोद में ना जाने कब सो गया।

आँख खुली, अब मैं खुदा को जानता था, पहचानता था।
जब-जब मैं गिरता, वह खुदा मुझे उठाने आता।
जब-जब मैं रोता, वह खुदा मुझे चुप कराने आता।
जब-जब किसी अँधेरे कोने में खो जाता, वह रोशनी बनकर चला आता।

जब-जब कहीं दर्द होता, वह मरहम बनकर मेरे दर्द मिटाता।
जब-जब भूख लगती, उसके हाथ का निवाला मेरे पेट में जाता।
जब-जब प्यास लगती, वह खुद बादल-सा बनकर बरस जाता।
मेरी प्यास बुझाता, अपना प्यार लुटाता।
हाँ, मेरी अम्मी की आँखों में मुझे, हर रोज़ हर घड़ी हर पल खुदा नज़र आता।

फिर! समा बीतता गया, वक्त चलता गया,
दिन-महीनों में, महीना सालों में बदलता गया,
मैं दुनिया में चलता रहा, और एक दुनिया मेरे अंदर चलती रही,
कहानी ज़िंदगी की नये-नये रंग बदलती रही।
कभी दौलत में, कभी शोहरत में, कभी आशिकी में, कभी मौसिकी में,
कभी बेवकूफ़ी में, कभी नादानी में, कभी उलझनों में, कभी परेशानी में,
ये कहानी लेती रही नए-नए मोड़, न जाने किसकी तलाश में चल रही थी,

ज़िंदगी की यह दौड़। ज़िंदगी की दौड़ में दौड़ते-दौड़ते, जब थक-हार गया।
तो एक पल के लिए रुका, थमा, ठहरा और ठहर के पाया,
कि ज़िंदगी में दौड़ तो बहुत है, पर शायद दौड़ में ज़िंदगी नहीं।
इस दौड़ में कुछ पाने की चाह है, पर कुछ मिलने का अहसास नहीं, रास्तों की तलाश है,
पर मंज़िल का आभास नहीं, और इसी कश्मकश के चलते एक दिन खबर आई,
कि अम्मी अब नहीं रही, अफसोस, गुज़र गई।

चली गई अलविदा कहकर, दूर कहीं आसमान में,
शायद ऊपर वाले के पास। मुझे मौका भी ना मिल सका,
एक आखिरी बार अलविदा कहने का। उन मोहब्बत भरी आँखों में झाँकने का,
जिन्हें जी भरकर मैं देखना चाहता था,
फिर एक बार उसी गोद में सर रखकर सोना चाहता था,
फिर एक बार उसी मासूमियत को महसूस करना चाहता था,
एक आखिरी बार अपने खुदा के गले लगकर जी भरकर रोना चाहता था,
और इज़हार करना चाहता था, अम्मी
तुम्हारी आँखों में जो मोहब्बत है ना, वह मुझे और कहीं दिखाई नहीं देती,
तुम्हारी मासूमियत भरी बातें, कहीं और सुनाई नहीं देती।

आज मेरी दुनिया में लाख चकाचौंध और रोशनियाँ हैं, पर तुम्हारी आँखों के नूर के आगे सब फीका है,
सैंकड़ों रिश्तों से घिरा हूँ आज, पर तुम्हारी मोहब्बत के आगे सब झूठा है।
मगर अफसोस, मैं कुछ बता ना पाया, वो चली गई। मैं कुछ समाझ ना पाया, वह गुजर गई।
अब रह गई थी सिर्फ वे यादें, वे बातें, मेरे वो नादानी भरे सवाल, और मेरी अम्मी के मोहब्बत भरे जवाब।

आज मेरा नीचे वाला खुदा, ऊपर वाले खुदा के पास चला गया,
और मेरे पास अब कोई भी खुदा न रह गया, ऊपर वाला तो कभी था ही नहीं,
नीचे वाला भी खो गया। और मैं बेबस, लाचार और लावारिस हो गया।

संघर्ष – स्वयं से

मोनिका अग्रवाल,
सहायक प्रबंधक

माने या ना माने हर कोई लड़ाई मगर लड़ता है,
कोई बाहर तो कोई स्वयं के भीतर लड़ता है।
लड़ते-लड़ते पा लेता कोई सपनों की मंज़िल,
तो कहीं कोई सब कुछ खोकर लड़ता है।
कहीं देश लड़ रहे, कहीं प्रदेश, कहीं नेता तो कहीं अभिनेता।
कहीं लड़ रहे भाई-भाई, तो कहीं लड़ते ससुर-जवाँई।
ये वो जंग हैं जो जग-विदित हैं,
इनमें इसका या उसका हित निहित है,
पर उस जंग, उस संघर्ष का क्या,
जिसका बसेरा हमारा ही चित है।
स्वयं ही स्वयं के शत्रु, स्वयं ही मित्र बन जाते हैं,
स्वयं ही स्वयं की बात पर, समय-समय तन जाते हैं।
जब मन और मस्तिष्क का मेल ना हो,
दोनों चल पड़ें अपने रास्ते, हो जाता है संघर्ष तब,
नहीं सही जो किसी के भी वास्ते।
अर्जुन-सा योद्धा भी एक दिन,
इसी संघर्ष से जूझा था, गीता का वह परम ज्ञान,
तभी कृष्ण ने बूझा था।
जब भी ऐसी बारी आती, प्रभु साथ सदा ही देते हैं,
अपने विवेक से आगे बढ़ें तो, जीवन भी जय कर लेते हैं।
स्मरण रहे कि अडिग रहना है,
कदम नहीं डगमगाना है,
इन सभी संघर्षों का सामना, करते हुए जगमगाना है।
हार गए तो बैठना नहीं,
जैसे जुलाहा बुनता है ताना-बाना,
धागा टूटे तो जोड़ देता है सिरा दूसरा,
पर छोड़ता नहीं वह वस्त्र बनाना।
ऐसी मनोस्थिति से निकलने पर ही,
आती है परिपक्वता विचारों में,
मार्ग ढूँढ़ सकता है मानव, जलते हुए अंगारों में।
उठो तुम भी पार्थ की तरह, सत्य को समझो और जानो,
फिर लगे कि लड़ना ही है नियति,
फिर बस समय का कहना मानो।
समय-समय पर समय बदलता,
समय ही सब कुछ सिखलाता है,
समय की ही माँग के कारण,
अर्जुन भी गांडीव उठाता है।

प्यारी पुस्तक

विरलकुमार नाविक
वरिष्ठ पुस्तकालय व्यवसायी

पुस्तक हमें लगती,
प्यारी-प्यारी, न्यारी-न्यारी।

प्यारी-प्यारी लगती क्योंकि,
हमें देती ये ज्ञान और जानकारी सारी।

ये हमें कर देती ऊर्जा प्रदान,
और उसकी कहानियों से,
सफर करवाती नई-नई दुनिया की सारी।

ये उसकी कविताओं से,
बना देती हमें बच्चे,
प्यारे-प्यारे, न्यारे-न्यारे।

ये अपने ज्ञान के सागर से,
मानव को देती सुख और समृद्धि सारी।
पुस्तक हमें लगती,
प्यारी-प्यारी, न्यारी-न्यारी।

ये करवा देती दर्शन,
भगवान के हमें,
और बना देती दानवों को मानव,
पुस्तक हमें लगती,
प्यारी-प्यारी, न्यारी-न्यारी।

मैं दुनिया की सभी भाषाओं की
इज्जत करता हूँ पर
मेरे देश में हिंदी की इज्जत न हो,
यह मैं सह नहीं सकता।

-आचार्य विनोबा भावे

IIMA

विद्याविनियोगाद्विकासः

भारतीय प्रबंध संस्थान अहमदाबाद

वस्त्रापुर, अहमदाबाद - 380 015

दूरभाष: 91-79-7152 4691 • फैक्स : 91-079-26300352, 26308345

ईमेल : agm-hindi@iima.ac.in • वेबसाइट : www.iima.ac.in